छत्तीसगढ़ राज्य ओपन स्कूल परीक्षा

सॉल्व्ड पेपर—दिसम्बर, 2012

कक्षा 12वीं

विषय—हिन्दी

सेट—1

समय 3 घंटा **पूर्णांक 100**

निर्देश—(i) सभी प्रश्न अनिवार्य है।

(ii) आंतरिक विकल्प के शब्द सीमा का घ्यान रखें।

(iii) स्वच्छता व शुद्धता अपेक्षित है।

प्रश्न 1. (अ) उचित उत्तर चुनकर लिखिए 5

(i) 'मैं नीर भरी दुख की बदली' मैं कौन सा अलंकार हैं ?

(अ) अनुप्रास (ब) रूपक

(स) उपमा (द) उत्प्रेक्षा।

उत्तर—(ब) रूपक।

(ii) ''मैरी उनकी प्रीत पुरानी'' मैं किन दो लोगों के बीच प्रीति की बात कही गई है ?

(अ) कृष्ण-राधा (ब) कृष्ण मीरा

(स) कृष्ण-रूक्मिणी (द) राम-सीता

उत्तर—(ब) कृष्ण मीरा।

(iii) ''औरत देह ही नहीं दिल और दिमाग भी है'' यह वाक्य अनुराधा ने किससे कहा—

(अ) देवर (ब) अम्माजी

(स) स्वयं से (द) देवरानी से।

उत्तर—(स) स्वयं से।

(iv) एक सुपर क्म्पयूटर एण्ड सेकण्ड में कितनी गणितीय गणना करने में सक्षम हाता है ?

(अ) एक खरब (ब) एक अरब

(स) एक करोड़ (द) एक लाख।

उत्तर—(अ) एक खरब।

(v) जनसंख्या वृद्धि दर कहा जाता है।

(अ) जन्मदर और मृत्युदर के अन्तर को

(ब) प्रति हजार व्यक्ति पर मृत व्यक्तियों की संख्या को

(स) मृत्युदर एवं जन्मदर के योग को

(द) प्रति हजार पर पैदा होने वाले बच्चों को।

उत्तर—(अ) जन्मदर और मृत्युदर के अन्तर को।

(ब) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(i) वृद्धों से तरुणों ने कहा आप ..... बनकर आराम से रहें।

(ii) दूरर्दशन एक महत्वपूर्ण ..... माध्यम है। जिसके द्वारा सूचनाओं के प्रसारण में सुविधा होती है।

(iii) लोकतंत्र का चौथा खम्भा ..... है।

(iv) भारत ने वर्ष ..... ई. में सुपर कम्पयुटर का विकास कर विश्व को चकित कर दिया।

(v) अनुराधा ..... विधा की रचना है।

(vi) मीरा की काव्य भाषा में ..... की बोलियों का सम्मिश्रण है।

उत्तर—(i) देवता, **(ii)** संचार, **(iii)** समाचार पत्र, **(iv)** 1998, (v) कहानी, **(vi)** राजस्थान।

(स) सही सम्बन्ध जोड़िए—

खण्ड 'अ'	**खण्ड 'ब'**
(1) गजानन माधव मुक्तिबोध	अंधा युग
(2) धर्मवीर भारती	एक कठ विष पाई
(3) जयशंकर प्रसाद	रामचरित मानस
(4) तुलसी दास	कामायनी
(5) दुष्यंत कुमार	चाँद का मुँह टेढ़ा

सही उत्तर—(i) चाँद का मुह टेढ़ा, **(ii)** अंधायुग, **(iii)** कामायनी, **(iv)** रामचरित मानस (v) एक कंठ विषपाई।

(द) एक वाक्य में उत्तर दीजिए—

(i) 'वह तोड़ती पत्थर' कविता में किसकी दशा का वर्णन किया गया है।

उत्तर—श्रमिक महिला।

(ii) 'दो कलाकार' कहानी के रचनाकार कौन ?

उत्तर—मन्नुभण्डारी।

(iii) जिजीविषा की विजय किस विद्या की रचना है ?

उत्तर—संस्मरण।

(iv) वाक्य की परिभाषा लिखिए

उत्तर—एक पूर्ण विचार व्यक्त करने वाला शब्द समूह वाक्य कहलाता है।

(v) अनेक राहे देखकर कवि मुक्तिबोध क्या करना चाहते हैं।

उत्तर—अनेक राहे देखकर कवि मुक्तिबोध उन पर चलना चाहता है।

(vi) जो रहिम गति दीप की, कुल कपूत गति सोय।
बारे उजियारों लगै ठाढ़ै अँधेरा होय।
उपर्युक्त पंक्तियों में कौन-सा छंद है ?

उत्तर—उपर्युक्त पंक्तियों में दोहा छंद है।

प्रश्न 2. पठित दोहा के आधार पर तुलसी के नीतिपरक विचारों पर प्रकाश डालिए। **4**

उत्तर—तुलसीदास जी ने अपने दोहे के आधार पर प्रस्तुत किया है कि संसार में ईश्वर ने गुण-दोष क्षेत्र को समान रूप से बनाया है। हंस व संत के दोषों को बताया है। मंत्री, गुरु, चिकित्सक के साथ राज्य, धर्म शरीर का नाश को बताया है। मनुष्य को संसार में आकर सादा जीवन जीने के लिए ईश्वर स्मरण तथा कुछ दान अवश्य करना चाहिए।

अथवा

अतिश्योक्ति अलंकार को उदाहरण सहित समझाइए।

उत्तर—अतिश्योक्ति अलंकार—जहाँ किसी वस्तु या बात का वर्णन इतना अधिक बढ़ा-चढ़ाकर किया जाये कि लोक मर्यादा का उल्लंघन सा प्रतीत होता है, उसे अतिश्योक्ति अलंकार कहते है।

उदाहरण—चले घनुष से बाण, साथ ही शत्रु सैन्य के प्राण चलें।

प्रश्न 3. सुपर कम्प्यूटर के विषय में आप क्या जानते हैं ? 4

उत्तर—सुपर कम्प्यूटर—सुपर कम्प्यूटर का विकास 1988 में किया गया। यह भारत की महान् उपलब्धि है जिसमें स्मृति भण्डार 52 मेगाबाइट और 500 एम. बी. फ्लाफी की क्षमता से काम करते हैं। यह कम्प्यूटर एक सेकण्ड में एक खरब गणितीय गणना करने में सक्षम है।

परम 10,000 कम्प्यूटर से मौसम विज्ञान और भूकम्प आदि का दूर संवेदी आकलनों भौगो. लिक जानकारी इकट्ठी की जा सकती है।

अथवा

बाल विवाह से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर—कम उम्र में बालक-बालिकाओं के होने वाले विवाह को बाल विवाह कहा जाता है। कम उम्र में शादी होने के कारण किशोर जल्दी माँ-बाप बन जाते हैं। इससे बच्चे अधिक पैदा होते हैं। उनके स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है। बाल-विवाह वाले अधिकांश युवा आर्थिक रूप से दूसरों पर निर्भर रहते है। बच्चे अधिक होने से कमाने वालों की संख्या कम और खाने वालों की संख्या अधिक हो जाती है। इसी कारण सरकार ने लड़कियों की 18 वर्ष से कम और लड़कों की 21 वर्ष की आयु से कम में शारी होने को गैर कानूनी माना है।

प्रश्न 4. लेखक में डॉ. रघुवंश को कर्मयोगी क्यों कहा है ?

उत्तर—लेकख ने डॉ. रघुवंश को कर्मयोगी कहा, क्योंकि शारीरिक दृष्टि से छोटा नहीं, अप्रत्यशित बाधा होते हुए भी मन कर्म में निरन्तर रत रहा और नव-नव प्रकाश विकर्णी होता रहा और नये उत्साह के साथ अपने पैरों से लेखन कार्य करते रहे।

अथवा

दो कलाकार कहानी का उद्देश्य स्पष्ट करें।

उत्तर—कहानी का प्रमुख उद्देश्य है दुनिया की बड़ी घटना भी उसे आन्दोलित नहीं करती तब तक उसमे कला के लिए कोई स्थान नहीं। कागज पर इन निर्जीव चित्रों को बनाने के बजाय दो चार की जिन्दगी क्यों नहीं बना देती तेरे पास सामर्थ्य है साधन हैं।

प्रश्न 5. 'वह तोड़ती पत्थर' कविता के आधार पर शोषक और शोषित के जीवन का अन्तर स्पष्ट करें।

उत्तर—इस कविता के आधार पर शोषक वर्ग ऊँचे महलों में बैठकर आनन्द लेता है। भोग विलास में रमा रहता है। किन्तु शोषित वर्ग गरीब है न उनके पास तन ढँकने को कपड़ा है न ही खाने को भरपेट भोजन इन गरीबी उपरिस्थिति में वह गर्मी के दिनों में भी धूप-छाव की परवाह किये बगैर अपने कार्य को लगन के साथ करते हैं।

अथवा

'दो कलाकार' कहानी के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—दो कलाकार कहानी में शीर्षक के अनुसार दो व्यक्तियों का चित्रण किया है जिसमें एक समाज के विकास के रूप में ओर एक चित्रकार के रूप में दोनों ने अपनी जगह बनायी है इसलिए कहानी में ये दो कलाकार हैं जिसके आधार पर कहानी का शीर्षक दो कलाकार है।

प्रश्न 6. रहीम ने प्यादे और फरजी का दृष्टांत क्यों दिया है ? 4

उत्तर—प्यादे की चाल फरजी में बदल जाने पर प्यादा (बजीर) की तरह आचरण करने लगता है। वह अपनी चाल को छोड़कर बजीर की तरह टेढ़ा चलने लगता है। इस उक्ति को देकर रहीम यह बतलाना चाहता है कि छोटा आदमी बड़प्पन पा जाने पर अपनी स्वाभाविकता भूल जाता है।

अथवा

लेखक ने कुटज की तुलना राजा जनक से क्योंकि है ?

उत्तर—राजा जनक संसार में रहकर सम्पूर्ण भोगों को भोग कर भी उनसे मुक्त है।

प्रश्न 1. लेखक के अनुसार ''आखिरी चट्टान'' से क्या तात्पर्य है ? 4

उत्तर—लेखक ने भारत कमे दक्षिण में कन्याकुमारी की विवेकानन्द शिला को आखिरी चट्टान कहा है। यह चट्टान अरब सागर हिन्द महासागर और बंगाल की खाड़ी तीनों के संगम पर स्थित है जिस पर कभी स्वामी विवेकानन्द ने समाधि लगाई थी। यह चट्टान भारत की धुर दक्षिण तट से सौ-सवा सौ गज आगे जाकर समुद्र के बीच स्थित है।

अथवा

कवि रैदास ने ईश्वर की उपमा किन-किन से दी है ? उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर—कवि रैदास ने ईश्वर की उपमा बादलों से, चंदन, सुहा व दीपक तथा स्वामी से की है।

प्रश्न 8. (अ) निम्न में से किन्हीं दो वाक्यों को शुद्ध कीजिए ?

(i) यह अपने विषय की एक ही सर्वश्रेष्ठ पुस्तक है।

उत्तर—यह अपने विषय की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक है।

(ii) चार हॉल के लड़के नकल करते हुए पकड़े गये।

उत्तर—हाल में चार लड़के नकल करते हुए पकड़े गये।

(iii) गुरु के ऊपर श्रद्धा रखनी चाहिए।

उत्तर—गुरु पर श्रद्धा रखनी चाहिए।

(ब) भारतेन्दु युग के दो साहित्यकारों के नाम लिखिए।

उत्तर—भारतेन्दु युग के साहित्यकार

(1) प्रतापनारायण मिश्र (2) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र।

प्रश्न 9. छायावाद की मुख्य विशेषताएँ लिखिए ?

उत्तर—छायावाद की मुख्य विशेषताएँ

(1) व्यक्तिवाद की प्रधानता

(2) प्रकृति प्रेम

(3) स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह

(4) रहस्यवादिता

(5) करुणा एवं वेदना की अभिव्यंजना

अथवा

रहस्यवाद की मुख्य विशेषताएँ ?

उत्तर—रहस्यवाद की मुख्य विशेषताएँ

(1) प्रेम की अभिव्यंजना (2) आध्यात्मिक तत्वों की प्रधानता

(3) परोक्ष सत्ता के प्रति आकर्षण (4) आत्मसमर्पण की भावना

(5) रूपकों और प्रतिकों की योजना।

प्रश्न 10. कवि दिनकर अथवा मुक्तिबोध का साहित्यकि परिचय दीजिए। 4

उत्तर—रामधारी सिंह दिनकर

जीवन परिचय—रामधारी सिंह जन्म सन् 1908 में बिहार के मुँगेर जिले में हुआ था आपको साहित्य अकादमी के द्वारा ज्ञानपीठ पुरस्कार के द्वारा सम्मानित किया गया सन् 1974 में दिनकर जी का स्वर्गवास हो गया।

रचनाएँ—रेणुका, कलिंग विजय, मिट्टी की ओर, कुरुक्षेत्र, नीम के पत्ते अनेक प्रमुख कृतियाँ है।

भावपक्ष—दिनकर जी की कविताएँ राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत हैं। इन्होंने आर्थिक असमानता के प्रति रोष प्रकट किया है। इन्होंने शोषण, उत्पीड़न, वर्ग विषमता की निर्भीकता से निंदा की।

कलापक्ष—दिनकर जी को राष्ट्रीय कवि कहते हैं। इसलिए उन्हें क्रांतिकारी उपादानों से अलंकृत किया है। भाषा शुद्ध संस्कृत, तत्सम खड़ी बोली, मुक्तक व प्रबंध छंदों का मिश्रण, तथा काव्य में उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक अनुप्रास, श्लेष आदि अलंकारों का प्रयोग किया गया है।

साहित्य में स्थान—बहुमुखी प्रतिभा के कारण दिनकर जी अत्यनत लोक"य हुए। उन्हें भ. ारतीय संस्कृति एवं इतिहास से अधिक लगाव था।

अथवा

गजानन माधव 'मुक्तिबोध'

जीवन परिचय—गजानन माधव 'मुक्तिबोध' का जनम सन् 1907 में मध्य प्रदेश के शिवपुरी में हुआ था। आपने स्नातक तक पढ़ाई की व आर्थिक संकटों से जूझते हुए अन्य भाषाओं का भी अध्ययन किया। आपकी मृत्यु सन् 1964 में हुई।

रचनाएँ—आपकी प्रमुख रचनाएँ—चाँद का मुँह टेढा, तार सप्तक, काठ का सपना, सतह से उठता आदमी आदी ।

भावपक्ष—मुक्तिबोध ने अपनी रचनाओं में सामाजिक, रुढ़ियों, अपूर्ण व्यक्तित्व, अन्याय व शोषण का विद्रोह किया है। समाज में व्याप्त अत्याचार, भ्रष्टाचार के लिए पूँजीवादी व्यवस्था को उत्तरदायी मानते हैं।

कलापक्ष—आपकी कविताओं में अंग्रेजी, फारसी, उर्दू शब्दों का प्रयोग हुआ है। रहस्यवादी, वैज्ञानिक शब्दावली का प्रयोग। मुक्त छंद का विशिष्ट स्थान है।

साहित्य में स्थान—स्व. मुक्तिबोध जी को साहित्य जगत में एक पथ प्रदर्शक माना जाता है।

प्रश्न 11. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल अथवा मोहन राकेश जी का साहित्यकि परिचय दीजिए ?

उत्तर—आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

जीवन परिचय—आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का जनम सन् 1884 में उत्तर प्रदेश के बस्ती जिल में अगोना गाँव में हुआ था। आप 'नागरी प्रचारिणी' पत्रिका के संपादक भी रहे। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में विभागाध्यक्ष भी रहे। सन् 1940 में शुक्ल जी का स्वर्गवास हो गया।

रचनाएँ—चितांमणि भाग 1-2, रसमीमांसा, त्रिवेनी आदि प्रमुख रचनाएँ हैं।

भाषा—रामचंद्र शुक्ल जी की भाषा भावों के अनुकूल होने के कारण सजीव, स्वाभाविक है। तत्सम शब्दों की बहुलता है।

शैली—शुक्ल जी ने अपनी रचनाओं में समीक्षात्मक, विवेचनात्मक शैली का प्रयोग किया है।

साहित्य में स्थान—हिन्दी साहित्य में स्थान में शुल्क जी का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। हिन्दी साहित्य के इतिहास न शुक्ल जी को अमर बना दिया।

अथवा

(मोहन राकेश)

जीवन परिचय—मोहन राकेश जी का जन्म जनवरी, 1952 को अमृतसर में हुआ था। हिन्दी व संस्कृत में उपाधि प्राप्त करने के बाद शिक्षण कार्य करने लगे। आप 'सरिका' पत्रिका के संपादक भी रहे। सन् 1972 ई. में इनका निधन हो गया।

रचनाएँ—आपकी प्रमुख रचनाएँ—आधे अधूरे, लहरों के राजहंस, आषाढ़ का एक दिन आदि है

भाषा—राकेश जी की भाषा में तत्सम शब्दों की प्रधानता है। भाषा सरल, सुबोध व प्रवाहपूण र्ा है। विदेशी शब्दों का भी प्रयोग किया गया है।

शैली—आपकी शैली वर्णनात्मक, बिंबात्मकता तथा प्रसंगों के अनुकूल है। आपने आय के कारकों पर चित्रात्मक शैली का भी प्रयोग किया है।

साहित्य में स्थान—मोहन राकेश का नाम नाटक साहित्य कहानी व एकांकी में महत्वपूर्ण स्थान है। आप गहन अनुभूति को सरल शब्दों में अभिव्यक्त करने में सिद्धहस्त थे।

प्रश्न 12. निम्न में से किसी एक काव्यांश की संसदर्भ व्याख्या कीजिए।

तुलसी मीठे वचन से, सुख उपजत चहुँओर।
वसीकरण इक मंत्र है, तजि दे वचन कठोर।।
मंत्री गुरु अरु वेद्य जो ﾞय बोलहिं है भय आन।
राज, धरम तन तीति कर, होई बेगिही नाम।।

सन्दर्भ—प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक के 'तुलसी के दोहे' पाठ से अवतरित है। इनके रचयिता कवि तुलसीदास जी है।

प्रसंग—प्रस्तुत दोहे में तुलसीदास जी मीठे वचन बोलने एवं मंत्री, गुरु वैध द्वारा भय के कारण सत्य न बोलने और मीठे वचन बोलने से होने वाले नुकसान का वर्णन किया है।

व्याख्या—तुलसीदास जी कहते हैं कि मधुर वचन बोलने से चारों तरफ सुख उत्पन्न होता है अर्थात् मीठी वाणी बोलने से बोलने वाला तथा सुनने वाला दोनों खुश रहते हैं, किसी को भी अपने वश में करने का एक मात्र तरीका यह है कि कठोर वचनों का त्याग कर दें अर्थात् मधुर वचन बोलकर

हम किसी को भी अपने वश में कर सकते हैं।

तुलसीदास जी कहते हैं कि राज्य का मंत्री, बैद्यराज तथा गुरु तीनों ही भय के कारण यदि अपने धर्म और कर्तव्य मार्ग से हटते हैं तो निश्चय ही राज्य, धर्म और शरीर का नाश हो जाता है। अत: भयमुक्त होकर हमें अपने कर्तव्य कापालन करना चाहिए।

विशेष—यदि भय वश मंत्री, गुरु और चिकित्सक ''य बातें कहेंगे तो राज्य, धर्म और शरीर का नष्ट होना अवश्यम्भावी है।—वाणी की मधुरता का प्रतिफल हमें दूसरों पर आरो''त करता है।

अथवा

कनक-कनक तै सौगुनी मादकता अधिकाय।
वा खाये बौरात है या वा पाये बौराय।।
कहलाने एकल बसत, अहि मयूर मृग-बाघ।
जगत तपोवन सो किये। दीरघ दाघ निदाघ।।

संदर्भ—प्रस्तुत दोहा रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि बिहारी के सुप्रसिद्ध काव्य ग्रंथ बिहारी सतसई से लिया गया है।

प्रसंग—अचालक धन प्राप्त कर लेने पर अभिमान बढ़ जाने का वर्णन किया है। यहाँ पर कवि बिहारी ने ग्रीष्म की प्रचण्ड गर्मी की तीव्रता का आलंकारिक वर्णन किया है। अत्यधिक गर्मी से त्रस्त होकर परस्पर विरोधी प्रकृति वाले जीव जन्मजात बैर भुलाकर एक स्थान पर छाया में पड़े रहते हैं। यहाँ कोई किसी को नहीं सता रहा है।

व्याख्या—कवि कहते हैं कि धतूरा जो नशा प्रदान करने वाला व सोना (आभूषण) इन दोनों को लेने पर मनुष्य नशे में चूर हो जाता है किन्तु धतूरा का नशा कुछ देर बाद उतरने पर व्यक्ति को अच्छे-बुरे का ज्ञान होता है परन्तु सोना अर्थात् अधिक धन की प्राप्ति हो जाने पर व्यक्ति धन मद में इतना चूर हो जाता है कि उसे अच्दे बुरे का ज्ञान नहीं होता है और यह गलत कार्यों में लग जाता है।

ग्रीष्म ऋतु की प्रचण्ड गर्मी के कारण सम्पूर्ण वन-क्षेत्र तपोभूमि के समान दिखाई पड़ रहा है क्योंकि स्वभाव से ही एक-दूसरे के विरोधी शत्रु साँप और मोर, शेर और मृग सहज बैर भुलाकर एक स्थान पर विश्राम करते रहते हैं। ग्रीष्म की व्याकुलता, भयानकता व प्रचण्डता ने मानों संसार को तपोवन सा बना दिया है, जहाँ कोई किसी को नहीं सताता।

विशेष—(1) मोर और सर्प, शेर और मृग का सहज बैर प्रसिद्ध है। (2) जगत तपोवन सो कियो में उपमा अलंकार है। (3) भाषा—ब्रजभाषा। (4) काव्य गुण—माधुर्य गुण।

प्रश्न 13. (अ) मैंने भीतर जाकर साड़ी बदली, ललाट पर बिंदिया लगाई अब मेरे लिये यह मेरा सुहाग चिन्ह नहीं मेरा शृंगार थी—अच्छी सुरुचिपूर्ण और व्यवस्थित दिखने का साधन। मेरे शरीर की बाह्य प्रतीति मेरी वेशभूषा जो मेरे व्यक्तित्व का ही एक अंग है। मेरी प्रभावपूर्ण व्यवस्थित साज-सज्जा मुझे आत्म विश्वास से भरती है। मैं क्यों नकारूँ, में क्यों त्यागू अपना सहज जीवन।

संदर्भ—प्रस्तुत गद्य पंक्तियाँ श्री पंकज कुमार द्वारा लिखित 'अनुराधा' नामक कहानी से ली गई है।

प्रसंग—एड्स रोग ग्रसित अनुराधा के पति विजय की मौत हो जाती है पति के बीमे की राशि जो बहार की बैंक में, उसके ओर उसके देवर के नाम से जमा थी अनुराधा उसे लाने का निर्णय करती है।

व्याख्या—अनुराधा शहर जाने के लिए तैयार होती है। वह साड़ी बदलती है, माथे पर बिंदी लगाती है, वह सजती है—सवरती है। परन्तु यह सजना-सवरना उसके सुहाग की निशानी नहीं है,

वह जानती है कि वह विधवा है; यह सजना-सवरना तो उसके ठीक से दिखने का तरीका है, उसके व्यक्तित्व का हिस्सा है। इस साज-सज्जा से ढंग कपड़े पहिने, बिंदी लगाने आदि से उसमें एक आत्म विश्वास भर जाता है। अनुराधा इस सहज जीवन को नहीं त्यागती, वह सहज सुलभ प्रसाधनों का परित्याग नहीं करती, जो उसके व्यक्तिव को आत्मविश्वास से भरते हैं, उसी स्फूर्ति प्रदान करते हैं। अब वह अपने सम्पूर्ण व्यक्तिव के साथ जीना चाहती है।

अथवा

(ब) यह युद्ध तो अब हर हाल में अनवरत चलेगा, यह संघर्ष होकर ही रहेगा पीछे नहीं होगी अनुराधा इस संघर्ष से जीने के लिए संघर्ष, अधिकारों के लिए संघर्ष स्वाभिमान के लिए संघर्ष..... .अनुराधा का निरन्तर संघर्ष। उपर्युक्त गद्यांशों में किसी एक की व्याख्या कीजिए।

संदर्भ—पूर्ववत्।

प्रसंग—अनुराधा अपना व अपने होने वाले बच्चे का इलाज कराना चाहती है, वह जीवित रहना चाहती है।

व्याख्या—अनुराधा मनन करती है। कि इस प्रवाहमान संसार में उसका भी हिस्सा है। उसे भी जीवित रहने का अधिकार है। और वह बिल्कुल स्वभाविक भी है क्योंकि जीवति रहने का अधिकार तो सामान्य व्यक्ति को भी यदि योग्यतम को ही जीवित हरने का अधिकार है तो वह भी योग्यतम बनकर दिखायेगी। वह जीने के लिये योग्यतम बनने के लिए दृढ़ निश्चय करती है।

प्रश्न 14. निम्न में से किसी एक विचार का भाव पल्लवन कीजिए।

(1) परोपकार सच्चा धर्म है

भाव पल्लवन—परोपकार का अर्थ है दूसरों के प्रति उपकार या भलाई करना। परोपकार का सच्चा धर्म है। हमारी संस्कृति भारतीय संस्कृति में परोपकार को विशेष महत्व दिया गया है। अर्थातृ परोपकार के लिए ही वृक्ष फलते हैं, नदियाँ बहती हैं अर्थात् समस्त प्रकृति परोपकार हेतु ही निर्मित है चाहे वह सूर्य हो या चन्द्रमा। कबीर ने तो कहा है कि—**वृक्ष कबहूँ न फल भखै नदी न पीवे नीर, परमार्थ के कारण साधुन धरा शरीर।** अर्थात् समस्त प्रकृति परोपकार हेतु ही निर्मित है, चाहेवह सूर्य हो या चन्द्रमा।

(2) नर और नारी एक गाड़ी के दो पहिए है।

भाव पल्लवन—गृहस्थ जीवन में नर व नारी के सामजस्य किये बिना जीवन संभव नहीं वह एक गाड़ी के दो पहिए के समान है चूँकि गाड़ी के एक पहिये को निकाल देने से चलने में असमर्थ हो जाता है। उसी प्रकार नर या नारी के न होने से पारिवारिक स्थिति संभव नहीं है।

(3) अधिकार से कर्तव्य बड़ा होता है।

भाव पल्लवन—किसी भी कार्य करने से अपना अधिकार बताने के बजाय अपना कर्तव्य निभाना चाहिए चूँकि स्वतंत्रता के समय एक नारा लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने दिया स्वाधीनता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। देश व धर्म के लोगों ने स्वाधीनता प्रदान किया अगर इस बारे में सहारे हाथ पर हाथ रखकर बैठे रहते तो यह अंग्रेजी सरकार से परतंत्र नहीं हुई होती, इसलिए हमारा भी कर्तव्य बनता है कि हम अपने कर्तव्य का पालन करें।

प्रश्न 15. अंक सूची की द्वितीय प्रति हेतु सचिव माध्यमिक शिक्षा मण्डल छत्तीसगढ़, रायपुर को एक आवदेन पत्र लिखिए।

उत्तर—प्रति,

सचिव

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, रायपुर (छ. ग.)

विषय—अंक सूची की द्वितीय प्रति भेजने के सम्बन्ध में

महोदय,

निवेदन है कि कक्षा बारहवी बोर्ड की परीक्षा की मेरी अंक सूची खो गई है। मैने यह परीक्षा सन् 2009 में दी थी। मुझे अंक सूची की द्वितीय प्रति भेजने का कष्ट करें। इसके लिए निर्धारित शुल्क 50 रु. का बैंक ड्राफ्ट नं. 37701 आपके नाम से भेज रहा हूँ।

मुझसे सम्बन्धित जानकारी निम्नानुसार है–

1. नाम	–	साकेत शर्मा
2. "ता का नाम	–	एस. पी. शमा
3. परीक्षा	–	बारहवी बोर्ड 2009
4. परीक्षा केन्द्र क्रमांक	–	7173
5. परीक्षा केन्द्र	–	शा. उ. मा. वि. तिल्दा
6. अनुक्रमांक	–	251376
7. नियमित/स्वा.	–	साकेत शर्मा cèo श्री एस. पी. शर्मा पोस्ट–तिल्दा, जिला–रायपुर (छ. ग.)
संलग्न बैंक ड्राफ्ट	–	रुपए 50.00

दिनांक : 13-1-2013

विनीत
साकेत शार्म

अथवा

परीक्षा में सफल होने पर अपने मित्र को बधाई पत्र लिखिए।

"य मित्र, योगेश

सप्रेम नमस्ते!

तुम्हारा पत्र कल ही मिला। पढ़कर अपार हर्ष हुआ। तुम्हारा अनुक्रमांक मेरे पास था ही आज के ''दैनिक भास्कर'' में तुम्हारा परीक्षा परिणाम देखा, तुम्हें प्रथम श्रेणी में पाकर मुझे अति प्रसन्नता हुई है। मेरी और से हार्दिक बधाई स्वीकार कीजिए। प्रभु से मेरी यही प्रार्थना है कि तुम इसी प्रकार सभी परीक्षाएँ प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करते रहो।

अपने भावी कार्यक्रम के बारे में मुझे सूचित करना। माताजी एवं "ताजी को चरण स्पर्श एवं बण्टू को बहुत–बहुत प्यार।

तुम्हारा मित्र
आकाश

प्रश्न 26. निम्न में से किसी एक विषय पर 250 शब्दों में एक सारगर्भित निबन्ध लिखिए।

(i) आतंकबाद

(ii) दूरदर्शन

(iii) साहित्य और समाज

उत्तर–

(1) आतंकबाद

प्रस्तावना–आतंक का अर्थ है–भय। समाज को अपने कुकृत्य से आतंकित करना आतंकवाद है। यह एक ऐसी विचारधारा है, जिसका न कोई समाज है, न धर्म। यह एक घृणित राष्ट्रद्रोह है, जिसे क्षमा नहीं किया जा सकता है। आतंवाद समाज के लिए, देश के लिए और संसार के लिए एक खतरा है।

आतंकवाद का कारण—कुछ विदेशी शक्तियाँ भारत को कमजोर बनाना चाहती हैं, इसी कारण वे भारत में आतंक को बढ़ावा देती रही हैं। आतंकवादियों को बाहर से हथियार भेजे जाते हैं। उनके प्रयोग से तोड़फोड की घटनाएँ होती हैं। निर्दोष नागरिकों की हत्या की जाती है, जिससे देश की अखण्डता को खतरा उत्पन्न हो जाता है। पंजाब और कश्मीर में हुई घटनाएँ इसकी जीती जागती मिसाल हैं। देश भक्त नेताओं को अपनी जान से हाथ धोना पड़ता है।

आतंकबाद का उद्देश्य—आतंकवाद का प्रमुख उद्देश्य समाज में भय, आतंक और दहशत फैलाकर असुरक्षा की भावना पैदा करना तथा देश की प्रगति में बाधक बनना तथा अस्थिरता उत्पन्न करना है। इसके कारण उद्योग-धन्धों तथा पर्यटन पर भी बुरा असर पड़ता है। जातिगत और धर्मगत भेदभाव में वृद्धि होती है। देश में तनाव बढ़ता है, हिंसा एवं डकैती की घटनाएँ होती हैं। देश में बाहरी आक्रमण का खतरा बढ़ता है।

भारत में आतंकवाद—देश में आतंकवादियों के पीछे निश्चित रूप से विदेशियों का हाथ है। विदेशी विभाग सुनियोजित ढंग से हत्या और डकैती जैसे घिनौने कृत्य करवा रहा है, जिससे देश का विभाजन करवाने की उनकी साजिश पूरी हो सके। पड़ोसी ओर विकसित देश इस कार्य के लिए पानी की तरह पैसा बहा रहे हैं। वे आतंकवादियों को शरण, प्रशिक्षण, अस्त्र-शस्त्र तथा धन का लालच देकर आतंकवाद को बढ़ावा दे रहे है। देश के गुमराह युवक यदि एक बार उनके चंगुल में फँस जाते हैं तो मुक्त नहीं हो पाते हैं। मुक्त होने के प्रयास में उन्हें अपनी जान से भी हाथ धोना पड़ता है।

आतंकवाद को समाप्त करने का उपाय—(1) देश में आतंकवादियों के अड्डे सफेदपोश धूर्त नेताओं के संरक्षण में सुरक्षित होते हैं, उन्हें समाप्त किया जाय। (2) बेरोजगार गुमराह युवकों को विश्वास में लिया जाय। (3) देशद्रोहियों को कठोर दण्ड दिया जाय। (4) अधिकारियों को स्वतंत्र निर्णय लेने के अधिकार दिये जाय। (5) अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग लेकर उन देशों के विरुद्ध जनमत तैयार किया जाय, जो आतंकवाद को बढ़ावा दे रहे हैं। (6) आतंकवादियों को शरण देने वाले व्यक्तियों के खिलाफ अभियोग लगाकर दण्डित किया जाय।

(2) दूरदर्शन और उसका महत्व

प्रस्तावना—महाभारत काल में संजय ने अपनी दिव्य दृष्टि से महाभारत के युद्ध का सारा हाल धृतराष्ट को बताया। आज इस वैज्ञानिक युग में दूरदर्शन की लोक”यता बढ़ी है। दूरदर्शन के द्वारा विश्व के किसी भी कोने में घटित होने वाली घटनाओं को प्रत्यक्ष दूरदर्शन में देख सकते हैं।

आविष्कार व कार्य प्रणाली-दूरदर्शन के जन्मदाता जॉन बेयर्ड ने 25 जनवरी, 1926 ई. को रॉयल इंस्टीट्यूट के सदस्यों को बगल वाले कमरे की गतिविधियों को रेडियो तरंगों की सहायता से दिखाकर आश्चर्यचकित कर दिया। विज्ञान की प्रगति और आधुनिक तकनीक के द्वारा आज दूरदर्शन के काले परदे पर रंगीन दृश्य देखे जा सकते हैं। रेडियो तरंगों के समान ही प्रकाश को विद्युत तरंगों में बदलते हुए दूर-दूर तक प्रसारित किया जाता है। इस प्रकार दूर-दूर तक, किसी भी कोने का दृश्य दिखाया जा सकता है।

भारत में दूरदर्शन और विकास—भारत में दूरदर्शन का श्रीगणेश 15 सितम्बर, 1958 ई. में नई दिल्ली में हुआ था। सन् 1972 में बम्बई में, 1973 में कश्मीर में दूरदर्शन केन्द्र की स्थापना हुई। सन् 1980 में इसके विकास में तेजी आई। समस्त भारत के नगरों व कस्बों में क्रमशः दूरदर्शन केन्द्र की स्थापना हुई। आम जनता के लिये इसे कर मुक्त रखा गया। छत्तीसगढ़ में रायपुर

में सर्वप्रथम दूरदर्शन केन्द्र प्रारम्भ हुआ।

दूरदर्शन का महत्व—आज दूरदर्शन का महत्व अधिक बढ़ गया है। सिनेमा में केवल फिल्म ही देखी जा सकती है, पर दूरदर्शन में घर बैठे सभी गतिविधियों को देख सकते हैं। समाचार, कवि सम्मेलन, वार्तालाप, फिल्म, खेल के कार्यक्रम अपनी रुचि के अनुसार देख सकते हैं। इस प्रकार दूरदर्शन के अनेक लाभ हैं।

(1) मनोरंजन का साधन—दूरदर्शन मनोरंजन सबसे सरल साधन है। घर बैठे न केवल भ. ारत अ"तु पूरे विश्व में कार्यक्रम देख सकते हैं। अच्छे कार्यक्रमों को दर्शक बड़े ही चाव से देखते हैं। दर्शक घर का काम-धाम छोड़कर इसे देखते हैं। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक, गुजरात से उड़ीसा, पं. बंगाल तक के कार्यक्रम हम घर बैठे देख सकते हैं। टी. वी. में मैच का आनन्द लेते हैं।

(2) शिक्षा का महत्वपूर्ण साधन—दूरदर्शन शिक्षा का उत्तम साधन है। योग शिक्षा, पाठ्यक्र विषयों की शिक्षा, कृषि सम्बन्धी, विज्ञान सम्बन्धी शिक्षा देख सकते हैं। यू. जी. सी. के कार्यक्रम दिल्ली से प्रतिदिन दिखाये जाते हैं। इन ज्ञानवर्धक शिक्षा के द्वारा मानसिक व बौद्धिक विकास होता है। इस प्रकार विभिन्न शिक्षा द्वारा मूलभूत जानकारी मिलती है।

(3) राष्ट्रीय एकता—सम्पूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधने के लिये छो-छोटे प्रहसन, गीतों का प्रसारा होता है। अच्छे चरित्र के जीवन के बारे में बतलाया जाता है। प्रेम, भाई-चारे, आत्मीयता की शिक्षा दी जाती है। कभी-कभी छोटे-छोटे प्रहसनों, सीरियलों के माध्यम से भी यह शिक्षा मिलती है। सम्पूर्ण सम्प्रदाय को एकता के बन्धन में बाँधने का यह एक अच्छा साधन है। ग्रामीण जनों, किसानों के लिये कृषि सम्बन्धी कार्यक्रम दिखाये जाते हैं, जिजससे उनकी ज्ञान वृद्धि हो।

दूरदर्शन का दुष्प्रभाव—दूरदर्शन के अनेक लाभ के साथ-साथ अनेक दुष्प्रभाव भी हैं। छात्र नये-नये कार्यक्रमों को देखने के लिए पढ़ाई की ओर कम ध्यान देते हैं। आजकल दूरदर्शन में सीरियलों की बाढ़ आ गयी है। हॉरर शो के अनेक सीरियल दिखाये जा रहे केबल का जमाना आ गया है, दिनभर फिल्म दिखायी जाती हैं। स्वाभाविक है विद्यार्थी इनकी ओर आकर्षित होते हैं और अपना समय खराब करते हैं। कई सीरियल या फिल्में ऐसे होते हैं, जिसे परिवार के साथ बैठकर नहीं देखा जा सकता है। चित्रहार, गीत आदि बालक-बालिकाओं पर कुप्रभाव डालते है। इससे चरित्र का स्तर उठने की अपेक्षा गिरता जा रहा है। दूरदर्शन को हर समय देखते रहने से विद्यार्थी को स्वयं मनन, चिन्तन करने का कम समय मिल पाता है, जिससे विद्यार्थी का बौद्धिक विकास नहीं हो पाता है। अब मनुष्य सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए समय नहीं निकाल पाता है।

उपसंहार—भारत एक आध्यात्मिक, धर्म प्रधान, चरित्र प्रधान देश हैं। सरकार का कर्तव्य है कि दूरदर्शन के द्वारा उच्च संस्कार, पवित्र विचार के कार्यक्रम प्रस्तुत किए जायें। ऐसे कार्यक्रम जो बालकों के मन पर दुष्प्रभाव डालें, जिससे चरित्र पतन हो, इन्हें किसी भी दशा में प्रसारित न किया जाय। बालकों को एक अच्छा नागरिक बनाने के लिए दूरदर्शन द्वारा अच्छे कार्यक्रम प्रसारित करने चाहिए।

(3) साहित्य और समाज

प्रस्तावना—साहित्य और समाज दोनों का अटूट सम्बन्ध हैं। जिस प्रकार सूर्य का किरणों से जगत में प्रकाश फैलता है उसी प्रकार साहित्य के आलोक से समाज में चेतना का संचार होता है। साहित्य समाज के निर्माण में योगदान देता है और समाज के द्वारा ही साहित्य का निर्माण होता है। अत: दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं।

साहित्य क्या है ?—''हितेन सह सहितेन् तस्य भावं साहित्यं'' अर्थात् साहित्य वह है जिसमें हित की भावना हो, जिसमें समष्टि का हित हो।

समाज क्या है ?—हम जिन लोगों के बीच समुदाय या दल में रहते हैं वह हमारा समाज कहलाता है। आज हमारा समाज अत्यन्त ही विस्तृत हो गया है। आज मनुष्य एक सामाजिक प्राणी के रूप में जन्म से लेकर मृत्यु तक समाज से जुड़ा रहता है।

साहित्य पर समाज का प्रभाव—साहित्य के निर्माण में समाज का प्रमुख हाथ रहता है और बिना समाज के साहित्य का निर्माण असम्भव है। जिस समय का समाज जैसा होगा उस समय उसी प्रकार के साहित्य की रचना की जायेगी। इसीलिए साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। यदि हम किसी समाज या जाति के उत्थान-पतन, आचार-व्यवहार सभ्यता, संस्कृति आदि को देखना चाहते हैं, तो यह हमें उस मसजा से सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन करने से ज्ञात हो जायेगा। संसार की सभ्य जातियों में उन्हीं की गणना होती है जिनका साहित्य उच्च कोटि का होता है।

समाज पर साहित्य का प्रभाव—साहित्य मनुष्य को गतिशीलता प्रदान करता है। वह अन्ध विश्वासों, रुढ़ियों एवं सड़ी-गली मानसिकता को दूर कर समाज को नयी रोशनी प्रदान करता है। यदि फ्रांस में रूसों का, रूस में मार्क्स का साहित्य नहीं होता तो इन देशों में क्रान्तियाँ नहीं हुई होतीं। हमारे देश में भी इस प्रकार के उदाहरणों की कमी नहीं है। तुलसी तथा सूर के साहित्य ने समाज में भक्ति का संचार किया। श्री बंकिमचन्द चटर्जी के 'वन्देमातरम्' नामक गान ने असंख्य भारतीयों को मातृभूमि पर मर मिटने के लिए प्रोत्साहित किया।

साहित्य और सामाजिक चेतना—साहित्य का अस्तित्व कवि या लेखक के ही सुख के लिए सीमित नहीं होता। **'स्वान्त : सुखाय'** के लिए रचित तुलसी का मानस आज समाज सुखाय व समाज निर्माणार्थ एवं आदर्श ग्रन्थ बन गया है। साहित्य शक्ति का स्रोत हैं।

निष्कर्ष—आज समाज को उत्कृष्ट साहित्य की आवश्यकता है जिससे उसका उत्थान हो सके। हम साहित्य को नये-नये आयाम दें। काव्यों की रचना हमारे कर्मो के अनुरूप हों, कहानी हमारे जीवन में गहरी उतरे और गीतों के बीज हमारे हृदय में अंकुरित हों। हमारा समाज अपने पुराने वैभव को प्राप्त कर सके इसके लिए हम साहित्य को नये आयाम दें।

अंधकार है वहाँ जहाँ आदित्य नहीं है।
मुर्दा हैं वह देश जहाँ साहित्य नहीं है।।

छत्तीसगढ़ राज्य ओपन स्कूल परीक्षा

सॉल्व्ड पेपर—मई, 2012

कक्षा 12वीं

विषय—हिन्दी

सेट—2

समय 3 घंटा **पूर्णांक 100**

निर्देश—(i) सभी प्रश्न अनिवार्य है। कुल 16 प्रश्न है।

(ii) प्रश्न क्रमांक 1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न है, जिसे 4 खण्डों में बाँटा गया है। खण्ड (अ) सही विकल्प चुनिए। खण्ड (ब) रिक्त स्थानों की पूर्ति करें। खण्ड (स) हाँ या नहीं में उत्तर दें एवं खण्ड (द) एक वाक्य में उत्तर दीजिए। प्रत्येक में 1 अंक है। कुल प्रश्न 22 है।

(iii) प्रश्न क्रं. 2 से 9 तक लघु उत्तरीय प्रश्न है। प्रत्येक में 4 अंक है। शब्द सीमा अधिकतम 50 शब्द है।

(iv) प्रश्न क्र. 10 से 15 तक दीर्घ उत्तरीय प्रश्न है। प्रत्येक में 6 अंक आबंटित है। शब्द सीमा अधिकतम 150 शब्द है।

(v) प्रश्न क्रमांक 16 निबंधात्मक प्रश्न है। इसमें 10 अंक निर्धारित है शब्द सीमा अधिकतम 250 शब्द है।

नोट—सभी प्रश्न हल करना अनिवार्य है।

1. (अ) उचित उत्तर चुनकर लिखिए **1 × 5 = 5**

(i) मीराबाई कवियत्री है—

(अ) भक्तिकाल की (ब) वीरगाथा काल की

(स) आधुनिक काल की (द) रीतिकाल की।

उत्तर—(अ) भक्तिकाल की।

(ii) जनसंख्या वृद्धि से भारत विश्व का सबसे बड़ा देश है—

(अ) पहला (ब) दूसरा

(स) तीसरा (द) चौथा।

उत्तर—(ब) दूसरा।

(iii) 'दो कलाकार' किस विधा के अन्तर्गत आते हैं ?

(अ) उपन्यास (ब) नाटक

(स) निबन्ध (द) कहानी।

उत्तर—(द) कहानी।

(iv) 'पत्र' शब्द है—

(अ) देशज (ब) विदेशी
(स) तद्भव (द) तत्सम्।
उत्तर—(द) तत्सम्।

(v) 'पद्मावत्' महाकाव्य लिखा है—
(अ) तुलसीदास (ब) महादेवी वर्मा
(स) मलिक मोहम्मद जायसी (द) सुमित्रा नंदन पंत।
उत्तर—(स) मलिक मोहम्मद जायसी।

(ब) रिक्त स्थानों की पूर्ति सही विकल्प चुनकर कीजिए— 1 × 5 = 5

(i) कहानी के ..... तत्व होते हैं।
(छः, चार, पाँच)
(ii) तरुण चाहते हैं कि वे ..... की सेवा करें।
(बालकों, वृद्धों)
(iii) देवकीनंदन खत्री ..... के साहित्यकार थे।
(भारतेन्दु युग, त्रिवेदी युग, शुक्ल युग)
(iv) चरक संहिता की ..... पद्धति का आधार माना जाता है।
(आयुर्वेद, यजुर्वेद, सामवेद)
(v) 'अनुराधा' कहानी के लेखक ..... हैं।
(पंकज कुमार, जयशंकर प्रसाद, मन्जु भण्डारी)
उत्तर—(i) छः, **(ii)** वृद्धों, **(iii)** भारतेन्दु युग, **(iv)** आयुर्वेद, **(v)** पंकज कुमार।

(स) हाँ या नहीं में उत्तर दीजिए। 1× 6 = 6

(1) शब्द के आरम्भ लगने वाला शब्द उपसर्ग कहलाता है।
(2) 'पीढ़ीयाँ-गिहियाँ'' शीर्षक व्यंगय रचना के लेखक पंकज कुमार है।
(3) ''ईश्वर आपकी यात्रा सफल करें''—वाक्य इच्छा वाचक है।
(4) वेदांग ज्योतिषी की रचना लगध ने की।
(5) कठपुतली को अपनी डगर बनानी नहीं पड़ती है।
(6) भारतीय खगोल-विज्ञान का उद्भव वेदों को माना जाता है।
उत्तर—(1) हाँ, **(2)** नहीं, **(3)** सहीं, **(4)** सही, **(5)** सही, **(6)** सही।

(द) एक वाक्य में उत्तर दीजिए। 1 × 6 = 6

(1) मैं नीर भरी दुख की बदली में कौन-सा अलंकार है।
उत्तर—रूपक अलंकार।
(2) संचार किसे कहते हैं ?
उत्तर—कोई सूचना, विचार या भाव को किसी तरह दूसरे तक पहुँचाना ही संचार कहलाता है।
(3) 'फूल मत तोड़ो' कौन-सा वाक्य है ?
उत्तर—सरल वाक्य।
(4) लकीर का फकीर होना मुहावरे का क्या अर्थ हैं ?
उत्तर—पुरानी बातों को लेकर चलना।
(5) लेखक में आखिरी चट्टान किसे कहा है ?

उत्तर—भारत क दक्षिण में कन्याकुमारी की विवेकानन्द शिला को आखिरी चट्टान कहा है।

(6) शुक्ल युग के प्रसिद्ध निबंधकार का नाम लिखिए।

उत्तर—हजारी प्रसाद द्विवेदी।

प्रश्न 2 यमक अलंकार की परिभाषा लिखकर उदाहरण दीजिए। **4**

उत्तर—जब कोई शब्द अनेकबार आए और उसके अर्थ प्रत्येक बार भिन्न-भिन्न हैं। उसे यमक अलंकार कहते हैं।

जैसे—सारंग ले सारंग चली। सारंग पूजो आप।

अथवा

जीवन के सफल बनाने के लिए कौन-कौन से कार्य आवश्यक है ?

उत्तर—जीवन का सफल बनाने के लिए हमें दो काम करना चाहिए। एक तो अन्न का दान करना चाहिए व दूसरा हमें ईश्वर का नाम लेना चाहिए।

प्रश्न 3. वृद्धों ने तरूणों पर पत्थर बरसायें, क्योंकि वृद्धों के स्थान को तरूण ने लिया और वृद्धों को प्रतिमा बनाकर बैठा दिया कि अपने आप से कुछ भी हरकत करने लगें मन्दिर के झण्डे फाड़ने लगे इस सब कुछ को देखते हुए उसे सहन नहीं हुआ और वृद्ध तरूणों पर पत्थर बरसाने लगे।

अथवा

मोबाइल फौन की क्या उपयोगिता है ? लिखिए।

उत्तर—मोबाइल फौन एक प्रकार की ऐसी मशीन है, जिससे हम अपनी बातें कहीं भी देश के कौने-कौन तक पहुँचा सकते हैं। इसे जेब में आसानी से रखकर इसका उपयोग कर सकते हैं। इससे फोटो खींचने, गाना सुनने, समाचार सुनने व अपनी बात रिकार्ड कर दूसरे के पास भेजने के लिए किया जाता है।

प्रश्न 4. 'दो कलाकार' कहानी के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए। 4

उत्तर—दिसम्बर 2012 के हल उत्तर क्रमांक 5 देखें।

अथवा

डॉ. रघुवंश को कर्मयोगी क्यों कहा गया है ?

उत्तर—दिसम्बर 2012 के हल उत्तर क्रमांक 4 देखें।

प्रश्न 5. आँसुओं को आँखों से बाहर क्यों नहीं निकालना चाहिए। 4

उत्तर—आँसुओं को आँखों से बाहर इस लिए नहीं निकालना चाहिए जिससे व्यक्ति के मन की व्यथा का पता चलता है अत: आँसू को नहीं निकलने देना चाहिए।.

अथवा

मुक्तिबोध कवि की दृष्टि में आज के लेखक की क्या परेशानी है ?

उत्तर—कवि की दृष्टि में आप के लेखक की परेशानी है कि रचना करने के लिए अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ता है। उसे विषय चुनने केलिए सोचना पड़ता है। किस विषय पर रचना करना उपयुक्त होगा।

प्रश्न 6. गद्य की नवीन विधाओं के नाम लिखिए। **4**

उत्तर—गद्य की नवीन विधाएँ—यात्रावृत्तांत, संस्मरण, रेखाचित्र इण्टरव्यू, आत्मकथा, पत्र तथा जीवनी आदि गद्य की नवीन विधाएँ हैं।

अथवा

कहानी के तत्वों के नाम लिखिए।

उत्तर—कहानी के मुख्य छः तत्व हैं—(1) कथावस्तु, (2) पात्र, (3) चरित्र-चित्रण, (4) उद्देश्य (5) देशकाल वातावरण, (6) संवाद।

प्रश्न 7. रहस्यवाद की कोई चार विशेषताएँ लिखिए। 4

उत्तर—दिसम्बर 2012 के हल उत्तर क्रमांक 9 देखें।

अथवा

छायावाद के चार प्रमुख कवियों के नाम लिखिए।

उत्तर—छायावाद के प्रमुख चार कवि (1) सुमित्रानंद पंत, (2) महादेवी वर्मा, (3) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला (4) डॉ. राकुमार वर्मा।

प्रश्न 8. सूर्य की किरणों हमें किस प्रकार शक्ति देती है ? 4

उत्तर—सूर्य तेज का प्रती है। सूर्य की किरणों मानव मेंचेतना भरती है उसमें हलचल पैदा करती है। जवन में हलचल व क्रियाशीलता आवश्यक है। यह क्रियाशीलता नये कार्यों की ओर बढ़ने की प्रेरणा देती है। जीवन वह है जिसमें दाहकता या जलन हो।

अथवा

लघुकथा के चार गुण बताइये।

उत्तर—लघुकथा के चार गुण

(i) लघुकथा का कथानक छोटा होताहै।

(ii) लघुकथा में कथा मुख्यतः एक ही घटना पर आधारित होती है।

(iii) लघुकथा में बहुत अधिक पात्र नहीं होते हैं तथा

(iv) लघुकथा का अन्त मस्तिष्क को विचलित करने वाला होता है।

प्रश्न 9. डॉ. रघुवंश की प्रेरणा का आधार क्या था ? 4

उत्तर—साहित्य के प्रकाश डॉ. धीरेन्द्र वर्मा से और अभूतपूर्व सहयोग और सहायता मिली डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी से डॉ. रघुवंश्या को प्रेरणा मिली।

अथवा

''वह तोड़ती पत्थर'' कविता में निहित सौन्दर्य भाव का वर्णन कीजिए।

उत्तर—एक श्रमिक महिला जो इलाहाबाद के रास्ते पर ग्रीष्म ऋतु की तपन सी गर्मी में जहाँ छायादार एक ही वृक्ष नहीं होने पर भी यह महिला पत्थर तोड़ते हुए बड़े ही सहिष्णुता के साथ अपने कार्य में लगन के साथ लगी हुई है।

प्रश्न 10. निम्न में से किसी एक गद्यांश की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए। 6

उत्तर—क्षमा जहाँ से श्रीहत हो जाती है वहीं से क्रोध के सौन्दर्य का आरम्भ होता है। शिशुपाल की बहुत सी बुराइयों को कृष्ण जब क्षमा कर चुका तब जाकर उसका लौकिक लावण्य फीका पड़ने लगा और क्रोध की समीचीनता का सूत्रपात हुआ अपने ही दुःख पर उत्पन्न क्रोध में या तो हमें तत्काल क्षमा का अवसर या अधिकार ही नही रहता अथवा वह अपना प्रभाव खो चुका रहता है।

सन्दर्भ—प्रस्तुत गंद्याश हमारी पाठ्य-पुस्तक के 'क्रोध' नामक पाठ से लिया गया है। जिनके जिनके लेखक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी है।

प्रसंग—क्रोध का श्रेष्ठ रूप बताया गया है।

व्याख्या—शिशुपाल के द्वारा किया जा रहा अत्याचार अधिक हो गया उसे क्षमा करने योगय नहीं रहा तो श्रीकृष्ण क्रोध में आकर उनके अत्याचार से समाज को मुक्त करने के लिए समाज कल्याण का बीड़ा उठाया और शिशुपाल का वध कर दिया। दूसरे की रक्षा के लिये किया जाने वाला दु:ख कारतरता से सगे सम्बन्धियों, मित्रों के लिए किया जाने वाला क्रोध से ऊँचा माना जाता है। समाज के दु:ख से उत्पन्न क्रोध का सौन्दर्य गरिमा के अनुकूल है अर्थात् समाज हित में क्रोध करना श्रेष्ठ है।

अथवा

क्रोध सब मनोविकारों में फुर्तीला है इसी से अवसर पड़ने पर यह और मनोविकारों का भी साथ देकर उसकी तृष्टि का साधक होता है। कभी वह दया के साथ कूदता है कभी घृणा के।

सन्दर्भ—पूर्ववत्।

प्रसंग—क्रोध अन्य सभी मनोविकारों से तुर्फीला होता है।

व्याख्या—लेखक कहते हैं कि मनुष्यों में मन के अन्य विकारों से क्रोध सबसे पहले व तुरन्त पैरा होता है, क्योंकि क्रोध प्रबलता के साथ उत्पन्न होता है, वह फुर्तीला है। क्रोध मनुष्य को परिवर्तित कर देता है। घृणा, प्रेम जैसे मनोविकारों के साथ उनके तृष्टि में महत्वपूर्ण भूमिका अपनाते हुए कभी दया के साथ तो कभी प्रेम के साथ घृणा के साथ क्रोध उत्पन्न होता है।

प्रश्न 11. निम्न मे से किसी एक पद्यांश की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए।

(क) मैं गिरधर के घर जाऊँ,
गिरधर म्हाँरों साँचो प्रीतम, देखत रूप लुभाऊँ।
रैण पड़ै तब ही उठि जाऊँ, भोर भय उठि आऊँ।
रैण दिना बाके संग खेलू, ज्यूँ-ज्यूँ वाहि लुभाऊँ।
जा पहिरावै सोई पहिरूँ, जो दे सोई खाऊँ।
मेरी उणकी प्रीत पुराणी, उण जिण पल न रहाऊँ।
जहाँ बैठावें तितही बैठूँ, बोले तो बिक जाऊँ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, बार-बार बलि जाऊँ।

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद हमारी पाठ्य-पुस्तक के 'मीरा के पद' पाठ से अवतरिकत है जिसकी कवियत्री मीराबाई हैं।

व्याख्या—प्रस्तुत पंक्ति में मीराबाई कहती हें कि श्रीकृष्ण मेरे सच्चे "यतम हैं मैं उन्हीं के प्रेम में रंगी हुई हूँ। उनका परम सौन्दर्य मैर मन में घर कर गया है। मैं उसके प्रेम में इतनी वशीभूत हो गई हँ कि साँझ होते ही मैं उसके घर चली जाती हूँ औश्र प्रात:काल उसके घर से वापस लौट आती हूँ। मैं रात-दिन उसके साथ क्रीड़ा करती हूँ मैं उसे रात-दिन रिझाने का प्रयास कती हूँ मैं इतनी दीवानी हो गई हूँ कि कृष्ण मुझे जो पहनाये उसे पहनूँगी, जाने खाने को दे वही खाती हूँ। मैं कृष्ण के प्रति सर्वस्व समर्पण कर देती हूँ। मेरा और कृष्ण का प्रेम पुराना है। मैं उसके बिना एक पल नहीं रह सकती। मैं बिक जाऊँ उसे छोड़ नहीं सकती। श्रीकृष्ण ही मेरे स्वामी हैं।

विशेष—1. भक्ति भावना का चित्रण लयात्मकता, संगीतात्मकता।

(ख) में क्षितिज भृकुटि पर धिर भूमिल।
चिंता का भार बनी अविरल।
रण कण पर जल कण हा बरसी
नव जीवन अंकुर बन निकली।

सन्दर्भ—प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक क ''मं नीर भरी दु:ख की बदली'' के पाठस से लिया गया है जिसकी कवियत्री महोदेवी वर्मा जी हैं।

प्रसंग—वर्षा जल से भरी बदली का वर्णन कवियत्री अपने दु:खों से कहती है।

व्याख्या—कवियत्री कहती है कि धुँआ बनके बादल जब छा जाता है तो क्षितिज को चिन्ता बढ़ जाती है और बादल जब बरसने लगता है तो मिट्टी में पड़ता है उसमें पड़ी हुई बीज जो मिट्टी के नीचे दबी हुई है उस पर पड़ती है तो वह अंकुर होकर नव जीवन में प्रवेश्या करती है।.....(

प्रश्न 12. हजारी प्रसाद द्विवेद्वी अथवा पंकज कुमार का साहित्यिक परिचय दो रचनाएँ, भाषा शैली एवं साहित्य में स्थान के आधार पर कीजिए। 6

हजारी प्रसाद द्विवेद्वी

दो रचनाएँ—सूर साहित्य नाथ सम्प्रदाय

भाषा शैली—(1) विचारात्मक शैली मानवीय मूल्यों के निबन्ध साहित्यिक निबन्ध इनके वाक्य लम्बे व बोधगम्य है। (2) भावात्मक शैली-मानवीय आदर्श गुणों एवं सभ्यता के विकास का निबन्ध इस शैली में है। भाषा-भाषा खड़ी बोली की है, उर्दू, अरबी, अंग्रेजी के भी शब्द है तत्सम, तद्भव शब्दों का प्रयोग है मुहावरे भी प्रयुक्त है।

साहित्य में स्थान—आधुनिक काल के द्विवेद्वी युगीन साहित्यकार थे।

अथवा

पंकज कुमार

रचनाएँ—अनुराधा

भाषा शैली—पंकज कुमार की कहानी समस्या प्रधान है, उसने नारी की समस्याओं को प्रमुख रूप से उभारने का प्रयास किया है, आपकी रचना में देशज, विदेशी, अरबी, उर्दू फारसी शब्दों का उयोग हुआ है।

चिन्तनप्रधन शैली है। नारी मन की अन्तर्व्यथा का वर्णन करते हुए मनोविश्लेषणात्मक शैली का प्रयोग तथा प्रश्नात्मक शैली, वर्णनात्मक शैली, चित्रातमक शैली का प्रयोग किया है।

साहित्य में स्थान—प्रस्तुत कहानी को युवा हिन्दी कहानी प्रतियोगिता से प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया। तथा साहित्य अमृत पत्रिका के फरवरी 2006 के अंक में प्रकाशित किया गया है।

प्रश्न 13. रामधारी सिंह दिनकर अथवा रैदासा कवि का साहित्यिक परिचय, दो रचनाएँ, भावपक्ष, कलापक्ष एवं साहित्य में स्थान के आधार पर कीजिए। 6

उत्तर—रामधारी सिंह दिनकर

दिसम्बर, 2012 के हल उत्तर क्रमांक 10 देखें।

अथवा

जीवन परिचय—भक्तिकाल के अनुसार रैदास रामानंद के शिष्य थे। कई साक्ष्यों के अनुसार कबीर और रैदास समकालीन थे। रैदास की भक्ति से प्रतिपादित अनेक जनश्रुतियाँ हैं। इन्हें मीराबाई ने अपना गुरु माना था। सन् 1684 में चित्तौड़ में उन्होंने अपनी देह को त्याग दिया।

रचनाएँ—रैदास के काव्य में भक्ति भाव के दर्शन होते हैं। भक्ति भाव में प्रतिक्षण आत्म विभोर रहते हुए भी रैदास ने दिव्य दृष्टि के समय और समाज की आवश्यक माँगों को पहचान कर अपनी बात कहीं।

कलापक्ष—रैदास जी ने अपने पदों पर अवधी शब्दावली व ब्रजभाषा का प्रयोग किया है।

अपनी रचना दोनों के रूप में की है।

साहित्य में स्थान—रैदास जी के काव्य में भक्ति-भाव के दर्शन होते हैं इसलिए आपका स्थान भक्ति पूर्ण कविताओं में ऊँचा है।

प्रश्न 14. अपने मित्र को ओपन स्कूल की बारहवीं की परीखा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने पर बधाई पत्र लिखिए। 6

उत्तर—दिसम्बर, 2012 के हल उत्तर क्रमांक 15 देखें।

अथवा

छत्तीसगढ़ राजय ओपन स्कूल रायपुर की बारहवीं की अंक सूची की द्वितीय प्रति प्रदान करने हेतु आवेदन पत्र लिखिए।

उत्तर—दिसम्बर, 2012 के हल उत्तर क्रमांक 15 देखें।

प्रश्न 15. नीचे लिखे अपठित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 6

उत्तर—मानव समाज में पुस्तक के सर्वाधिक लाभ हैं यह ज्ञान प्राप्ति के सर्वश्रेष्ठ साधन हैं यह पराधीन व्यक्ति के लिए अपार शक्ति साहस और प्रेरणा का स्रोत है। इसके भीतर समाज में परिवर्तन और देश में राज्यक्रान्ति लाने का अलौकिक गुण भी है। पुस्तक, लेखक को अमरत्व प्रदान करती है और समाज में उसे श्रद्धा का पात्र भी बनाती है यह एकान्त में मित्र होने के साथ-साथ मनोरंजन का साधन भी है।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक लिखिए।

उत्तर—पुस्तक

(ii) उपर्युक्त गद्यांश का सारांश लिखिए।

उत्तर—मानव समाज में पुस्तक सर्वाधिक लाभ है। यह ज्ञान प्राप्ति के अलावा साहस एवं प्रेरणा स्रोत है। इससे समाज और देश में क्रांति लाने का गुण है। पुस्तक लेखक को समाज में श्रद्धा दिलाी है। यह मित्र एवं मनोरंजन का एक साधन है।

प्रश्न 16. निम्न में से किसी एक विषय पर लगभग 250 शब्दों में निबन्ध लिखिए। 10

(1) हमारा छत्तीसगढ़ (ii) पर्यावरण प्रदूषण कारण और निदान (3) कम्प्यूटर क्रांति (भारत में)।
(4) छात्र जीवन एवं अनुशासन।

---

(1) हमारा छत्तीसगढ

रूपरेखा—(1) प्रस्तावना-परिचय, (2) छत्तीसगढ़ राज्य की स्थिति-जिले, आवागमन के साधन, शिक्षा, कृषि, खनिज संसाधन, (3) उपसंहार।

(i) प्रस्तावना-परिचय—44 वर्षों के बाद इतिहास ने एक बार फिर करवट बदली और जिन पाँच राज्यों के विलय के बाद 1 नवम्बर, 1956 को नवीन मध्यप्रदेश का गठन हुआ था, उसमें से एक बड़ा भाग 'छत्तीसगढ़' अलग राज्य के रूप में 31 अक्टूबर, 2000 की आधी रात के बाद मध्य प्रदेश से अलग हो गया। छत्तीसगढ़ राज्य के प्रथम राज्यपाल के रूप में श्री दिनेश नन्दनर सहाय और प्रथम मुख्यमंत्री के रूप में श्री अजीत जोगी के शपथ ग्रहण समारोह के साथ ही अलग राज्य अपने अस्तित्व में आ गया।

(2) छत्तीसगढ़ राज्य की स्थिति—नवनिर्मित छत्तीसगढ़ राज्य मध्य प्रदेश के पूर्व में स्थित है। इस राज्य की सीमाएँ महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, उड़ीसा, आन्ध्रप्रदेश बिहार की सीमाओं को स्पर्ष

करती है। इसका क्षेत्रफल 1, 35, 133 वर्ग किलोमीटर के विशाल क्षेत्र में विस्तश्त है। इस राज्य के तीन सम्भागों में से सबसे बड़ा सम्भाग बिलासपुर है।

छत्तीसगढ़ में 90 विधानसभा क्षेत्र हैं तथा 5 राज्यसभा और। 1 लोकसभा क्षेत्र हैं।

90 विधानसभा क्षेत्रों में से 44 क्षेत्र सुरक्षित हैं, जिसमतें 34 आदिवासी तथा 10 हरिजन क्षेत्र हैं 11 लोकसभा क्षेत्रों में से 5 सामान्य, 4 अनूसूचित जाति तथा 2 अनुसूचित जनजाति के लिये आरक्षित हैं।

क्षेत्रफल की दशष्टि से छत्तीसगढ़ राज्य भारत के 16 राज्यों तथा समसत केन्द्रशासित प्रदेशों से बड़ा है। इन 16 राज्यों में हरियाणा, दिल्ली, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, पश्चिम बंगाल, अरुणाचल प्रदेश, तमलिनाडू, असम, मेघालय, मणिपुर, मिजोरम, नागालैण्ड, त्रिपुरा, सिक्किम, केवल एवं गोवा राज्य हैं।

जिले—नवनिर्मित छत्तीसगढ़; राज्य के अन्तर्गत रायपुर, दर्गु, राजनाँदगाँव, बिलासपुर, रायगढ़ सरगुजा, बस्तर, काँकेर, दन्तेवाड़ा, जाँजगीर, जशपुर नगर, कोरिया (बैकुण्ठपुर), कोरबा, महासमुन्द, कवर्धा एवं धमतरी, बीजापुर, नारायणपुर, सहित कुल 18 जिले आते हैं।

गाँव—छत्तीसगढ़ गाँवों का प्रदेश है। यहाँ की 82.56 प्रतिशत जनसंख्या गाँवों में निवास करती है।

आवागमन के साधन—छत्तीसगढ़ आवागमन एवं परिवहन की दशष्टि से उत्पन्न है। यह रेलमार्ग सड़क मार्ग वायुमार्ग से देश के प्रमुख शहरों से जुड़ा हुआ है। राज्य में दो राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक 6 रायपुर, दुर्ग, राजनाँदगाँव और कोलकाता (कलकत्ता) तथा राजमार्ग क्रमांक—43 रायपुर, जगलपुर-विशाखापट्टनम हैं।

शिक्षा—शिक्षा की दशष्टि से छत्तीसगढ़; अभी भी "छड़ा हुआ है। यहाँ पर साक्षरणत का प्रशित 35 है। पुरुषों की साक्षरता 47 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता 23 प्रतिशत है।

छत्तीसगढ़ अंचल में प्राथमिक शिक्षा, पूर्व माध्यमिक शिक्षा तथा मण्डल द्वारा संचालित उच्चतर माध्यमिक शिक्षा हेतु शालाओं का पर्याप्त विकास हो चुका है। इसके विकास के लिये निरन्तर प्रयास जारी हैं।

कृषि—छत्तीसगढ़ क्षेत्र की भूमि बहुत उपजाऊ है। यह क्षेत्र चावल की उपज के लिए "धान का कटोरा" के नाम से जाना जाता है। यहाँ 85% आबादी की आजीविका धान की कृषि से चलती है। इस क्षेत्र की लगभग 43.78% भूमि पर कृषि की जाती है। 88.37% क्षेत्र में खाद्य फसलों की पैदावार होती है। दालों का उत्पादन करीब 21.78% भूमि पर किया जाता है, एवं 7.51% क्षेत्र में तिलहन की कृषि होती है। राष्ट्रीय राजमार्ग के इस क्षेत्र से सम्बद्ध होने की वजह से कृषि उत्पादों के लिये परिवन हे साधन भी बहुत उन्नत अवस्था में मिलते हैं।

खनिज संसाधन—छत्तीसगढ़ को विशिष्टता प्रदान करते हैं। छत्सीगढ़ राज्य के अन्तर्गत 1368 करोड़ टन कोयला, 180 करोड़ टन अयस्क, 60 करोड़ टन डोलोमाइट, 4.1 करोड़ टन बॉक्साइड के अतिरिक्त चूना, पत्थर, टिन, अयस्क, एवं पन्ना के भण्डार विश्व में प्रसिद्ध हैं बहुमूल्य पत्थरों में—एलक्जेंडराइड, सोना, यूरेनियम, हीरा तथा खनिज लवण युक्त जल के भी भण्डार विद्यमान हैं।

वन सम्पदा की दशष्टि से छत्तीसगढ़ राज्य सर्वाधिक धनी राज्य है। इसका लगभग 46% भाग वनों से घिरा हुआ है। इसके 36% भाग में साल के वन हैं। छत्तीसगढ़ अंचल के पश्चिमी और दक्षिणी भाग के वनों में सागौन के वन है। इसके अतिरिक्त बाँस, सरई, चटई, हल्दू और बीजा आदि

के वश्क्ष भी बहुतायत में पाये जाते हैं। वनोपज उत्पादों में इमारती लकड़ी के क्षेत्र में छत्तीसगढ़ का प्रथम स्थान है।

3. उपसंहार—नदियों में छत्तीसगढ़ अंचल की सबसे बड़ी नदी महानदी है। इसकी धार्मिक मान्यता है कि महानदी का उद्‌गम श्रृंगी ऋषि के कमण्डल के जल से हुआ था। इस अंचल की नदियों का उल्लेख हमारे धार्मिक तथा पॉराणिक ग्रंथों में अत्यधिक मिलता है। हमारे अंचल में नदियाँ हमारे सांस्कृतिक धरोहर हैं।

3. कम्प्यूटर क्रान्ति (भारत में)

रूपरेखा—(1) प्रस्तावना, (2) कम्प्यूटर का इतिहास, (3) कम्प्यूटर का विकास, (4) कम्प्यूटर की कार्यविधि, (5) कम्प्यूटर का उपयोग, (6) भारत में कम्प्यूटर, (7) सुपर कम्प्यूटर का निर्माण, (8) कम्प्यूटर का भविष्य, (9) उपसंहार।

(1) प्रस्तावना—मनुष्य ने विज्ञान को अपने बुद्धि कौशल का माध्यम बनाकर बड़े आश्चर्यजनक आविष्कार किये हैं। जल, थल और आकार में उसकी अनरुद्ध गति से होड़ लगाने वाला कोई नहीं है। वस्त्र, भोजन और भवन के क्षेत्र में, औषधि निर्माण और शल्य चिकित्सा के क्षेत्र में मनुष्य की विजय दुंदभि बज रही है। प्रकृति पर विजय की इस यात्रा में मनुष्य को महान् सहयोग देने वाला आविष्कार है 'कम्प्यूटर' या 'गणक यंत्र'। मानव मस्तिष्क के अनेक कार्यों को तीव्र गति से सम्पन्न करने में यह यंत्र समर्थ है। गणितीय क्रियाओं के अतिरिक्त अनेक महत्वपूर्ण और जटिल क्रियाएँ भी कम्प्यूटर से सम्पन्न कराई जा सकती है। सक्षेप में कम्प्यूटर मानव मस्तिष्क का अधिक परिष्कृत और अधिक कुशल यंत्र रूप है।

(2) कम्प्यूटर का इतिहास—कहते हैं कम्प्यूटर का प्रथम विकास यूनान और मिश्र के लोगों ने किया था। ईसा से दस शताब्दी पूर्व इन लोगों ने एक ऐसा यंत्र बनाया था जो कुछ गणितीय क्रियाएँ करने में सहायत होता था। इस यंत्र का नाम 'ऐबेकस' था। बच्चों को शिक्षा देने में यंत्र काफी लोक”य हुआ। जापान में आज भी शिक्षण कार्य में इसका उपयोग होता है। फ्रान्स के युवक ने भी इस दिखा में कार्य किया। उसने छोटे-छोटे पहियों के संयोजन से ऐसा यंत्र बनाया जो अनेक गणितीय क्रियारएँ कर सकता था। ये सभी प्रयास आज के कम्प्यूटर के सिद्धान्त से बहुत दूर थे। आधुनिक कम्प्यूटर का सूत्रपात करने का श्रेय इंग्लैण्ड के वैज्ञानिक चार्ल्स बैवेज को जाता है।

(3) कम्प्यूटर का विकास—आरम्भिक कम्प्यूटर यंत्र काफी विशाल और मूल्यवान थे। ये काफी स्थान घेरते थे और इनको वातानुकूलिन की भी बहुत आवश्यता होती थी। कम्प्यूटर के विकास में सबसे अधिक सहायता ट्राजिस्टर के आविष्कार से मिली। इससे कम्प्यूटर का आकार बहुत छोटा हो गया। कम्प्यूटर के क्षेत्र में दूसरा महत्वपूर्ण योगदान 'ब्लूचिप्स' कहलाने वाले उपकरण का है। इसके अति सूक्ष्म आकार में लाखों संदेश और आदेश भण्डारित किये जा सकते हैं। आज तो पी.सी. या निजी कम्प्यूटर का युग है, जो आकार और कार्यकौशल दोनों की दृष्टि से अत्यन्त सुविधाजनक हैं।

(4) कप्यूटर की कार्य-विधि—कम्प्यूटर में स्वत: विचार या तर्क-वितर्क करने और निर्णय लेने की निजी शक्ति नहीं होती है। उसमें बाहर से सामग्री और आदेश संग्रहित किये जाते हैं, जिसे प्रोग्राम फीड करना कहा जाता है। कम्प्यूटर ये संदेश मानवीय भाषा में ग्रहण नहीं कर सकता, उसके लिए विशेष भाषाओं का आविष्कयार किया गया है, ये बेसिक कोबोल, पास्कल आदि नामों से जानी जाती है। एक बार सामग्री फीड करने के पश्चात् कम्प्यूटर मानव मस्तिष्क की अपेक्षा कहीं

तीव्र गति से प्रश्नों और समस्याओं का हल प्रस्तुत कर देता है।

(5) कम्प्यूटर का उपयोग—आज कम्प्यूटर मानव-जीवन के हर क्षेत्र का परिहार्य अंग बनता जा रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में, अनुसंधान के क्षेत्र में विशाल, और जटिल यंत्रों के संचालन तथा उनके रख-रखाव के क्षेत्र में, मौसम सम्बन्धी जानकारी, भू-गर्भ के रहस्य जानने, अस्त्र-शस्त्रों के निर्माण और परीक्षण तथा अंतरिक्षयानों के संचालन तथा निर्देश, यात्राओं के आरक्षण आदि के क्षेत्रों में कम्प्यूटर का अखण्ड साम्राज्य स्था"त हो चुका है। अब तो कम्प्यूटर ने ज्योतिषी और पण्डित का भी कार्य सम्हाल लिया है। वह जन्म-कुण्डली निर्माण और विवाह-सम्बन्ध कराने का भी कार्य करने लगा है।

(6) भारत में कम्प्यूटर—भारत कम्प्यूटर यद्य" काफी विलम्ब से आया। 1984 के आस-पास कम्प्यूटर ने भारत में पदार्पण किया। आने के समक्ष ही यह लोक"य होता चला गया। आज कम्प्यूटर शैक्षिक पाठ्यक्रम का महत्व्पूर्ण अंग बन गया है। भारतीय जीवन के सभी क्षेत्रों में इसका विस्तार होता जा रहा है। भारत अब कम्प्यूटर निर्माण के क्षेत्र में स्वावलम्बी बन चुका है। विशेषकर 'सॉफ्टवेयर सामग्री का तो यह बड़ी मात्रा में निर्यात भी कर रहा है। भारत के लिये कम्प्यूटर निर्माण के क्षेत्र में सबसे अधिक गौरवशाली क्षण था।

(7) सुपर कम्प्यूटर का निर्माण—भारत के उपयेाग की अपार सम्भावनाएँ भविष्य के गर्भ में छिपे हैं। छोटे से छोटे और विशाल से विशाल तथा कहीं अधिक कार्य-कौशल से सम्पन्न कम्प्यूटर बनते जा रहे हैं। मानव मस्तिष्क की सहायता के लिये बना यह यंत्र कभी उसका स्थानाप्नन बनकर यंत्र मानवों की सशष्टि का आधार बन जाय, तब शायद मानव को हाथ-पैर हिलाने की भी आवश्यकता न रह जाये। केवल बटन स्पर्श का कष्ट उठना पड़ेगा और सभी कार्य तुरन्त सम्पन्न हो जाया करेंगे। विद्यालयों में शिक्षकों का, वाहनों के चालकों का, विशाल कारखानों में प्रबन्धकों और मजदूरों का तथा युद्ध-क्षेत्र में सैनिकों का स्थान कम्प्यूटर ले लेगा। कम्प्यूटरमय जगत् की यह कल्पना कितनी सुखद है।

(9) उपसंहार—कम्प्यूटर का यह रोमांचकारी और सुविधा प्रदायक पक्ष एक खतरे की घण्टी भी हे। धीरे-धीरे कम्प्यूटर मनुष्य को निष्क्रिय और उत्साविहीन प्राणी बनाता जायेगा। उसको शक्ति का नियत्रण भी सौपता जा रहा है। आगे के युद्ध कम्प्यूटर नियंत्रित होंगे। क्षण मात्र में मानवों के विशाल नगर और बस्तियों ध्वत की जा सकेंगी। अभी तो मानव विश्व-युद्धों की आशंका से ही त्रस्त हैं, आगे ब्रह्माण्ड युद्धों को भी झेलना पड़ सकता है। अत: मनुष्य को विज्ञान का स्वामी बनकर ही रहना चाहिए, उसे अपना स्वामी नहीं बनने देना चाहिए।

2. पर्यावरण प्रदूषण का कारण और निदान

प्रस्तावना—पर्याव्रण प्रदूषण एक गमीीर समस्या का रूप ले चुका है। और इसके साथ मानव समाज के जीवन-मरण का महत्व्पूर्ण प्रश्न जुड़ जगया है। हमारा दायित्व है कि समय रहते ही इस समस्या के समाधान के लिए आवश्यक कदम उठायें। यदि इसके लिए आवश्यक उपाय नहीं किये गये तो प्रदूषण युक्त इस वातावरण में मानव जाति का अस्तित्व संकट में पड़ सकता है। आज मनुष्य अपनी सुख-सुविधा के लिए प्राकृतिक सम्पदाओं का अनुचित रूप से दोहन कर रहा है। जिसके परिणामस्वरूप ही प्रदूश की समस्या सामने आई है।

प्रदूषण क्या है ?—सबसे पहले हमारे सामने यह प्रश्न उपस्थिति होता है। कि प्रदूषण क्या है ? जल, वायु व भूमि के भौतिक, रासायनिक या जैवकि गुणों में होने वाला कोई भी अवांछनीय

परिवर्तन प्रदूषण है। एक ओर दुनिया तेजी से विकास कर रही है, जिन्दगी को सजाने-सँवारने के नये-नये तरीके ढूँढ रही हे, दूसरी ओर वे तेजी से प्रदूषित होती जा रही है। इस प्रदूषण के कारण जीना दूभर होता जा रहा है। आज आसमान जहरीले धुएँ से भरता जा रहा है। नदियों का पानी गनछा होता जा रहा है। सारी जलवायु, सारा वातावरण दूषित हो गया है। इसी वातावरण दूषण का वैज्ञानिक नाम है—प्रदूषण या 'पॉल्यूशन'।

प्रदूषण के कारण—सबसे पहले हम इस पर विचार करें कि हमारा पर्यावरण किन कारणों से प्रदूषित हो रहा है। आज सारे विश्व के समक्ष जनसंख्या की वशद्धि सबसे बड़ी समस्या है और पर्यावरण प्रदूषण में जनसंख्या की वशद्धि ने भी अहम् भूमिका का निर्वाह किया है। औद्योगीकरण के कारण आए दिन नये-नये कारखानों की स्थापना की जा रही है, इनसे निकलने वाले धुआँ के कारण वायुमण्डल प्रदूषित हो रहा है। साथ ही मोटरों, रेलगाड़ियों आदि से निकलने वाले धुओं से भी पर्यावरण प्रदूष्ज्ञित हो रहा है। इनके कारण साँस लेने के लिए शुद्ध वायु का मिल पाना मुश्किल है।

वायु के साथ-साथ जल भी प्रदूषण हो गया है। नदियों का पानी दूषित करने में बड़े कारखानों का सबसे बड़ा हाथ है। कारखानों का सारा कूड़ा-कचरा नदी के हवाले कर दिया जाता है, बिना यह सोचे कि इनमें से बहुत कुछ पानी में इस प्रकार घुल जायेंगे कि मछलियाँ मर जायेंगी और मनुष्य पी नहीं सकेंगे। राइन नदी के पानी का जब विशेषों ने समुद्र में गिरने से पूर्व परीक्ष्ज्ञण किया तो एक घन सेण्टीमीटर में बीस लाख जीवन विरोधी तत्व मिले। कबीरदास के युग में भलमे ही बँधा पानी ही गन्दा होता हो, आज तो बहता पानी भी निर्मल नहीं रह गया है, बल्कि उसे दूषित होने की सम्भावना और बढ़ गई है।

पर्यावरण प्रदूषण रोकने के उपाय—सारा परिवेष विषाक्त हो गयाय है, सारी मानवता संकट में है। अनेक प्रकार की नई-नई बीमारियों का जन्म हो रहा है। इसे रोकने के लिए आवश्यक कदम उठाना अनिवार्य है। प्रदूषण की समस्या वैसे तो विश्वव्यापी समस्या है। लेकिन भारतीय प्रदूषण की कुछ अपनी विशष्टि समस्याएँ भी हैं। यहाँ प्रदूषण के एक बहुत बड़े अंश का दायित्व मशीनों और वैज्ञानिकों प्रयोगों पर नहीं, हमारी निर्धनता और उससे उत्पन्न अस्वास्थकर परिस्थितियों और आदतों पर हैं। एक ही घर में गाय, भैंस, मनुष्य जहाँ साथ-साथ रहते हों, एक ही जलाशय में जहाँ मवेशियों को नहलाया जाता हो और वहीं से पीने का पानी लाया जाता हो, गन्दी नाली के ऊपर मछलियाँ बिकती हों, खोमचे वाले जहाँ मक्खियों को मित्र और अतिथि मानते हों वहाँ की प्रदूषण समस्या को नियन्त्रित कर पाना सम्भव नहीं है, लेकिन कुछ प्रयास किये जा सकते हैं। वायु प्रदूषण को रोकने के लिए चिमनियों में फिल्टर लगाये जायें, जो प्रदूषणकारी तत्वों को वायुमण्डल में प्रविष्ट न होने दें। जल-प्रदूषण को रोकने के लिए आवश्यक है। कि जल स्त्रोत्रों में गन्दे पानी को न डाला जाये तथा उद्योग-धन्धों से निर्गत पानी को भूमिगत किया जाये।

पर्याव्रण संरक्षण के लिए वनों की रक्षा पर विशेष बल दिया जाना चाहिए। वश्क्ष और वनस्पतियाँ वायुमण्डल से कार्बन-डाईऑक्साइड ग्रहण करते हैं तथा ऑक्सीजन छोड़ते हैं। यदि वश्क्ष तथा वनस्पतियाँ न हों तो पेट्रोल तथा डीजल से चलने वाले वाहनों, कारखानें और प्राणी जगत द्वारा छोड़ी हुई कार्बन-डाई-ऑक्साइड से सम्पूर्ण वातावरण भर जाएगा। वश्क्ष पर्यावरण सन्तुलन के सर्वोम साधन हैं। अत: हम अधिक-से-अधिक वश्क्ष लगाकर पर्यावरण को प्रदूषण हानियों से बचा सकते हैं।

उपसंहार—प्रदूषण के कारणों और स्वरूपों पर विस्तार से विचार करने लगें तो सिर चकराने

लगता है। सब कुछ तो दूषित है हवा, पानी, पेड़, पौधे, अन्न। फिर क्याय खायें, क्या पीयें, कहाँ जाएँ। प्रसिद्ध वैज्ञानिक जार्ज वुडवेल ने ठीक ही कहा है कि परिवेश के चक्रों के प्रदूषण के बारे में हमने जितना कुछ जाना है वह इसका पर्याप्त प्रमाण है कि इस विराट धरती पर अब कहीं सुरक्षा और स्वच्छता नहीं है।

वैज्ञानिक सभ्यता का अभिशाप प्रदूषण के रूप में ही सामने आया है। यह मानव को मश्त्यु के मुँह में धकेलने की चेष्टा है।, यहा प्राणियों के अमंगल की कामना है। जीवन को सुरक्षित बनाने एवं रखने के लिए प्रदूषण की समस्रा पर नियन्त्रण करना एक मौलिक आवश्यकता है। इस समस्या के प्रति उपेक्षा एवं उदासीनता से मानव का अस्तित्व ही संकटमय हो सकता है। पयाव्रण की सुरक्षा सामाजिक एवं सामूहिक उत्तदायित्व है, प्रत्येक नागरिक को चाहिए कि वह इस दिशा में योगदान दे।

4. छात्र जीवन में अनुशासन

रूपरेखा—(1) अनुशासन का अभिप्राय, (2) अनुशासन का जीवन में महत्व, (3) अनुशासन से लाभ, (3) अनुशासन से लाभ, (4) वर्तमान युग में अनुशासन, (5) अनुशासन के साधन, (6) अनुशासित राष्ट्र एवं व्यक्तियों के उदाहरण (7) उपसंहार।

अनुशासन दो शब्दों अनु + शासन के मेल से बना है जिसका अभिप्राय होता है शासन के पीछे चलना या नियमानुसार कोई कार्य करना। अत: नियमों का पालन ही अनुशासन है। कहा भी जाता है। कि अनुशासन ही जीवन है।

मानव जीवन में अनुशासन का महत्वपूर्ण स्थान है। सशष्टि के सम्पूर्ण क्रिया-कलापों में भी हमें इसी अनुशासन के दर्शन होते हैं। सूर्य एवं चन्द्र एक निश्चित समय में ही उिचत एवं अस्त होते हैं। इसी प्रकार प्रकृति की अन्य शक्तियाँ अनुशासन में रहती हुई दिखाई देती हैं।

जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए हमें पग-पग इसका पालन करना चाहिए। जीवन के प्रत्यक क्षेत्र में इसकी पहली आवश्यकता होती है। विद्यार्थी जीवन में बालक यदि अनुशासित नहीं है तो वह न तो अपनी पढ़ाई ठीक प्रकार से पूरी कर पायेगा और न विद्यालय को सुचारू रूप से चलने देगा। सामाजिक जीवन में भी उसे प्रत्येक कदम पर अनुशासन का ही पालन करना पड़ता है। यही बात पारिवारिक जीवन में भी देखने को मिलती है। स्कूल हो या दफ्तर, व्यापार हो या कारखाना, सेना हो या पुलिस सभी में अनुशासन की नितान्त आवश्यकता पड़ती है। अनुशासन के बिना कोई कार्य सरलता से नहीं हो सकता है। सेना में तो अनुशासन के बिना कोई कार्य सरलता से नहीं हो सकता है।

मानव-जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अनुशासन का महत्वपूर्ण स्थान होने से इसके द्वारा हमें अनेक लाभ प्राप्त होते हैं। अनुशसन में रहने से मानव की शारीरिक, मानविसक एवं सामाजिक प्रगति हुआ करती है। यही वह तत्व है जिसके अध्ययन और प्रयोग से मानव-जीवन में शान्ति एवं उन्नति की प्राप्ति होती है। अनुशासन में रहने वाला दुर्बल से दुर्बल राष्ट्र भी एक दिन उन्नत राष्ट्र बन जाता है। दोनों विश्व युद्धों में पूरी तरह से नष्ट हुए जर्मनी एवं जापान अनुशासन के बल पर ही आज विश्व में उन्नति राष्ट्र बने हुए हैं। इस गुण के निरन्तर अभ्यास से मनुष्यों में सत्यता, कर्तव्यनिष्ठा, ईमानदारी एवं लगन आदि गुणों का विकास होता रहता है। प्राचीन काल से ही हमारे ऋषि-मुनियों ने इसकी महत्ता बतलायी है और इसी के बल पर वे ज्ञान एवं वैभव के क्षेत्र में जगत् गुरु बन सके। इस गुण के अभ्यास के लिए पहले तो मनुष्य को कुछ कष्ट सा लगता है, पर निरन्तर अभ्यास से उसकी आदत बन जाती है और भी बिना अनुशासन के उसका जीवन अटपटा-सा हो जाता है। अत: जीवन की

सब प्रकार की उन्नति के लिए अनुशासन का उपयोग नितान्त आवश्यक है।

वर्तमान युग में अनुशासन का बहुत महत्व है। आज जबकि सब ओर उद्दण्डता एवं अनुशासनीलता का बोलबाला है। आये दिन हड़ताल एवं जुलूस आदि निकलते रहते हैं। उत्पादन निरन्तर गिर रहा है, कार्यालय में काम नही होता है, ऐसी दशा में अनुशासन का विशेष महत्व है। पर चिन्ता की बात तो यह है कि देश के उच्च नेता वर्ग में ही जब अनुशासनीलता है तो फिर और लोग इससे कहाँ बच सके हैं ? अत: आवश्यकता इस बात की है कि उच्च नेता वर्ग एवं शासक वर्ग में सर्वप्रथम ही अनुशासन की भवना आये तभी वे समाज के अन्य लोगों से अनुशासन पालन करने की बात कह सकेंगे।

समाज के लागों को अनुशासन का महत्व समझना चाहिए। उन्हें उनके अधिकारों से पूर्व अपने कर्तव्यों को बताना चाहिए। साथ ही समाज के अन्य लोगों को स्वयं भी अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक होना चाहिए। खेलकूलदों, एन. सी. सी. और स्काउटिंग आदि के प्रशिक्षण से छात्रों में अनुशासन की भावना बचपन में हल जम जाती है और फिर वह जीवन भर उनके काम आती रहती है।

इस संसार में हम देखते हैं। कि वे ही राष्ट्र एवं व्यक्ति की उन्नति के मार्ग पर होते हैं जो अनुशासन से ही रहते हैं। जर्मनी, जापान एवं इजराल आदि देशों ने इसी अनुशासन के बल पर संसार में उन्नत राष्ट्रों में अपना स्थान बना लिया है। इसी प्रकार नेपोलियन, अशोक, महाराणा प्रताप, शिवाजी, जवाहरलाल नेहरू, लालबहादुर शास्त्री, स्टालिन, आइजन हावर आदि ने अनुशासन के बल पर ही ऊँचा पद प्राप्त कर विश्व मतें अपना नाम कमाया है।

सार रूप में हम यह कह सकते हैं। कि मानव जीवन में अनुशासन का महत्वपूर्ण विषय है। बिना अनुशासन कोई भी व्यक्ति एवं राष्ट्र उन्नति नहीं कर सकता है। सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक उन्नति के लिए प्रत्येक राष्ट्र एवं समाज को अनुशासन में नहीं रहना पड़ता है। इस प्रकार जो समाज या राष्ट्र अनुशासन में नहीं रहता है, वह टुकड़े-टुकड़े बिखर जाता है। अत: राष्ट्र एवं व्यक्ति के जीवन में अनुशासन का महत्वपूर्ण स्थान है।

●●

छत्तीसगढ़ राज्य ओपन स्कूल परीक्षा

सॉल्व्ड पेपर—जुलाई, 2011

कक्षा 12वीं

विषय—हिन्दी

सेट—4

समय 3 घंटा **पूर्णांक 100**

निर्देश—1. सभी प्रश्न अनिवार्य है। कुल 16 प्रश्न है।

2. प्रश्न क्रमांक 1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न जिसके 3 खण्ड हैं। खण्ड 'अ' सही विकल्प चुनिये, खण्ड 'ब' रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए अ खण्ड स खण्ड वाक्य में उत्तर दीजिये। इसमें कुल 22 अंक आबंटित हैं। (प्रत्येक प्रश्न 1-1 अंक)

III. प्रश्न क्रमांक 2 से 9 तक लघु उत्तरीय प्रश्न प्रत्येक प्रश्न में 4 अंक आबंटित हैं। (शब्द सीमता 100 से 125)

IV. प्रश्न क्रमांक 2 से 9 तक लघु उत्तरीय प्रश्न प्रत्येक प्रश्न में से 4 अंक आबंटिक है। (शब्द सीमा 100)

V. प्रश्न क्रमांक 16 निबंधात्मक है इसमें 10 अंक निर्धारित है। 1 शब्द सीमा 250 से 300

VI. प्रश्न क्रमांक 2 से 16 तक सभी प्रश्नों में विकल्प दिये गये हैं।

1. (अ) सही विकलप चुनकर लिखिए–

(क) नभ के नवरंग कुनते दुफुल का आशय है कि इन्द्रधनुष

(i) बादलों के लिए कपड़े बुनते हैं। (ii) बादलों के साथ उड़ते रहते हैं।

(ii) बादलों को रंगीन आभा देते हैं। (iv) ''य के दुपट्टे जैसा लगता है।

उत्तर—(ii) सबल के लिए।

(ख) नभ के नवरंग बुनते दुकुल का आशय है कि इन्द्रधनुष—

(i) बादलों के लिऐ कपड़े बुनते हैं (ii) बादलों के साथ उड़ते रहते हैं।

(iii) बादलों को रंगीन आभा देते हैं (iv) ''य के दुपट्टे जैसा लगता है।

उत्तर—(iii) बादलों को रंगीन आभा देते हैं।

(अ) बादलों को रंगीन आभा देते हैं—

(i) 1995 (ii) 1988

(iii) 1965 (iv) 1977

उत्तर—1965

(ग) भारत में कम्प्यूटर के विकास की शुरुआत हुई।

(i) 1995 (ii) 1988

(iii) 1965 1977

उत्तर—1965।

(घ) परितंत्रीय समस्या का सम्बन्ध है—

(i) नई बीमारियों से (ii) कलकारखानों के बढ़ने से

(ii) जल-प्रदूषण से (iv) जंगलां के कटने से।

उत्तर—जंगलों के कटने से।

(ड़) तरुण चाहते थे कि—

(i) वश्द्धों की सेवा करें (ii) वश्द्धों का स्थान से लें।

(ii) अपने झण्डे फहराये (iv) वश्द्धों की बात मानें।

उत्तर—(ii) वश्द्धों का स्थान ले लें।

(ब) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(अ) मनुष्य अपने भावों विचारों को.....के माध्यम से प्रकट करता है।

(ख) शब्दों का निर्माण.....से होती है।

प्रश्न 2. कम्प्यूटर के आने से सूचना और संचार के क्षेत्र में क्रांति आ गई है। सिद्ध कीजिए।

उत्तर—स्वतंत्रता के पश्चात् भारत में विज्ञान की प्रगति के कारण प्रत्येक क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हुई और इसी श्शंखला में कम्प्यूटर एक क्रान्ति की भाँति जन-जन की सुविधाओं के लिए आज हमारे सामने आयाय है। विज्ञान और सूचना प्रणाली के माध्यम से कम्प्यूटर द्वारा आज हम कृषि, चिकित्सा, दुग्ध उत्पादन, अंतरिक्ष तक पहुँचना, रक्षा अनुसंधान, परमाणु ऊर्जा, प्रौद्योगिक विकास के साथ-साथ संचार प्रणाली, शिक्षा आदि क्षेत्रों में उन्नति के साथ आगे बढ़ने में सक्षम हो गए हैं। कठिन से कठिन कार्य मिनटों और घण्टों में पूर्ण हो जाते हैं, इसलिए कहा जा सकता है कि कम्प्यूटर के आने से सूचना और संचार के क्षेत्र में क्रान्ति आ गई है।

अथवा

जनसंख्या वश्द्धि का प्रभव पर्यावरण पर किस प्रकार पड़ता है ?

उत्तर—जनसंख्या वश्द्धि का प्रभाव पर्यावरण पर भी पड़ने लगता है, जिससे वायु प्रदूषण दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है। बढ़ती जनसंख्या से मोटर गाडियों कलन कारखानों का आविष्कार हुआ वहाँ से निकलने वाला धुँआ, पेड़;-पौधों एवं जीव जन्तु को प्रभावित कर रहा है। जल प्रदूषण कारखाने व घर के मलमूत्र नदियों व तालोां में छोड़ देने से जल प्रदूषण होने लगता है। मोअर गाड़ियों व कारखानों के ध्वनि से ध्वनि प्रदूषण, कूड़े-कचरों से मश्दा प्रदूषण। इस प्रकार पर्यावरण पर अधिाक प्रभाव पड़ रहा है।

प्रश्न 3. गीतिका छेद को परिभाषित करते हुए उदाहरण दीजिए ?

गीतिका—गीतिका एक मात्रिक छंद है। इसके चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में 14 एवं 12 की यति से 26 मात्राएँ होती हैं। अन्त में लघु गुरु होता है। जैसे—

ऽऽऽ।।ऽऽऽ।।।ऽऽ।ऽ

हे प्रभे आनन्द दाता, ज्ञान हमको दीजिए।

शीघ्र सारे दुर्गुणों को, दूर हमसे कीजिए।।

अथवा

उत्प्रेक्षा अलंकार, को परिभाषित कर उदाहरण दीजिए।

उत्तर—उत्प्रेक्षा अलंकार—उत्प्रेक्षा का अर्थ सम्भवना या कल्पना अर्थात् एक वस्तु को दूसरी वस्तु मान लिया जाए। जहाँ उपमेय में उपमान की कल्पना या समीावना की जाये, उसे उत्प्रेक्षा अलंकार कहते हैं।

प्रश्न 4. 'तोड़ती पत्थर' कवितउा के आधार पर शोषण और शोषित के जीवन का अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—दिसम्बर 2012 के हल उत्तर क्रमांक 5 देखें।

अथवा

दावीर रक्त से पाप घुलने की कल्पना कवि ने क्यों की ?

उत्तर—अन्यायी को मारना पुण्य का काम है, क्योंकि अपने जीवन काल में अन्याय व अत्याचार करके उसके शरीर में जो भी रक्त बह रहा है वह पाप व अत्याचार का है। उसे खून से पाप धुलते हैं।

प्रश्न 5. चित्रा और अरुणा के व्यवहार में क्या अंतर है।

उत्तर—चित्रा और अरुणा के कार्य क्षेत्र एवं व्यवहार में काफी अंतर है। चित्रा आदर्शवादी हैं। वह एक समाज सेविका के रूप में अनाथ बच्चों को पढ़ाना-लिखाना व सही राह दिखाना अर्थात् अपने आदर्श को सब कुछ मानकर समाज सेवा करती हैं

अरुणा यथार्थवादी है वह अपना कार्य क्षेत्र यथार्थ में ढूँढ़ती है। वह मश्त भिखारिन और उनके और बच्चों की तस्वीर बनाकर उरनके यथार्ाी को दर्शाती है।

प्रश्न 2. दो कलाकार कहानी शीर्ष्ाक की सार्तिकता, स्पष्ट कीजिए। अथवा

डॉ. रघुवंश समझौतावादी प्रवशत्ति कभी नहीं रही। उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।2

उत्तर—डॉ. रघुवंश अपनी योगयता और क्षमता के बलबूते पर वह निरन्तर अग्रसर हुए और सर्वोच्च पद से अवकाश प्राप्त कर उच्च शिक्षा संस्थान शमिला में भी प्रतिष्ठि रहे। वहाँ रहते हुए उन्होंने कई प्रतिमान स्था"त किए।

प्रश्न 6. रहीम ने प्यादे और फरजी का दश्फ्टांत क्यों दिया है ?

उत्तर—दिसम्बर, 2012 के हल उत्तर क्रमांक 6 देखें।

अथवा

"मुझे कदम-कदम पर" कविता का केन्द्रिय भाव लिखिए।

उत्तर—मुझे कदम-कदम पर कविता में बताया गया है कि चौराहे मिलना बहुत अच्छा है। ये रास्ते में संकट बनकर नहीं बल्कि विकल्प बनकर हमारे सामने आते हैं। यानी हमारे समझ जितने रास्ते होंगे उतने ही विकल्प होंगे और हम उनसे में से जो भी किवल्प चुनेंगे वह अपने आप में अनेक अन्य विकल्प लिए हुआ होगा। अत: जीवन के लिए किसी भी अनुभव को व्यर्थ नहीं समझना चाहिए। सभी का अपना महत्व होता है। इस कविता में कवि का दशष्टिकोण व्यवहारवादी है। अपनी बात अस्पष्ट रूप से कहने के लिए कवित ने प्रतीकों का प्रयोग किया है।

प्रश्न 7. 'सएक या पेड़ एक था ठूंठ' पाठ के शीर्ष्ाक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—व्यक्ति को हरे-भरे पेड़ की तरह होना चाहिए वह हिलने-डुलने में सक्षम हो, जिससे व्यक्ति में समन्यवादी दशष्टिकोण होता है किन्तु ठूँठ कठोर, अड्यिलपन के कारण अपने आप में

दश्ढ़ता का प्रतीक है।

अथवा

लघुकथा की विशेषताएँ उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—लघु कथा एक विद्या होने के बावजूद अपनी निजात और अपने तत्वों कव शिषताओं की प्रीााव क्षमता तमें उससे भिन्न है।

(1) समकालीन विसंगतियों से उत्पन्न इस विद्या का मूल स्वर व्यंगय होता है।

(2) लघु कथा में विस्तार नहीं होता नाहीं इसके वातावरण निर्माण का अवकाश होता है।

(3) इसमें जीवन की एक समस्या, एक विसंगति अथवा मानव स्वभाव की विरोधी प्रवशत्ति को दिखाया जाता है।

(4) लघु कथा का अन्त एकदम मस्तिष्क को उद्वेलित करने वाला होता है।

प्रश्न 8. निबंध का आशय स्पष्ट करते हुए किन्हीं दो निबंधकार के नाम लिखिए।

उत्तर—निबंध का आशय—निबन्ध शब्द निः + बन्ध से बना है जिसका अर्थ अच्छी तरह बंधा हुआ। अपने विचारों या भावों को भाषा में भली-भाँति क्रमबद्ध बाँधना ही निबन्ध है। दो निबंध ाकारों के नाम हैं—(1) आयार्च हजारी प्रसाद द्विवेदी, (2) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।

अथवा

'हम कठपुतली है' कविता में 'हम' से कवि का क्या तात्पर्य है ?

उत्तर—हम से कवि का तात्पर्य है कि हम अर्थात् कोई भी हो सकता है। मैं भी वह भी और आप भी इसलिए कवि ने कठपुतली को हम की संज्ञा दी है।

प्रश्न 9. बीरगाथा काल की दो विशेषताएँ एवं दो छायावादी कवित के नाम व उनकी रचना लिखिए।

उत्तर—वीरगाथा काल की दो विशेषताएँ

1. दरबार भार चारणों के द्वारा अपने आश्रयदाता राजाओं की बीरता का अतिश्योक्ति पूर्ण वर्णन किया है।

2. बीर तथा श्रंश्गार रस में वर्णन किया गया है।

छायावादी कवि एवं उनकी रचनाएँ

1. श्रीजयशंकर प्रसाद – कामायनी, लहर झरना

2. सुमित्रानंदनद पंत – बीणा, पल्लव, गुंजन।

अथवा

छायावादी काव्य की दो विशेषताएँ एवं दो छायावादी कवि के नापम उनकी रचना के नाम लिखिए।

उत्तर—छायावादी काव्य की विशेषताएँ

1. प्रकृति प्रेम—छायावादी कवियों का मन प्रकृति चित्रण सम्बन्ध जोड़ा गया है।

2. प्रेम और सौन्दर्य का चित्रण—प्रेम और सौन्दर्य का चिवण छायावाउददी ने बड़ी रुचि और सह्रदयता के साथ किया है।

छायावादी कवि एवं उनकी रचना

1. जय शंकर प्रसाद कामायणी, लहर

2. सुमित्रानंदनपंत – वीणा, पल्लव, गुंजन

10. मीराबाई अथवा सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का साहित्य परिचय निम्न बिन्दुओं के आध ाार दीजिए–

मीराबाई

रचनाएँ–आपकी प्रमुख रचनाएँ हैं–गीतगोविन्द की टीका, राग गोविन्द, नरसी जी का मायरा।

भावपक्ष–मीराबाई की काव्य में कृष्ण भक्ति व कृष्ण प्रेम का दीवानापन है। मीरा के काव्य में विरह की तीव्र अनुभूति और सरस व्यंजना है। मीरा के पदों में रहस्यवाद के दर्शन होते हैं। मीरा के साहित्यें माधर्यु भाव का बहुत ऊँचा स्थान हैं

कलापक्ष–मीरा की काव्य भाषा में विविधता है। अलंकारों का काव्यगुणों का प्रयोग स्वाभाविक रूप से हुआ है। मीरा की शैली मुक्तक शैली है। इनके काव्य में संगीतात्मकता व गेय पदों की प्रधानता है। काव्य वेदना से भरा हुई माधुर्य भक्ति है।

अथवा

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

रचनाएँ–आपकी प्रमुख रचनाएँगीतिका, परिमल, तुलसीदास, कुकुरमुत्ता आदि।

भावपक्ष–निराला जी मुख्यत: छायावादी कवि है। आपकी कविता में छंद की स्वच्छंदता, कल्पना, ओज के साथ-साथ भावों में सर्वत्र नवीनता दिखाई देती हे। शोषकों और पूँजीपतियों का घार विरोध किया।

कलापक्ष–निराला जी की भाषा विशुद्ध खड़ी बोली है। ध्वन्यात्मक शब्दों का प्रयोग फारसी अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग। शांत रस, श्रृंगार, रौद्र, वीर रस का प्रयोग उमा, उत्प्रेक्षा, रूपक के साथ मानवीकरण अलंकारों का प्रयोग हुआ है।

प्रश्न 11. मोहन राके अथवा रामचन्द्र शुक्ल का साहित्यिक परिचय निम्न बिन्दुओं के आधार पर दीजिए।

उत्तर–दिसम्बर 2012 के उत्तर क्रमांक 11 देखें।

प्रश्न 12. निम्नपद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

सौह करें हौहने हंसे, देन कहै नटि जाय।।
कहलान एकत व्यवसाय अहि महयूर, मश्ग बाधा।
जगत तपोवन सौ किलो, दीघ्र दाघ निदाघ।।

सन्दर्भ–प्रस्तुत दोहा रीतिकाल के प्रतितिनिधि कवि बहारी के सुप्रसिद्ध काव्यग्रंथ बिहारी सतसई संलग्न किया गया है।

प्रसंग–यहाँ पर राधाकृष्ण के पारस्परिक प्रेम का वर्णन किया गया है।

व्याख्या–श्री कृष्ण और राधा के पारस्परिक प्रेम ठिठोली व कृष्ण से बातचीत करने के लिए श्रीकृष्ण के मुरली को छिपा देती है ताकि वह वंशी पर एकाग्रचित न होकर गोली व राधा से कुछ बात करे। अन्त में कृष्ण राधा के पास जाते हैं। किन्तु वहाँ पर भी उसे बाँसुरी नहीं लिती किन्तु उसी सयम राधा के होठों से हँसी उमड़ पड़ती है जिससे कृष्ण को पता चला जाता है कि बाँसुरी राधा के पास है। राधा कृष्ण को बाँसुरी देने को कहती है। किन्तु बाद में देने इन्कार से करती है कि उसके पास बाँसुरी नही है। किसी चित्र में साँप और मोर तथा हिरण और शेर को अपनी चिर-शत्रुता को

भुलाकर एक स्थान पर रहते देखकर कोई व्यक्ति प्रश्न करता है कि क्या कारण है कि जन्म से ही एक-दूसरे के प्रति शत्रुभाव अथवा

1. नरहरि ! चंचल है मति मेरी,

कैसे भगति करूँ मैं तेरी।।

तूँ मोंहिक देखैं, तोहि न देखूँ, यह मति सब बुधि खोई। सब घटर अंतर रमसि निरंतर, मैं देखन नहिं जाना। गुन तब तोर, मोर सब आगुन, कृत उपकार न माना।

मैं तैं, तोरि-मोरि असमझि सौं, कैसे करि निस्तारा।

कहा 'रैदास' कृष्ण करुणामय ! जै जैस जगत्-अधारा।।

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद हमारी पाठ्यपुस्तक के 'रैदास के पद' से अवतरित है इसके रचियता रैदास कवि हे।

प्रसंग—मन की चंचलता के साथ्ज्ञ ईश्वर के निराकार रूप का वर्णन किया गया है।

व्याख्या—कवि कहते हैं कि हे प्रभु मेरा मन बहुत ही चंचल है। मैं आपकी भक्ति कैसे करुँ मैं इस संसार के मोह माया के जाल से हट नहीं पा रहा इसलिए मैं आपकी भक्ति एकाग्रचित होकर नहीं कर पाता। हे प्रभु ऐसे परिस्थित में आप मुझे देखें मैं आपको देखँ और तभी मैं अपने मन, बुद्धि के एकाग्रचित मन से आपकी भकित में लगा सकूँगा। आप तो सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापी हो आपका निवास तो सब कुछ में है आप मुझे देखते हो किन्तु मैं आपको नहीं देख पाता, आप गुणी हो मैं अवगुण ी हूँ, मैंने आपके द्वारा किये गये उपराकों को भी नहीं माना। मैं इस संसार में मेरे-तेरे से नासमझ हूँ मुझे इन सबसे मुक्त कर भथ्क्त का मार्ग प्रशस्त करो। हे प्रभु श्रीकृष्ण आप सर्वज्ञानी सर्वव्यापी हैं मुझे इस अज्ञानता के बंधन से मुक्त कर दो ताकि मैं आपके भक्ति के मार्ग में चलकर आपके दर्शर का सकूँ, मैं आपकी जय-जयकार करता हूँ।

प्रश्न 13. निम्नलिखित गंधाश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

उत्तर—विशालिक की सूखी नीरस पहाड़ियों पर मुस्कुराते हुए वश्क्ष द्वन्द्वातीत है अलमस्त है। मैं किसी का नाम नहीं जानता कुल नहीं जानता, शील नहीं जानता, पर लगता है कि ये जैसे मुझें अनादिकाल से जानते हैं इन्हीं में एक छोटा-सा बहुत ठिंगना पेड़ है, पत्ते चौड़े भी हैं, बडे भी। फूलों से तो ऐसा लदा है। कि कुछ पूछिए नहीं। अजीब सी अदा है मुस्कुराता जान पड़ता है। लगता है पूछ रहा है कि क्या तुम मुझे नहीं पहचानते ?

सन्दर्भ—प्रस्तुत पंक्ति हमारे पाठ्यपुस्तक के कुटज नाम पाठ से अवरित है जिससे लेखक हजारी प्रसाद द्विवेदी जी है।

प्रसंग—कुटज का परिचय दिया गया है।

व्याख्या—लेखक कुटज के बारे में बताते हुए कहते हैं। कि शिवालिक की पहाड़ी में अनेक छोटे-छोटे पौधे कुल वंश प्रकृति स्वभाव के बारे में कुछ जानकारी नहजीं है किन्तु वह मुझे बरसों से जानते हैं ऐसे लगते हैं। उस शिवालिक पहाड़ी पर एक छोटा-सा वृक्ष हे जो खूब फलों से लदा है, पत्ते चाड़े हैं। वह हमेशा मुस्कुराते हुए पूछ रहा है कि क्या तुम मुझको नहीं पहचानते।

अथवा

सूर्य का गोला पानी की सतह से छु गया। पानी पर दूर तक सोना ही सोना घुल आया पर वह इतनी जल्दी-जल्दी बदल रहा था कि किसी एक क्षण के लिए उसे एक नाम दे सकता असम्भव था।

सूर्य का गोला जैसे एक बेबसी में पानी के लावे में डूबता जा रहा था। धीरे-धीरे वह पूरा डूब गया और कुछ क्षण पहले जहाँ सोना बह रहा था, वहाँ अब लहू बहता नजर आने लगा।

सन्दर्भ—यह गद्यांश हमारे पाठ्य-पुस्तक के 'आखरी चट्टान' से लिया गया है। जिसके रचयिता मोहन राकेश जी हैं।

प्रसंग—लेखक समुद्र अरब सागर का जल दूर-दूर तक फैला हुआ है। सूर्य अस्त होने वाला जो लाल-लाल सोने के गोले की तरह वह समुद्र के पानी को छूने का प्रयास कर रहा है। सूर्य की किरणें जल पानी में पड़ती है। तो पानी की लहर में सोना बह रहा है। ऐसा दिखाई दे रहा था। प्रतिक्षण सूर्य अपनी स्थिति बदल रही है वह धीरे-धीरे लाल हो गया। लाल रंग समुद्र के पानी में रक्त घुलकर बह रही है ऐसा लग रहा कुछ देर बाद सारे समुद्र का पानी लाल-लाल रंक्त रंजित जैसे दिखाई दे रजा है।

प्रश्न 14. परीक्षाफल में लाउडस्पीकर पर प्रतिबन्ध लगाने के सम्बन्ध में जिलाधीश के एक शिकायती-पत्र लिखिए।

उत्तर—

सेवा में,

जिलाधिकारी महोदय,

रायपुर

मान्यवर,

इस पत्र के माध्यम से आपका ध्यान नगर में ध्वनि-विस्तारक यन्त्रों के बजने से उत्पन्न शोकर की तरफ आकर्षिक कराना चाहता हूँ। अगले सप्ताह से माध्यमिक शिक्षा मण्डल की कक्षा 10 तथा 12 की बोर्ड परीक्षाएँ प्रारम्भ हो रही हैं। इस समय विद्यार्थी परीक्षाओं की तैयारियों में व्यस्त हैं, लेकिन ध्वनि-विस्तारक यन्त्रों के बजने के कारण उनके अध्ययन में आधा उत्पन्न हो रही है। अत: आपसे प्रार्थना है कि छात्रों के हितों को ध्यान में रखते हुए ध्वनि विस्तारक यन्त्रों के प्रयोग पर रोग लगाने की कार्यवाही करें, जिससे छात्र अपना अध्ययन अच्छी प्रकार से कर सकें।

दिनांक 2 मार्च, 20..... भवदीय

मनीष गौतम

अथवा

अपने "ता जी को पत्र लिखिए, जिसमें वार्ष्णिक परीक्षा की तैयारी की जानकारी दी गई है।

उत्तर—पूज्नीय "ताजी,

सादर चरण स्पर्श !

मैं यहाँ सकुशल हूँ। आशा करता हूँ कि आप सब लोक सकुशल होंगे। आपके निर्देशों का मैं पूरी तरह पालन कर रहा हूँ। मेरा अध्ययन नियम से चल रहा है। मेरी वार्षिक परीक्षा 01-07-2013 स्र प्रारम्भ हो रही है। मैं प्राय: 8 - 9 घण्टे प्रतिदिन अध्ययन कर रहा हूँ मैंने सभी विषयों की तैयारी कर ली है तथा अभी पुनरावृत्ति अध्ययन कर रहा हूँ। परीक्षा समाप्त होते ही मिलूँगा। शेष्ज्ञ कुशल है।

अनुज को प्यार, माता जी को सादर प्रणाम

पता—श्री अमित अवस्थी आपका आज्ञाकारी पुत्र

8/शंकर नगर रीवाँ (म. प्र.) अनुराग

प्रश्न 25. निम्नलिखित अवतरण को ध्यान से पढ़कर नीचे लिखें प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

उत्तर—संस्कार ही शिक्षा है। शिक्षा इंसान को इंसान बनाती है। आज के भौतिक यगु में शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य सुख पाना रह गया है। अंग्रेजों ने इस देश में अपना शासन व्यवस्थिति रूप से चलाने के लिए ऐसी शिक्षा को उपयुक्त समझा, किन्तु यह विचारधारा हमारी मान्यता के विरुद्ध है। आज की शिक्षा प्रणाली एकांगी है।, उसमें व्यावहारिकता का अभव है, श्रम के प्रति निष्ठा नहीं है। प्राचीन शिक्षा प्रणाली में आध्यात्मिक एवं व्यावहारिक जीवन की प्रधानता थी। यह शिक्षा केवल नौकरी के लिए नहीं-जीवन के सही दिशा प्रदान के लिए है।

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

उत्तर—शीर्षक—आज की शिक्षा प्रणाली।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली कैसी है ?

उत्तर—वर्तमान शिक्षा प्रणाली में व्यवहारिकता का अभव है, आज के भौतिकवादी युग में शिक्षा को केवल भौतिक सुख का आधार माना रहा है। अर्थात् केवल नौकरी पाने के लिए शिक्षा लिया जाता है। अपने व्यवहार में बदलाव लाने का प्रयास नहीं करते।

प्रश्न 2. गद्यांश का सारांश—

आज की शिक्षा भौथ्तकवादी, एकांकी एवं अव्यवहारिक है। हमें इन दोषों को दूर करना चाहिये, अन्यथा हमारा सामाजिक जीवन नष्ट हो जायेगा।

प्रश्न 16. निम्नलिखित विषयों में किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए—

1. समाचा परत्र, 2. जनसंख्या वृद्धि की समस्रा व समाधान, 3. मोबाइल क्रांति, 4. दूरदर्शन और उसका महत्व।

1. समाचार पत्रों का महत्व

रूपरेखा—(1) प्रस्तावना, (2) समाचार पत्रों का महत्त्व, (3) उपयोगिता—(क) ज्ञानवृद्धि, (ख) मनोरंजन के साधन, (ग) व्यापार तथा व्यवसाय की उन्नति, (घ) प्रजातन्त्र के रक्षक, (ड़) रोजगार के साधन, (च) अन्य उपयोगिता, (4) उपसंहार।

आज के प्रगतिशील युग में समाचार-पत्रों का महत्त्व बहुत बढ़ गया है। हर मनुष्य सुबह की चाय का आनन्द समाचार-पत्र पढ़ने में लेता है, इसलिए आँख खुले ही लोग देश-विदेश के समा. चार जानने को समाचार-पत्र पढ़ने के लिए उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा करने लगते है। वैसे तो समाचार जानने के बहुत से साधन हैं, किन्तु समाचार-पत्र सबसे सस्ता, सुलभ और श्रेष्ठ साधन है। इसलिए समाचार-पत्रों का महत्व बहुत अधिक हो गया है।

समाचार-पत्र का आविष्कार विज्ञान की उन्नति के साथ हुआ। जब मुद्रणकला का आविष्कार हुआ तभी से समाचार-पत्रों का श्रीगणेश हुआ। सर्वप्रथम समाचार-पत्र सोलहवीं शताब्दी में इतनी के वेनिस नगर में प्रकाशित हुआ हैर धीरे-धीरे इसका प्रचार और समस्त यूरोप में होने लगा। भारत में अंग्रेजी सरकार ने अपनी बात को जनता तक पहुँचाने के लिए सन् 1940 के 'इण्डिया गजट' नाम से पहला समाचार-पत्र प्रकाशित किया। इसके बाद ईसाई पादरियों ने अपने धर्म का प्रचार करने के लिए 'समाचार दर्पण' नामक पत्र निकाला। तत्पश्चात् राजा राममोहन राय और ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने 'कौमुदी और प्रभात' नामक समाचार पत्रों को प्रकाशित किया जिनसे सामाजिक उत्थान और नवजागरण में काफी योगदान मिला। राष्ट्रीय आन्दोलन के समय समाचार-पत्रों की संख्या काफी बढ़ गई। उस

समय 'केसरी', 'प्रताप', 'सैनिक' आदि हिने के प्रमुख समाचार-पत्र थे। आज समाचार-पत्रों की बाढ़ सी आ गई है। और दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, आदि अनेक पत्रों का प्रकाशन होने लगा है। आज ऐसा कोई भी नगर नहीं है। जहाँ से दो-चार समाचार-पत्र न निकलते हों।

समाचार-पत्रों से अनेक लाभ हैं। इनका सबसे विशेष लाभ ज्ञान वृद्धि है। संसार में होने वाली प्रत्येक प्रकार की की घटनाओं को हम समाचार-पत्रों द्वाराप सरलता से जान लेते हैं। समाचार-पत्रों की टिप्पणियाँ तथा उनके सम्पादकीय लेख इस कार्य में हमारी अत्यन्त सहायता करते हैं। विशेषक अवसरों जैसे महापुरुषों के जन्म दिन पर लो लेख इनमें प्रकाशित होते हैं, वे मानव के ज्ञान को बढ़ाने वाले होते हैं।

समाचार-पत्र जनता का स्वस्थ मनोरंजन भी करते हैं। समाचार-पत्रों में प्रकाशित बहुत से लेख, कहानियाँ, कविताएँ, पहेलियाँ, रंग-बिरंगे चित्र, अटपटे समाचार और हास्य-व्यंग्य आदि मन को प्रसन्न कर देते हैं। दिन के काम से थके हुए बाबू लोग थोड़ा-सा अवकाश मिलते ही समाचार पत्रों द्वारा अपना मनोरंजन कर लेते हैं।

समाचार-पत्र व्यापार की उन्नति का एक सरल और व्यापक साधन है। आज अनेक ऐसे पत्र प्रकाशित होते हैं। जिनमें व्यापार सम्बन्धी सामग्री दी जाती है इससे व्यापारी वर्ग घर ही बैठे अपने सामाचार का प्रचार कर देते हैं। और उदभोक्ता घर बैठे अपने पसन्द की वस्तुएँ चुन लेते हैं। इस प्रकार लाखों रुपये का व्यापार इन समाचार पत्रों के विज्ञापनों द्वारा हो जाता है। अत: समाचार-पत्र व्यापारिक उन्नति का एक प्रमुख साधन है।

यद्य" प्रजातन्त्र में सरकार जनता द्वारा ही चुनी जाती हे, किन्तु जब सरकार में किसी दल का अत्यधिक बहुमत हो जाता है। तो वह दल तानाशाही का रूप धारण कर लेता है। ऐसे समय में समाचार-पत्र सरकार की कटु आलोचना कर उसे ठीक मार्ग पर लाने का प्रयत्न करते है। जनता भी अपनी आवाज को समाचार-पत्रों द्वारा सरकार तक पहुँचाती है। इस प्रकार समाचार-पत्रों के द्वारा अपनी आलोचना तथा जनता की अभिरुचि जानकर सरकार ठीक मार्ग पर आ जाती है और प्रजातन्त्रात्मक तरीके से कार्य करने लगती है। इसलिए समाचार-पत्र प्रजातन्त्र के रक्षक होते हैं।

अन्य उद्योंगों के समान समाचार-पत्र प्रकाश कभी एक स्वतन्त्र उद्योग है। इस उद्योग में देश के लाखों शिक्षित और अशिखक्षित लोग अपनी जीविका उपार्जन करते है। इसके अतिरिक्त समाचार-पत्र रोजगार दिलाने के भी प्रमुख साधन हैं। इनके द्वारा योग्य कमजारी ढूँढ़ने का कार्य बड़ा सुलभ हो जाता है और लोगों को रोजगार प्राप्त होने के स्थानों की सही जानकारी हो जाती है।

समाचार-पत्रों की उपयोगिता कहाँ तक कही जाए। समाचार-पत्र जीवन के हर क्षेत्र के लिए हमारे लिए उपयोगी है। सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, आर्थिक आदि सभी क्षेत्रों में उनका अत्यधिक महत्व है। समाचार-पत्र राष्ट्र निर्माण, राष्ट्रीय एकता, सामाजिक भावना आदि के विकास में अपनी विशेष्ज्ञ भूमिका अदा करते हैं।

उक्त विवरण से स्पष्ट है कि समाचार-पत्र हमारे लिए एक उपयोगी वस्तु है। इनका राष्ट्र की उन्नति और राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण स्थान है, किन्तु खेद है कि आज कुछ समाचार-पत्र राजीनतिक और स्वार्थ के दल-दल में फँसकर अपने कर्त्तव्रू मार्ग से भट गये है। यदि व निष्पक्ष और निस्वार्थ भावना से जनता के हित को अपना हित समझकर कार्य करेंगे तो इउसमें सन्देह नहीं कि हमारा देश शीघ्र ही अग्रणी देशों की पंक्ति में आ जायेगा। वास्तव में समाचार-पत्र समाज और

सरकार के बीच की कड़ी है। वे दोनों के लिए दर्पण का कार्य करते हैं। अत: उनका स्वतंत्र निर्भिक, स्वच्छ एवं निष्पक्ष होना अत्यंत आवश्यक है।

2. जनसंख्या वृद्धि की समस्या व समाधान

प्रस्तावना—हमारे देश में जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ रही है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद जनसंख्या दुगुनी से भी अधिक हो गयी है। मई, 2001 तक भारत की जनसंख्या बढ़ते-बढ़ते सौ करोड़ से भी अधिक हो गयी है।

जनसंख्या वृद्धि के कारण—हमारे देश में जनसंख्या वृद्धि के कई कारण है। पहला कारण है कि हमारे देश में अल्पायु विवाह की पम्परा है। जनसंख्या वृद्धि का दूसरा कारण है कि हमारे देश में जलवायु में भी कुछ ऐसी विशेषता है, जिससे प्रजनन शक्ति की अधिकता है। जनसंख्या वृद्धि के अन्य कारणों में निर्धनता, बेराजगारी, अशिक्षा, रुढ़िवादिता आदि हैं।

जनसंख्या वृद्धि के दुष्परिणाम—अपार जनसंख्या से हमारे देश के सामने सबसे बड़ी समस्या भोजन की उपस्थिति होगी। यह गीरब साधनहीन देश प्रत्येक मुँह के लिए भोजन कैसे जुटायेगा ? हमारे देश के लिए अतिशय जनसंख्या अभिशाप सिद्ध होगी। इससे अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो जायेंगी; जैसे—गरीबी में वृद्धि और महगाई में वृद्धि आदि । आज भी हम इन समस्याओं से जूझ रहे हैं और इनके समाधान के लिए आर्थिक विकास के प्रयासों में लगे हुए हैं। अत्याधिक गति से बढ़ती हुई जनसंख्या हमारे प्रयासों को विफल कर देगी।

परिवार नियोजन की आवश्यकता—अत: आवश्यकता इस बात की है कि जनसंख्या वृद्धि पर रोक लगायी जाय, जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित किया जाय। इसके लिए त्वरित एवं दीघकालीन दोनों प्रकार के उपायों को अपना जाए। त्वरित उपायों में निरोध कॉपर, टी, नसबन्दी, लूप, आपरेशन आदि प्रमुख हैं। इन्हें लोक"य बनाने की आवश्यकता है। दीर्घकालीन उपायों में शिक्षा, प्रसार, विवाह की न्यूनतम आयु में वृद्धि, बाल विवाह पर प्रतिबन्ध तथा आत्मसंयम के लिए लोगों को प्रेरित मुख्य है। परिवार नियोजन की देश को नितान्त आवश्यकता है। इसका अभिप्राय दम्पत्ति द्वारा अपने बच्चां की संख्या एक या दो तक सीमित रखना हे, जिससे इनका पालन-पोष्ज्ञण सुचारू रूप से किया जा सके। अधिक बच्चे पैदा करना दरिद्रता को बुलाना देना हे।

परिवार नियोजन की विधियाँ—दीर्घकालीन उपायों में स्त्री शिक्षा पर विशष्ज्ञ बल देने की आवश्यकता है। अशिक्षा के कारण ही लोगों में अन्ध विश्वास और रूढ़िवादीता की कुप्रवृत्तिस उत्पन्न होती है। और इस कुप्रवृत्ति के शिकार पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियाँ अधिक होती है। अशिक्षित स्त्रियाँ ही प्राय: ही अग्रणी देशों की पंक्ति में आ जायगी। वास्तव में समाचार-पत्र समाज और सरकार के बीच की कड़ी है। वे दोनों के लिए दर्पण का कार्य करते हैं। अत: उनका स्वतन्त्र निर्भिक, स्वच्छ एवं निषपक्ष होना अत्यन्त आवश्यक है।

3. मोबाइल क्रांति

प्रस्तावना—आधुनिक जीवन में बिना मोबाइल क सभ्य जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती हे। आज की सभ्यता का प्रथम चरण इस बेतार के यन्त्र से ही प्रारम्भ होता है।

आविष्कार—पहला व्यापारिक सैल्यूलर टेलीफोन का परीक्ष्ज्ञण 1970 में शिकागां मं इलीनौइस बैल ने दिया था। इसमें उसे सफलता मिली और 1980 के मध्य में पूरे राष्ट्र में इसकी शुरुआज हो गई। शुरु-शुरु में मोबाइल फोन बड़ी आकार में मिलते थे, लेकिन अब तो ये छोटी-से-छोटी आकार

में उपलब्ध हैं। इसके संचालन के लिए दूर-दूर पर बड़े-बड़े टावर लगाये जाते हैं।

मोबाइल के लाभ—इसने संसार की दूरी को बहुत कम कर दिया है। आज बात-चीत मुठ्ठी मं आ गई है। घर-बाहर सभी समय यह इच्छित व्यक्ति से बात कराने में समर्थ है। चाहे कोई स्वजन देश में हो या विदेश में, हर समय उससे मोबाइल के द्वारा सम्पर्क साधा जा सकता है। इसमें अनेक क्रियाएँ सम्पन्न हो जाती है। यह सूचना को टेप कर लेता है, सन्देश एस.एम.एम के द्वारा भेज सकता है, फोन भेजने वाले का नम्बर बता सकता है। वह इस समय कहाँ से बोल रहा है, यह जानकारी भी दे सकता है। फोटो खींच सकता है। आदि इतनी सारी क्रियाओं के सम्पादन के बदले हमें छोटी-सी कीकत देनी पड़ती है।

व्यापार में क्रान्ति—इनके आने से व्यापारियों को बहुत बड़ा लाभ हुआ है। उनका व्यापार आज जितनी तरक्की कर रहा है, वह मोबाइल फोन के कारण ही है। मोबाइल फोन से ही वस्तुओं का ऑर्ड दे दिया जाता है और मूल्य आदि की जानकारी भी इसके माध्यम से ली जा सकती है। व्यापार में तो मोबाइल फोन ने क्रान्ति ही ला दी है। शेयर बाजार की तो यह मानो जिन्दगी ही है। पल-पल में देश-विदेश की खबरें इसके माध्यम से शेयर बाजार के कर्मचारी लेते रहते हैं। इसके अलावा डॉक्टर, इंजीनियर, नैवीगेटर, पाइलट, वैज्ञानिक आदि इसके माध्यम से समाज और अपने स्टाफ से सम्पर्क बना रखते हैं। आज तो किसान, विद्यार्थी, अध्यापक, साधारण श्रमिक सभी इसके उपयोग से लाभान्वित हो रहे हैं।

हानि—कभी-कभी तो मोबाइल फोन का धारक आराम भी नहीं कर पाता। वाहन चलाते समय बात करने से दुर्घटनाएँ बहुत होती हैं। कभी-कभी गलत और अश्लील संदेश (मैसेज) प्रसारित होते हैं। कभी-कभी अश्लील चित्र भी इस पर भेज दिए जाते हैं। मोबाइल धारक धमी आदि दिये जाने की भी शियकत करते रहते हैं। कभी-कभी यह हमारे काम में बाधा उत्पन्न करने वाला बन जाता है।

4. दूरदर्शन (दिसम्बर, 2012 के उत्तर क्रमांक 16 देखो)

छत्तीसगढ़ राज्य आपेन स्कूल परीक्षा जनवरी 2011
कक्षा 12वीं
विषय-हिन्दी
समय 3 घण्टे पूर्णांक 100

निर्देश—(i) सभी प्रश्न अनिवार्य हं। कुल 16 प्रश्न हैं।

(ii) प्रश्न क्रमांक 1 (अ) 1 (ब) 1 (स) में एक-एक अंग है। प्रश्न क्रमांक 2 से 9 तक मं 4 अंक हैं। प्रश्न क्रमांक 10 स 15 तक 6 अंक व प्रश्न क्रमांश 16 मं 10 अंक निर्धारित हं।

1. (अ) प्रश्न क्रमांक 1 से 10 तक उचित उत्तर चुनकर लिखिए—
(i) सम उपसर्ग युक्त शब्द नहीं है—
(i) संयाग (ii) संकल्प
(iii) संग्राम (iv) समय
उत्तर—(iv) समय।
(ii) समावट में कौन-सा प्रत्यय ह—
(i) बट (ii) आवट

(iii) जावट (iv) आहट

उत्तर—आवट।

(iii) इंटरनेट होता है—

(i) एक नेटवर्क का हजार नेटवर्क **(ii) हजार नेटवर्क का एक नेटवर्क**

(iii) सिर्फ संदेश भजने का माध्यम **(iv) सौ नेटवर्कों का का दो नटवर्क**

उत्तर—(i) एक नेटवर्क का हजार नेटवर्क।

(iv) वृद्धों से तरूणों ने कहा—

(i) आप देवता बनकर आराम से रहे **(ii) आप लाड़ी टेककर सड़क पर चलें**

(iii) आप वृद्ध हैं काम न करें **(iv) आप अधिक न खाया करें।**

उत्तर—आप देवता बनकर आराम से रहें।

(v) शायद ही अब मँहगाई कम हो। कौन-सा वाक्य है—

(i) संकेतवाचक **(ii) संदेहवाचक**

(iii) निषेधावचक **(iv) विधिवाचक**

उत्तर—संदेवाचक

(vi) कवि अपनी बुद्धि को चंचल करता है, क्योंकि बुद्धि—

(i) माया-मोह के चक्कर में पड़ी रहती हे।

(ii) ईश्वर के रूपाकार की कल्पना नहीं कर पाती

(iii) ईश्वर भक्ति में लीन नहीं हो पाती।

(iv) ईश्वर को देख नहीं पाती।

उत्तर—माया-मोह के चक्कर में पड़ी रहती है।

(vi) पेड़ का ढूँक प्रतीक है—

(i) जड़ता का **(ii) निर्जीवता का**

(iii) स्थिरता का **(iv) अडिगता का।**

उत्तर—जड़ता का।

(vii) देवकीनंनदन खत्री किस युग के साहित्यकार थे—

(i) द्विवेदी युग **(ii) भारतेन्दु युग**

(iii) रीतिकालीन **(vi) प्रयोगवादी।**

उत्तर—(i) भारतन्दु युग।

(viii) रीतिकाल क काव्यमं प्रधानता रही—

(i) ईश्वर भक्ति का स्वर **(ii) श्रृंगार रस**

(iii) ओजपूर्ण स्वर **(iv) क्रांतिधारा विचाराधारा।**

उत्तर—(ii) श्रृंगार रस।

(x) कामायनी के रचयिता का नाम—

(i) तुलसी दास **(ii) कबीर**

(iii) सूर्यकांत्र त्रिपाठी निराला **(iv) जयशंकर प्रसाद**

उत्तर—(iv) जयंशकर प्रसाद।

(ब) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(i) कूलन मं कलिन में कछारन में कुंजन में ..... शब्द गुण हैं।

(ii) सूजर डूब गया में ..... शब्द शक्ति हे।

(iii) वाक्य के अनिवार्य अंग ..... और .....है।

(iv) एक था पड़ और और एक था ठूँठ ..... विद्या है।

(v) हर आदमी एक ..... है।

(vi) .....को प्लास्टिक सर्जरी का जनक माना गया है।

उत्तर—(i) माधुर्य (ii) व्यंजनाशब्द शक्ति (iii) कर्त्ता, क्रिया

(iv) निबन्ध (v) कठपुतली (vi) सुश्रुत।

(स) एक वाक्य में उत्तर—

1. दो पीढ़ियों की कलागत मूल्यों पर बहस चल रही थी। किसने जबाव दिया।

3. पारितंत्रीय समस्या का सम्बन्ध किससे है ?

जंगलों के कटने से

(iii) अपना उल्लू सीधा करना का क्या तात्पर्य है ?

अपना स्वार्थ सिद्ध करना।

(vi) फोर्ट विलियम कालेज की स्थापना कब और कहाँ हुई ?

उत्तर—सन् 1800 में कलकत्ता में।

(v) भारतीय खागोल का उद्‌भव किससे माना जाता है ?

उत्तर—स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह किस बाद की विशेषता है ?

नोट—प्रश्न क्रमांक 2 से 9 तक प्रत्यक पर 4 अंक निर्धारित है। कम से कम 50 शब्द, अधिकतम 75 शब्दों में उत्तर दीजिए।

प्रश्न 2. गीतिका छंद को उदाहरण सहित समझाइये।

उत्तर—जुलाई 2011 के उत्तर 3 देखें।

अथवा

संदेह अलंकार किसे कहते हैं ? उदाहरण सहित समझाइये ?

उत्तर—सन्देह अलंकार—जहाँ समानता क कारण एक वस्तु में अनेक अन्य वस्तु हाने का सम्भावना दिखई पड़े और यह निश्चय न हा पाये कि यह वही वस्तु हं, उसे सन्देह अलंकार कहते हैं।

उदाहरण—सारी बीच नारी हे, कि नारी बीच सारी हे।

सारी ही कि नारी हे, कि नारी ही सारी है।।

प्रश्न 3. समाचार पत्रों का हमारे जीवन में क्या महत्व है ?

उत्तर—समाचार-पत्रों का हमारे जीवन में अत्यधिक महत्व है, जिसके माध्यम से व्यापार जगत, कृषि, खेल, शिक्षा, मौसम, अपराध की जानकारी रोज हमें समाचार पत्रिका का अध्ययन करने से मिलती है।

अथवा

कम्प्यूटर की पाँच विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—कम्प्यूटर की विशेषताएँ—

(1) कम्प्यूटर अपनी तीव्र गति, शुद्धता, यथार्थता, अपार सूचनाओं तथा आँकड़ां के स्मृति भंडार कर सकती है।

(2) राज दिन घण्टां काम करने के बाद भी नहीं थकता।

(3) यह मानव के समान प्रत्यक कार्य करने में सक्षम हैं।

(4) इसकी प्रमुख विशेषता है कि यह अपार आँकड़े याद रख सकता है।

(5) यह मानव द्वारा दिये गए निर्देशों का पालन करता है।

प्रश्न 4. 'वह तोड़ती पत्थर' कविता में वर्णित मजदूरनी की दशा का वर्णन कीजिए।

उत्तर—महिला को देखकर उसकी दशा का अनुमान लगाया जा सकता है कि वह कितनी मजबूर, बेबस है जो इतनी गर्मी में काम कर रही है। उसे अत्याचारों व शाषकों का बोध होने पर भी वह लगनशीलता के साथ पत्थर दिन व्यवस्था को अपने हथोड़े से छिन्न-भिन्न कर सकती है।

अथवा

'दो कलाकार' कहानी का प्रमुख उद्देश्य क्या है ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—दिसम्बर 2012 के उत्तर क्रमांक 5 देखें।

प्रश्न 5. लेखक ने डॉ. रघुबवीर को कर्मयोगी क्यों कहा ?

उत्तर—दिसम्बर 2012 के उत्तर क्रमांक 4 देखें।

अथवा

वाक्य को परिभाषित करते हुए मिश्र वाक्य व संयुक्त वाक्य में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

वाक्य की परिभाषा—"एक पूर्ण विचार व्यक्त करने वाला शब्द-समूह वाक्य कहलाता है।"

क्र.	मिश्र वावय	संयुक्त वाक्य
1.	मिश्रवाक्य में एक ही मुख्य उपवाक्य होता है।	इसमें एक से अधिक मुख्य उपवाक्य होते हैं।
2.	मिश्रवाक्य में अन्य वाक्य मुख्य उपवाक्य के अधीन होते हैं	संयुक्त वाक्य एक दूसरे के समाधिकरण होते हैं।
3.	मिश्रवाक्य में मुख्य वाक्य के साथ मिलकर ही उनका अर्थ स्पष्ट होता है।	संयुक्तवाक्य स्वतंत्र रूप से भाव व्यकत कर सकने में समर्थ रहते हैं।

प्रश्न 6. "टूटे सुजन मनाइये, जो टूटे सौ बार" का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—रहीम दास जी कहते हैं। कि यदि सज्जन व्यक्ति सह भी जाए तो उन्हें मना लेना चाहिए। यदि वे सौ बार भी रूठ जाते हैं तो उन्हें सौ बार ही मनलाना चाहिए, क्योंकि वे जीवन के लिए अत्यधिक उपयोगी है।

अथवा

'मुझे कदम-कदम' पर कवित के आधार पर "मुझे श्रम होता है। प्रत्येक पत्थर में हीरा चमकता हीरा है।" का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—कवि को सड़क पर पड़ा हर पत्थर हीरा नजर इसलिए आता है, क्योंकि सड़क पर आता-जाता साधारण सा दिखने वाला व्यक्ति कहीं महत्वपूर्ण और विशेष तो नहीं। ठीक उसी प्रकार जीवन जगत् में छोटा-सा महसूस होने वाला महत्वपूर्ण अनुभव कभी-कभी समय आने पर विशिष्ट हो जाता है। और किसी महत्वपूर्ण घटना को जन्म दे देता है। चौराहे पर ही व्यक्तियों के दु:ख-दर्द

की कहानियाँ सुनने को मिलती हैं। यहीं पर समाज के लोग तरह-तरह की शिकायतें करते हैं। हम भी कवि के नि विचारों से सहमत हैं।

प्रश्न 7. पश्चिमी क्षितिज में अस्त होते हुए सूर्य का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर—अरब सागर चारों ओर फैला हुआ है जिसके पानी में सूर्य के अस्त होते हुए दृश्य बड़ी ही सुहावनी, मनोहारी दिख रहा है, ऐसा लगा रहा है मानो पानी में स्वर्ण किरणों सोने के समान दिखाई दे रही हैं और धीरे-धीरे लालिमा होते हुए सूर्य जैसे पानी में रक्त घुल गया है फिर वह क्षण-क्षण परिवर्तित होने के कारण रक्त बैंगनी रंग का होकर काला पड़ जाता है वैसे ही उनकी क्षण-प्रतिक्षण परिवर्तन से उसे कोई भी नाम देना उचित नहीं है।

अथवा

लघुकथा की प्रमुख विशेषताएँ उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर—जुलाई 2011 के उत्तर क्रमांक 7 देखें।

प्रश्न 8. निम्न में से किन्हीं दो मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्य वाक्य में प्रयोग कीजिए।

उत्तर—अँगूठा दिखाना—धोखा देना।

प्रयोग—काम निकल जाने पर उसने राम को अंगुठा दिखा दिया।

(ब) श्री गणे करना - आरमी करना।

प्रयोग—कार्यक्रम का श्री गणे छः बजे संख्या से होगा।

(स) जी चुराना - काम से भागना।

प्रयोग—हीरा सदैव पढ़ाई से जी चुराया करता है।

(उ) गुदड़ी का लाल - गरीब घर में गुणवान का पैदा होना।

प्रयोग—श्री लाल बहादुर शास्त्री गुदड़ी के लाल थे।

प्रश्न 9. भक्तिकाल को हिन्दी साहित्य का स्वर्णयुक्त क्यों कहते हैं ? सविस्तार लिखिए।

उत्तर—भक्तिकाल को हिन्दी साहित्य का स्वर्णयुग कहा जाता है। इसके अनेक कारण हैं—

(1) इस काल में महान आध्यात्मिक संतों और भक्तों कबीर, जायसी, सूर, तुलसी, मीरा आदि ने काव्य रचना की।

(2) इन कवियों ने आध्यात्मिक जागरण का ठोस प्रयास अपने काव्य के माध्यम से किया। यह काव्य निराश जनमानस के लिए संजवनी बूटी सिद्ध हुई।

(3) इस काल में भावपक्ष और कलापक्ष का सुन्दर समन्व्य हुआ।

(4) इस काल में रामचरितमानवस, सूरसागर, पदमावत जैसे उत्ह्मष्ण काव्य ग्रन्थों की रचना हुई जो हिन्दी कविता के उच्च स्तर को प्रमाणित करते हैं। इन कारणों से भक्तिकाल को हिन्दी साहित्य का स्वर्णकाल कहा जाता है।

अथवा

आदिकाल की चार विशेषताएँ एवं चार कवियों के नाम लिखिए।

उत्तर—आदिकाल की विशेषताए—(1) वीर तथा शृंगार रस में वर्णन किया गया है।

(2) युद्धों का सजीव वर्णन किया गया है।

(3) रासो काव्य की प्रधानता है।

(4) इतिहास की अपेक्षा कल्पना की प्रधानता है।

(5) डिंगल भाषा की प्रधानता मिलती है।

प्रमुख कवि एवं रचनाएँ–

पृथ्वीराज रासो– (चंदबरदायी)

खुमान रासो– (दलपति विजय)

परमाल रासो– (जगनिक)

पहेलियाँ (अमीर खुसरो)

नोट–प्रश्न क्रमांक 10 से 15 तक प्रत्येक पर छः निर्धारित है। प्रश्नों के उत्तर म से कम 100 शब्दों में से कीजिए।

प्रश्न 10. गजानन माधव मुक्तिबोध अथवा रामधारी सिंह दिनकर साहित्यिक जीवन का परिचय निम्न बिन्दुओं में दीजिए।

(1) रचनाएँ (2) भावपक्ष (3) कलापक्ष्ज्ञ

उत्तर–दिसम्बर 2012 के उत्तर क्रमांक 10 देखें।

प्रश्न 11. निम्नलिखित वाक्यों को युद्ध करके लिखिए (कोई-4)

(1) मैंने खाना खाना है।

शुद्ध वाक्य–मुझे खाना खाना है।

(2) श्याम को मृत्यु दण्ड की सजा मिली।

शुद्ध वाक्य–श्याम को मृत्यु दण्ड मिली।

(3) वह एक आँख से काना है ?

शुद्ध वाक्य–वह काना है।

(4) श्री कृष्ण के अनेकों नाम है।

शुद्ध वाक्य–श्री कृष्ण के अनेकों नाम हैं।

(5) आपका हस्ताक्षर सुन्दर है।

शुद्ध वाक्य–आपके हस्ताक्षर सुन्दर है।

(6) वे सज्जन पुरुष कौन है ?

शुद्ध वाक्य–सज्जन पुरुष कौन है ?

प्रश्न 12. निम्न काव्यांशों में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

(अ) पथि को मलिन करता आना,

पद-चिन्ह न दे जाता जाना,
सुधि मेरे आगम की जग में
सुख की सिहरण हो अंत खिली
विस्तृत नभ का कोई कोना।
मेरा न कभी अपना होना
परिचय इतना इतिहास यही
उमड़ी कल की मिट आज चली

सन्दर्भ–प्रस्तुत पंक्तियों हमारी पाठ्यपुस्तक के 'में नीर भरी दुःख की बदली' पाठ से लिया गया है। जिसकी कवियत्री महादेवी वर्मा जी है।

प्रसंग—बदली बरसने के बाद के प्रभाव की कल्पना करती है।

व्याख्या—बदली कहती है कि मेरे आने पर न तो मार्ग में गन्दती होती होती है न ही मैं पद. चिन्ह छोड़ती हूँ। मैं सिर्फ यादें छोड़ जाती हूँ क्यों कि बिदली का मार्ग धरती नहीं आकाश है और मेरी यादें हरियाली, खेतों में खलिहानों, बाग-बगीचों में दिखाई देती हैं।

बदली कह रही है कि मैं विस्तृत नभ में विचरण करते रहती है मेरा कोई स्थिर ठिकाना नहीं है। मैं कभी यहाँ तो कभी वहाँ बरसते हुए घुमड़ते हुए एक कोने से दूसरे कोने में घूमते रहती हूँ। मेरे भाग में स्थिर रहना नहीं है। मेरा परिचय इतना ही है कि कल में उमड़कर बरसारकर मिट गई और चली गई मेरी यादें ही शेष रह गयी हैं।

विशेष—दार्शनिकिता, रहस्यवाद। प्रकृति का मानवीकरण।

(ख) मुखिया मुख सो चाहिए, खान-पान को एक।
पालें पोसें सकल अंग, तुलसी सहित विवेक।
तुलसी मीठे बचन ते, सुख उपजत चहुँओर।
बसीकरण इस मंत्र है, तजि दे बचन कठोर।।

सन्दर्भ—प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक के तुलसी के दोहे' पाठ से लिया गया है। इनके रचियता कवि तुलसी दास जी हैं।

प्रसंग—कवित कहते हैं कि घर के मुखीया को मुख के समान विवेकी होनी चाहिए। और मीठे बचर बोलने को कहते हैं।

व्याख्या—कवि कहते हैं कि घर के मुखिया जो घर के सदस्यों का पालन-पोष्ज्ञण करता है और वह स्वविवेक से घर के कार्यों को निपटाता है जिस प्रकार मुख से हम भोजन करते हैं और शरीर के सभी अंगों तक वह भोजन पहुँचकर ताकत व बुद्धि प्रदान करता है।

तुलसीदास जी कहते हैं कि मधुर वचन बोलने से चारों तरफ सुख उत्पन्न होता है। अर्थात् मीठी वाणी बोलने से बोलने वाला तथा सुनने वाला दोनों खुश रहते हैं, किसी को भी अपने वश में करने का एक मात्र. तरीका यह है कि कठोर वचनों का त्याग कर दें अर्थात् मधुरवचन बोलकर हम किसी को भी अपने वश में कर सकते हैं।

विशेष—वाणी की मधुरता का प्रतिफल हमें दूसरों पर आरो"त करता है।

प्रश्न 13. निम्न पद्यांशों में से किसी एक की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए—

(अ) क्रोध जब मनोविकारों से फुर्तीला है, इसी से अवसर पड़ने पर यह और मनोविकारों का भी साथ देकर उसकी दृष्टि का साधक होता है। कभी यह दया के साथ कूदता है। कभी घृणा के। एक क्रूर कुमार्गी किसी अनाथ अबला पर अत्याचार कर रहा है। हमारे ह्रदय से इस अनाध अबला के प्रति दया उमड़ रही है। पर दया की अपनी शक्ति तो त्याग और कोमल व्यवहार तक होती है।

सन्दर्भ—प्रस्तुत गद्यांश हमारे पाठ्य-पुस्तक के लेखक रामचन्द्र शुक्ल हैं। यह उनके 'क्रोध' नामक निबन्ध से लिया गया है।

प्रसंग—क्रोध सभी मनोविकारों में प्रबल और फुर्तिला होता है। साथ ही वह अन्य मनोवगों की तुष्टि में भी सहायक होता है।

व्याख्या—लेखक कहते हैं कि मनुष्यों में मन के अन्य विकारों से क्रोध सबस पहले व तुरन्त पेदा हाता है, क्योंकि क्रोध प्रबलता के साथ उत्पन्न होता, वह फुर्तीला है। क्रोध मनुष्य को परिवर्तित

कर दता है। घृणा, प्रेम जैसे मनोविकारों के साथ उनके तुष्टि में महत्वपूर्ण भूमिका अपनाते हुए कभी दया के साथ्ज्ञ तो कभी प्रेम के साथ या घृणा के साथ क्रोध उत्पन्न होता है। कभी किसी अबला पर उत्याचार होते देखकर उस अबला के प्रति दया उमड़ आती हैं और उस कुमार्ग्री पर क्राधे आ जाता है किन्तु दया शक्ति से हम कामल व्यवहार करके हम उन क्रोध को भुला देते हैं।

(ब) मैं आज इस दृष्टि से अपना हिस्स अपनी जीने का अधिकार चाहती हूँ—इसमें अस्वाभ.ाविक क्या है ? क्या जीवन एक सहज-सामान्रू प्राणी का सहज अधिकार नहीं ? यदि 'योग्यतम' को ही यहाँ जीवन रक्षा का अधिकार है, तो मैने निश्चिय कर लिया है कि मैं अपने आपको 'योग्यतम' सिद्ध करुँगी।

सन्दर्भ—प्रस्तुत गद्य पंक्तियाँ श्री पंकज कुमार द्वारा लिखित 'अनुराधा' नामक कहानी से ली गई है।

प्रसंग—अनुराधा वह अपना और अपने होने वाले बच्चे का इलाज कराना चाहती है, वह जीवित रहना चाहती है।

व्याख्या—अनुराधा मनन करती है कि इस प्रवाध्मान संसार में उसका भी हिस्सा है। उसे भी जीवित रहने का अधिकार है। और बिल्कुल स्वाभाविक भी हे। क्योंकि जीवित रहने का अधिकार तो सामान्रू से सामान्य व्यक्ति को भी है। यदि योग्यतम को ही जीवित रहने का अधिकार है तो वह भी योग्यतम बनकर दिखायेगी। वह जीने के लिए योग्यतम बनने के लिए दृढ़ निश्चय करती है।

प्रश्न 14. अपने मित्र को पत्र लिखते हुए अच्दे पत्र के गुणों का वर्णन कीजिए।

रायपुर
13/2/2013

प्रिय मित्र

नमस्कार !

तुम्हारा पत्र आज ही प्राप्त हुआ। पढ़कर खुशी हुई। पत्र लिखने के लिए निम्न गुणों को ध्यान में रखकर पत्र लिखना चाहिए। अच्छे पत्र के गुण-पत्र पाने वाले व्यक्ति यदि, पत्र पढ़कर समझ लें, जो पत्र लिखने वाला चाहता है। तो उसे अच्छा पत्र माना जायेगा। पत्र में कम शब्द लिखकर अधिक बात कहने की क्षमता होनी चाहिए। एक अच्छे पत्र में निम्नलिखित गुण होने चाहिए—(1) संक्षिप्पता, (2) सरलता, (3) सहजता,(4) प्रभावशीलता आदि।

तुम्हारा मित्र
देवेश

अथवा

छत्तीसगढ़ राज्य ओपन स्कूल के सचिव को अपनी अंक सूची की द्वीतिये प्रति प्राप्ति हेतु एक आवदेन पत्र लिखिए।

उत्तर—दिसम्बर 2012 के अनुसार क्रमांक 45 देखें।

प्रश्न 15. टिप्प्णी लिखिए—(कोई दो)

(अ) चरीक संहिता (ब) प्राचीन बीजगणित

(स) चिकित्सा विज्ञान (द) रसायन विज्ञान।

(अ) चरक संहिता

उत्तर—काय चिकित्सा का प्रथम ग्रन्थ महर्ष चरक ने लिखा था। चरक संहिता को औषधीय शाखा में 'आयुर्वेद' पद्धति का आधार माना जाता है।

शरीर में हृदय मुख्य अवयव है सम्भवत: चरक इस बात को जानते थे। चरक संहिता में शरीर विज्ञान, निदान शास्त्र और भ्रूण विज्ञान के विषय में जानकारी मिलती हे।

चरक को आनुवंशिकी के मूल सिद्धान्तों का ज्ञान था उन्हें उन कारणों का पता था जिससे बच्चे का लिंग निश्चित होता है।

(ब) प्राचीन बीजगणित—

उत्तर—बीजगणित के क्षेत्र में सबसे बड़ी उपलब्धि है अनिवार्य वर्ग समीकरण का हल प्रस्तुत करना। ब्रह्मपुत्र ने दो प्रमेयकाओं की खेज की थी। अनिवार्य वर्ग समीकरण क लिए भारतीय नाम वर्ग प्रकृति है।

चिकित्सा विज्ञान

उत्तरर—भारत में चिकित्सा विज्ञज्ञन की सुदीर्घ परम्परा है। चिकित्सा शास्त्र को वेद के तुल्य सम्मान दिया गया है। यही कारण है कि भारतीय चिकित्सा पद्धति को आयुर्वेद की संज्ञा से अभिनिहित् किया जाता है।

भारतीय चिकित्सा पद्धति के विषय में सर्वप्रथम लिखित ज्ञान 'अथर्व वेद' में मिलता है। अथर्व वेद में विविध रोगों के उपचारार्थ प्रयोग किए जाने सम्बन्धी भैषज्य सूत्र संकलित हैं। इन सूत्रों में विभिन्न रोगों के नाम तथा उनके निराकरण के लिए विभिन्न प्रकार की औषधियों के नाम भी दिए गए हैं। जल चिकित्सा, सूर्य किरण चिकित्सा और मानसिक चिकित्सा के विषयों पर इसमें विस्तृतम विवरण मिलता है।

अथर्व वेद के बाद ईसा से लगभग 600 वर्ष पूर्व काय चिकित्सा पर 'चरकसंहिता' और शल्य चिकित्सा पर 'सुश्रुत संहिता' मिलती है। ये चिकित्सा शास्त्र ? के प्रामाणिक और विश्व विख्यात ग्रंथ हैं।

रसायन विज्ञान

उत्तर—भारत में रसायन विज्ञान की बड़ी पुरानी परम्परा है। प्राचीन तथा मध्य काल में संस्कृत भाषा में लिखित रसायन के 44 ग्रन्थ उपलब्ध है। नागार्जुन (दउसवीं शताब्दी) ने रसायन विज्ञान पर 'रस रत्नाकर' नाम का ग्रंथ लिखा है। इस ग्रंथ में पारे के यौगिक बनाने का प्रयोग दिए गये हैं। चाँदी, सोना, टिन और ताँबे के अयस्क भूगर्म से निकालने और उन्हें शुद्ध करने की विधियों का विवरण भी दिया गया है। नागार्जुन पारे से संजीवनी बनाने के लिए पशुओं और वनस्पतियों के तत्वों तथा अम्ल और खनिजों का उपयोग करते थे। वनस्पति निर्मित तेजाबों में वे हीरे, धाते, और मोती गला लेते थे। नागार्जुन ने रसायन विज्ञान में काम आने वाले उपकरणों का विवरण भी दिया है। इस ग्रंथ में आसवन, द्रवण, उर्ध्व पातन और भूनने का भी वर्णन है।

नागार्जुन के अतिरिक्त भारत के महान रसायन शास्त्री वृंद का नाम भी उल्लेखनीय है इन्होंने औषधी रसायन पर सिद्ध-योग नामक ग्रंथ की रचना की है। इसमें विभिन्न रोगों के उपचार के लिए धातुओं के मिश्रण का विवरण दिया गया है।

प्रश्न 16. किसी एक पर 250 शब्दों में एक सारगर्भित निबन्ध लिखिए—

(अ) भारतीय समाज और नारी

(ब) नक्सली समस्या

(स) प्रदूषण-कारण-निदान (मई, 2012 के उ. क्र. 16 देखें)।

(द) साहित्य और समाज (दिसम्बर, 2012 के उ. क्र 16 देखें)।

1. भारतीय समाज और नारी

रूपरेखा—(1) प्रस्तावना, (2) नारी की गिरी हुई दशा, (3) समाज सुधारकों द्वारा किये गए प्रयास, (4) स्वतन्त्र भारत में नारी, (5) उपसंहार।

(1) प्रस्तावना—प्राचीन काल में स्त्रियों की जो दशा थी, समय के परिवर्तन से वह क्रमशः गिरती गयी। पुत्र के उत्पन्न होने पर जहाँ प्रसन्नता की लहर दौड़ जाती थी, वहाँ पुत्री के उत्पन्न होने पर सारा घर शोक के सागर में डूब जाता है। आश्चर्य तो यह है कि पुत्री को जन्म देने वाली माता को अपनी जाति ही की वृद्धि से अत्यधिक घृणा होने लगी। इसका कारण यही मालूम पड़ता है कि पुत्री के विवाह पर बहुत अधिक धन दहेज के रूप में देना।

(2) नारी की गिरी हुई दशा—पत्नी के रूप में नारी की दशा अच्छी नहीं है। घर में वह अपने पति के हाथ की कठपुतली बनी रहती है, पति उसकी प्रत्येक गतिविधि पर पूर्ण अंकुश रखता है। पत्नी का एकमात्र कर्तव्य यही माना जाता है कि वह अपने पति को प्रत्येक सम्भव उपाय से प्रसन्न रखे। पति-सेवा उसके जीवन का मुख्य ध्येय माना जाता है। इसी सेवा-भाव के कारण बाहर के कार्यों से उसका बहिष्कार होने लगा। और वह धीरे-धीरे अबला और आश्रिता बना दी गयी। पुरुष के स्वार्थ ने उसे दासी और सम्भोग की वस्तु बना दिया। उसकी रक्षा करने में असमर्थ पुरुष ने उसे चाहरदीवारी में बन्दी बना दिया। लज्जा स्त्रियों का आभूषण है। इस आदर्श मन्त्र की साधना जब ईंट-चूने की दीवार से की जाने लगी, तब वह लज्जा नारी के लिये दुःख का कारण बन गयी। नारी को बन्धनबद्ध रखने के लिये जाने लगी, तब वह लज्जा नारी के लिये दुःख का कारण बन गयी। नारी को बन्धनबद्ध रखने के लिए उस बन्ध को सम्मान का चिह्न दिया गया। पुरुषों ने स्त्रियों की हीतना का राग इतना अलापा कि स्त्रियाँ भी अपने को दी-हीन समझने लगीं। वे अपने-आपको पैर की जूती तक कहने में सांकेच छोड़ बैठीं।

(3) समाज सुधारकों द्वारा किये गये प्रयास—राजा राममोहन राय, स्ज्ञवामी दयानन्द, महात्मा गाँधी, रवीन्दद्रनाथ टैगोर आदि के प्रयत्नों से भारत में नारी के पद की पुनः प्रतिष्ठा हुई और श्रीमती इन्दिरा गाँधी को प्रधानमंत्री का पद देकर हमारे देश ने यह सिद्ध कर दिया कि वह सामाजिक दृष्टि से नर और नारी के भेद-भाव को स्वीकार नही करता। अब भी कुछ लोग नारी के भोलेपन के लाभ उठाकर उसको गिरी हुई अवस्था में रखना चाहते हैं। और कुछ उसके उद्धार के लिये प्रयत्नशील हैं।

आज के स्वतन्त्र भारत में नारी का गौरव अवश्य बढ़ेगा। भारती की उस स्वतन्त्रता का कोई मूल नहीं जिसमें पचास प्रतिशत प्रजा दासता का जीवन व्यतीत करे। इसलिये नारी को बन्धन मुक्त करके पुरुषों की भाँति समान अधिकार देना आवश्यक है।

स्वतन्त्र भारत में नारी अपने खोये हुए अधिकारों को प्रज्ञपत करने में समर्थ हुई है। सरोजिनी नायडू और उनके बाद उनकी पुत्री पद्मजा नायडू ने राज्यपालिका के पद को बड़े ही कौशल से निभाया है। इंग्लैण्ड और अमेरिका जैसे उन्नत देशों में भी स्त्री को इतना सम्मान अब तक प्राप्त नहीं हुआ है। आज हमारे देश में अनेक नारियाँ मुख्यमंत्री, मन्त्री, उपमन्त्री आदि पदों पर प्रतिष्ठित हैं। यहाँ तक कि हमारे देश की प्रधानमन्ने भी नारी रह चुकी है।

(4) स्वतन्त्र भारत में नारी—स्वतन्त्र भारत में नारी को मत देन का अधिकार बिना माँगे

प्राप्त हुआ है। पश्चिमी देशों में तो नारी को मताधिकार प्राप्त करने के लिये लम्बा संघर्ष करना पड़ता था। इस क्रान्तिकारी परिवर्तन से उसका समाज में आदर बढ़या है। नारी के अधिकारों को बनाए रखने में भी यह बड़ा सहायक सि॰द्ध हुआ है। क्योंकि प्रत्येक चुनाव में स्त्रियों के 50 प्रतिशत मत प्राप्त करके कोई भी महिला सफलता प्राप्त कर सकती है। इस प्रकार शासन में नारी का अधिकारी बिना यत्न के ही स्था"त हो जाता है। नारी की स्वतन्त्रता का विरोध करने वाला कोई भी उम्मीदवार सफल नहीं हो सकता।

हिन्दू कोड-बिल स्त्रियों के लिये वरदान रूप में उपस्थित हुआ है। उसके पास हो जाने पर तो स्त्री धन की दृष्टि से भी पुरुष के बन्धन से मुक्त हो गयी है, "ता की सम्पत्ति में से लड़की को भी लड़के के समान अधिकार प्राप्त हुआ। उसका फल यह होगा कि नारी पूर्ण स्वावलम्बी होगी। आज के युग में आर्थिक स्वतन्त्रता के अभाव में स्वतन्त्रता का कोई मूल्य नहीं है।

भारत के नवीन संविधान में लिंग-भेद को स्थान नहीं है, जिस कारण स्त्री को प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति करने का अवसर प्राप्त है। वह बड़े-से-बड़े सरकारी पद को भी अपनी योग्यता से प्राप्त कर सकती है। भविष्य में सेना पर भी केवल पुरुषों का एकाधिकार नहीं होगा।

(5) उपसंहार—पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त करके नारी क्या समाज में अपने प्राचीन गौव को बनाए रखने में समर्थ होगी ? इसमें सन्देह है, क्योंकि जब नारी पुरुष के सामने प्रतिद्वन्द्वी के (समकक्ष एवं सामना करने वाली) के रूप में उपस्थिति होगी, तब पुरुष के ह्यदय में नारी के प्रति जो आदर भव है, वह कम हो जाएगा। परन्तु यह बात यहाँ न छेड़कर आने वाले समय पर इसका निर्णय छोड़ना ही ठीक जँचता है।

2. नक्सली समस्या

नक्सलवाद और माओवाद एक ही विचारधारा है। नक्सलवादी और माओवादी भारत के लोकतन्त्र को नकली लोकतन्त्र या दिखावटी लोकतन्त्र मानते हैं। आज नक्सलवाद विचारधारा न होकर हिंसात्मक बनकर रह गई है। आज नक्सलवाद समस्या मिनलरल की लड़ाई है। आज यह आन्दोलन देश और प्रदेश के सामने सबसे गम्भीर चुनौती बन गया है। सात राज्यों के लगभग 150 जिलों में नक्सली हिंसा फैल चुकी है। देश के बाहरी शत्रु इस ताक में बैठे हैं कि किस तरह नक्सली हिंसा को हवा देकर भारत में अस्थिरता का वातावरण तैयार किया जाये।

छत्तीसगढ़ में नक्सलवाद—करीब तीन दशक पूर्व बस्तर आए नक्सलियों ने यहाँ अपनी तीसरी पीढ़ी तैयार कर ली है। आपरेशन ग्रीन हंट शुरू होने के बाद नक्सलियों ने डिवीजन स्तर तक की कमान स्थानीय आदिवासियों को सौंप दी है। ये आदिवासी सदस्य है, जो जनता के बीच मिले रहते हैं व इनकी पहचान कर पाना सुरक्षा बलों के लिये कठिन साबित होता है।

छत्तीसगढ़ में अपार जन और धन की हानि—बस्तर के एक बड़े हिस्से में नक्सलियों ने भारी तबाही मचा दी है। "छले पाँच सालों में नक्सलियों ने कई सड़कों को तो बारूदी सुरंगों से विस्फोट कर तहस-नहस कर दिया। नक्सलियों ने 3700 करोड़ रुपये से अधिक की सम्पत्ति को नुकसान पहुँचाया है। बस्तर संभाग के कमीशन मनोज "गुओ मानते हैं। कि नुकसान का आँकड़ा इससे भी कहीं अधिक हो सकता है।

बेगुनाहों का खून कब तक बहेगा ? कब तक हमारे जवान शहीद होंगे ? अब समय आ गया है नक्सलवाद समाप्त होना ही चाहिए। यह कोई इतनी बड़ी लड़ाई नहीं है। जिसमतें सफलता न पाई

जा सके। हम एक नए बाहुबली दुश्मन का सामना कर रहे हैं और इसके लिए हममें कौशल, धैर्य और हौसला होना चाहिए। सभी को दलगत राजनीति से ऊपर उठना होगा।

उपसंहार—जब माओवादियों ने गृहयुद्ध-सा छेड़ दिया हो, तब यह बात बेमानी हो जाती है। कि आप किन साधनों से लड़ते हैं। इस समय जरूरत नक्सलियों को निशस्त्र करने की है और उसके लिए भारतीय राष्ट्र, राज्य के पास जो भी संसाधन है, उनका निर्द्वन्द्व प्रयोग करना ही पड़ेगा। हाँ यह सावधानी बरतना भी हमारा ही काम है कि देश की निर्दोष आबादी की जान-माल को कोई खतरा उपस्थित न हो। हमने बड़े प्रयत्न से और बलिदान देकर इस राष्ट्र-राज्य को बनाया है। इसको अंदर से ही तोड़ने के माओवादियों के प्रयत्नों को तत्काल विफल करना आज की सबसे बड़ी जरुरत है। इसलिए उनके सफाए के लिए हमें सारी दुविधा छोड़नी होगी।

छत्तीसगढ़ राज्य ओपन स्कूल परीक्षा

कक्षा—12वीं

विषय—हिन्दी

समय 3 घण्टे पूर्णांक 100

निर्देश—(1) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

(2) प्रश्न क्रमांक 1 (अ), 1 (ब), 1 (स) में एक-एक अंक है। प्रश्न क्रमांक 2 से 9 तक में 4 अंक हैं। प्रश्न क्रमांक 10 से 15 तक 6 अंक व प्रश्न क्रमांक 16 में 10 अंक निर्धारित हैं।

प्रश्न 1. (अ) प्रश्न क्रमांक 1 से 11 तक उचित उत्तर चुनकर लिखिए।

(1) तुलसीदास जी किस काल के कवि हैं—

(i) भक्तिकाल (ii) रीतिकाल

(ii) आधुनिक काल

उत्तर—(i) भक्तिकाल।

(2) हनुमान की पूँछ में, लगन न पाई आग।

लंका सारी जल गई। गए निशाचर भाग।।

में कौन-सा अलंकार है—

(i) संदेह (ii) अनुप्रास

(iii) अतिश्योक्ति।

उत्तर—(iii) अतिश्योक्ति।

(3) गागर में सागर भरा है, वाली उक्ति किस कवित पर लागू होती है—

(i) तुलसी (ii) बिहारी

(iii) मीरा।

उत्तर—(ii) बिहारी।

(4) क्रोध अंधा होता है, क्योंकि—

(i) उसकी आँखें नहीं होती (ii) इसमें परिणाम की चिन्ता नहीं होती

(iii) वह चल नहीं सकता।

उत्तर—(ii) इसमें परिणाम की चिन्ता नहीं होती।

(5) निम्न में से कौन-सा शब्द विदेशी है—

(i) फुर्तीला (ii) प्रतिकार
(iii) आविर्भाव
उत्तर—(अ) फुर्तीला।
(6) कहै जु पावै कौन, विद्या धन उधम बिना।
ज्यों पंखे की पौन, बिना डुलाए न मिले"
में कौन-सा छंद है।
(i) रोला (ii) दोहा
(iii) सोरठा
उत्तर—(iii) सोरठा।
(7) मीरा किसके घर जाने की बात कहती है—
(अ) कृष्ण के (ब) अपने पति के
(स) अपनी माँ के
उत्तर—(अ) कृष्ण के।
(8) एड्स रोग का संक्रमित कैसे होता है—
(i) एच.आई.वी. संक्रमित खून चढ़ान सवे।
(ii) रोगी के साथ खाने से
(iii) मच्छर के काउने से
उत्तर—(i) एच. आई. वी. संक्रमित खून चढ़ानपे से।
(9) सॉफ्टवेयर क्या है—
(i) बाह्य स्मृति (ii) कम्प्यूटर संचालन सम्बन्धी प्रोग्राम
(iii) की-बोर्ड का एक बटन
उत्तर—कम्प्यूटर संचालन सम्बन्धी प्रोग्राम।
(10) निम्न में कौन-सा जनसंख्या वृद्धि का कारण नहीं है—
(i) बेहतर चिकित्सा सुविधा
(ii) अंध-विश्वास
(iii) लाल-विवाह
उत्तर—(i) बेहतर चिकित्सा सुविधा।
(11) लोकतन्त्र का चौथा खम्भा कहलाता है—
(i) विधायिका (ii) कार्यपालिका
(iii) अखबार/खबर पालिका।
उत्तर—(iii) अखबार/खबर पालिका।
प्रश्न 1. (ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—
(1) देवता जब अकेले रह गये तब उनका ध्यान.....की ओर गया।
(2) वह तोड़ती पत्थर कविता में ..... का चित्रण है।
(3) दो कलाकार.....विद्या की रचना है।
(4) डॉ. रघुवंश अपंग होते हुए भी ..... में लिखते थे।

(5) सार्थक शब्द समूह को ..... कहते हैं।

(6) "मुझे कदम-कदम पर" कविता में चौराहा.....का प्रतीक है।

उत्तर—(1) तरण में, (2) श्रमिक महिला, (3) कहानी, (4) पैरों की ऊँगलियों में कलम फँसाकर, (5) वाक्य, (6) विचारों का छंद।

(स) एक वाक्य में उत्तर लिखिए—

(1) प्रतापी अगस्त्य मुनि को क्या कहा जाता है ?

उत्तर—प्रतापी अगस्त्य मुनि को कुटज कहा जाता है।

(2) कन्याकुमारी के शिक्षित युवाओं की प्रमुख समस्या क्या है ?

उत्तर—कन्याकुमारी के शिक्षित युवाओं की प्रमुख समस्या बेरोजगारी है।

(3) रैदास कवित किस कवि के समकालीन थे ?

उत्तर—रैदास कवि कबीर के समकालीन कवि थे ?

(4) "ईद का चाँद होना" मुहावरें का क्या अर्थ है ?

उत्तर—बहुत दिनों के बाद दिखाई देना।

(5) बाँस का झुमता हुआ पेड़ किसका प्रतीक है ?

उत्तर—बाँस का झूमता हुआ पेड़ सजीवता व लचीलापन का प्रतीक है।

नोट—प्रश्न क्रमांक 2 से 9 तक 4 अंक निर्धारित है। 1 कम से कम 50 शब्द, अधिकतम 75 शब्दों में उत्तर दीजिए—

प्रश्न 2. "बैर क्रोध का आचार या मुरब्बा है"। पल्लिवित कीजिए।

उत्तर—जब क्रोध हमारे मन में काफी समय तक जमा रहात है तो वह बैर कहलाता है। अथ. ात् जिस प्रकार आम को आचार बनने में समझ लगता है। उसी प्रकार क्रोध को बैर का रूप लेने में समय लगता है। इसलिये बैर का क्रोध का आचार कहा जाता है।

अथवा

दुष्ट मनुष्य की तुलना दर्पण के साथ क्यों कि गई है ?

उत्तर—दुष्ट मनुष्य की तुलना दर्पण के साथ इसलिए की गयी है, क्योंकि दर्पण सामने से स्वच्छ और पीछे से मैला होता है। उसी प्रकार दुष्ट मनुष्य सामने से मीठे-मीठे बोलते हैं और पीठ पीछे कुछ और कहते हैं।

प्रश्न 3. माधुर्य गुण के उदाहरण सहित समझाइए—

उत्तर—जब काव्य पढ़ने या सुनने से मन में मधुरता का संचार हो तब माधुर्य गुण कहते हैं। यह गुण श्रृंगार, करुण और शान्त रसों में पाया जाता है। इस गुण में य, ल, म, व, ब आदि कोमल वर्णों का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण—मधुर-मुधर मेरे दीपक जल, युग-युग प्रतिदिन प्रतिक्ष्ज्ञण प्रतिपल "यतम का पतथ आलोकित कर।

अथवा

'परिचय इतना इतिहास यही' पंक्ति से महादेवी जी का क्या तात्पर्य है ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—उपर्युक्त कथन का तात्पर्य यह है कि मनुष्य का जीवन क्षणभंगुर है जो कभी भी नष्ट हो सकता है आज तो इतिहास में है और कल नहीं रहेगा। तो सब कुछ नष्ट हो जायेगा।

प्रश्न 4. "इंटरनेट" क्या है ?

उत्तर—इण्टरनेट अर्थात् कम्प्यूटर नेटवर्क का जाल से है। संसार के किसी भी कोने से सूचना लेने या देने के लिए इसका उपयोग किया जाता है। और सूचना तुरन्त दी जा सकी है और तुरन्त सूचना ली जा सकती है। यह एक मुद्रित दृश्य-श्रव्य माध्यमों का मिला-जुला रूप है।

अथवा

प्रश्न—पुराली पीढ़ी के लोग नई पीढ़ी को आगे क्यों नहीं आने देते ?

उत्तर—पुरानी पीढ़ी के लोग नई पीढ़ी को आगे नही देना चाहते हैं, क्योंकि नई पीढ़ी आगे आयेगी तो उनका मान-सम्मान कम हो जायेगा। और वह उनका स्थान ले लेंगे। इसलिए नई पीढ़ी के लोगों को पुरानी पीढ़ी के लोग हेय दृष्टि से देखते हैं। और नई पीढ़ी के लोगों का अपना गुलाम बनाकर रखना चाहते हैं।

प्रश्न 5. वह तोड़ती पत्थर में वर्णित मजदूरनी की दशा को संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

उत्तर—जनवरी, 2011 के हल उत्तर क्रमांक 4 देखें।

अथवा

मन क्या है ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—मन ही तो है जिसमें वह चाह है, लख्य है, वही उसमें पवित्रता, कोमलता व ″यता है। मन में नव उत्साह होता है, मन हमेशा लेखन कार्य, सेवा कार्य में रमता है। मन में ही कल्पना करना अतीत में जाना, अवधान, पर्यवेक्षण, विचारणा आदि अभिक्रियाओं का सम्पादन मस्तिष्क करता है, जिसको मन कहते हैं।

प्रश्न 6. चित्र और अरूणा के व्यवहार में क्या अंतर है ?

उत्तर—जुलाई, 2011 के हल उत्तर क्रमांक 5 देखें।

अथवा

साधारण वाक्य और मिश्र वाक्य में कोई चार अन्तर बतलाइए।

उत्तर—क्रं. साधारण वाक्य मिश्र वाक्य

मैं पढ़ता हूँ मैं पढ़ता हूँ तथा नौकरी भी करता हूँ।

1. साधारण वाक्य में एक ही वाक्य होता है। मिश्र वाक्य में एक से अधिक वाक्य होते हैं।
2. साधारण वाक्य में एक क्रिया रहती है। इसमें एक से अधिक क्रियाएँ होती हैं।
3. इसमें एक विधेदा (कर्म) होता है। इसमें एक से अधिक कर्म होते हैं।
4. इसमें संयोजक अपव्यय की आवश्कयता नहीं होती। मिश्र वाक्य में वाक्य संयोजक अपव्ययों द्वारा जुड़े रहते हैं।

प्रश्न 7. रहीम ने आत्म सम्मान की रक्षा का महत्व कैसे समझाया है ?

उत्तर—रहीम ने आत्मसम्मान को जीवन से ज्यादा महत्व देते हैं वे कहते हैं कि यदि बिना सम्मान के अमृत भी मिले तो उसका त्याग करना चाहिए यदि सम्मान के साथ कोई विषय भी दे तो उसको प्रेम से स्वीकार कर लेना चाहिए।

अथवा

कवित ने चौरहे को अच्छा क्यों माना है ?

उत्तर—कवि ने चौराहे को अच्छा इसलिए माना है, क्योंकि चौराहों में अनेक मार्ग होते हैं उसे

चुनकर जिस मार्ग में आगे बढ़ना है, उसे चुनकर आगे बढ़ते हैं और चिन्तन व विकल्प के माध्यम से हम विचार करने के बाद ही आगे की सोचते हैं। मन में भी उसी रूप में अनेक विचार आने पर हम किसी एक को चुनते हैं।

प्रश्न 8. "हम कठपुतली हैं" कविता में हम से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर—जुलाई, 2011 के हल उत्तर क्रमांक 8 देखें।

अथवा

'एक था पेड़' एक था 'ठूँठ' पाठ की शीर्ष्क की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—जुलाई, 2011 के हल उत्तर क्रमांक 7 देखें।

प्रश्न 9. छायावादी काव्य की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर—दिसम्बर, 2012 के हल उत्तर क्रमांक 9 देखें।

अथवा

गध की प्रमुख विधाओं के नाम लिखिए।

उत्तर—गध को प्रमुख चार विधाओं में विभाजित किया जा सकता है—(1) कथा साहित्य, (2) नाटक, (3) निबंध, (4) नवीन विधाएँ।

नोट—प्रश्न क्रमांक 10 से 15 तक है। छः अंक निर्धारित हैं। प्रश्नों के उत्तर कम से कम 100 शब्दों में दीजिए।

प्रश्न 10. महादेवी वर्मा अथवा मीराबाई के साहित्यि जीवन का परिचय निम्न बिन्दुओं से दीजिए—

रचनाएँ भवपक्ष एवं कला पक्ष।

उत्तर—महादेवी वर्मा (जुलाई 2011 केवल उत्तर क्र. 10 देखें।)

मीराबाई

रचनाएँ—आपकी प्रमुख रचनाएँ हैं—गीतागोविन्द की टीका, राग गोविन्द, नरसी जी का मायरा।

भावपक्ष—मीराबाई की काव्य में कृष्ण भक्ति व कृष्ण प्रेम का दीवानापन है। मीरा के काव्य में विरह की तीव्र अनुभूति और सरस व्यंजना है। मीरा के पदों में रहस्यवाद के दर्शन होते हैं। मीरा के साहित्य में माधुर्य भाव का बहुत ऊँचा स्थान है।

कलापक्ष—मीरा की काव्य भाषा में विविधता है। अलंकारों व काव्यगुणों का प्रयोग स्वाभ. ाविक रूप से हुआ है। मीरा की शैली मुक्तक शैली है। इनके काव्य में संगीतात्मकता व गेय पदों की प्रधानता है। काव्य वेदना से भरी हुई माधुर्य भक्ति है।

प्रश्न 11. मोहन राकेश अथवा आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी के साहित्य जीवन का परिचय निम्न बिन्दुओं में दीजिए—

रचनाएँ, भाषा शैली एवं साहित्य में स्थान।

उत्तर—दिसम्बर, 2012 के उत्तर क्रमांक 11 देखें।

प्रश्न 12. निम्न काव्यांशों में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

उत्तर—मैं नीर भरी दुःखी की बदली

स्पंदन में चिर निस्पंदन बसा

कंदन में आहत विश्व हँसा
नयनों में दीपक से चलते
पलकों में निर्झरिणी मचली।

सन्दर्भ—प्रस्तुत पंक्तियाँ को हमारी पाठ्य-पुस्तक के 'मैं नीर भरी दु:खी की बदली' पाठ से लिया गया है। जिसकी कवियत्री महादेवी वर्मा जी है।

प्रसंग—वर्षा जल से भरी बदली वेदनापूर्ण जीवन का संकेत कर रही है।

व्याख्या—प्रस्तुत पंक्ति में कवियत्री वर्षा जल से भरी दु:ख बदली के समान हैं। मेरी आँखों में दु:ख की बदली के समान आँसू स्थित हैं। जिस प्रकार बादल में वर्षा रूपी जल स्थिर रहता है। और बरसता है। तो वह ऐसा लगता है वे वेदनापूर्ण जीवन व्यतीत कर अपनी वेदना को प्रकट कर रही है।

(ब) प्रभु जी तुम चंदन हम पानी, जाकी अंग-अंग बास समानी।।
प्रभु जी तुम धन वन हम मीरा, जैसे चित्वन चंदचकोरा।।

सन्दर्भ—प्रस्ज्ञतुत पद हमारे पाठ्यपुस्त के दैरास के पद' से अवतरित है इसके रचयिता रैदास कवि हैं।

प्रसंग—कवि रैदास ने अपने प्रभु और दास का सम्बन्ध स्था"त किया है। उदाहरणों के माध्यम से अपनी भक्ति का पुष्टि कर रहा है।

व्याख्या—कवि कहते हैं। कि हे प्रभु मेरा और तुम्हारा सम्बन्ध तो पानी व चंन्दन की तरह है मेरे शरीर के अंग-अंग तुम्हारी सुंगध भरी हुई है। प्रभु जिस प्रकार बादल की गर्जना सुनकर मोर नाचने लगता है। उसी प्रकार तुम बादल हो मैं मोर हूँ। जैसे चकोर पक्षी को चन्द्रमा को एकट देखे रहता है। उसी प्रकार में तुम्हारी सुन्दरता को निहारते रहता हूँ हे प्रभुम तुम दीपक हो मैं उसकी बाती हूँ, आपका आधार पाकर मैं जलता हूँ और प्रकाश बिखेरता हूँ।

प्रश्न 13. निम्न गधांश में से किसी एक की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए।

उत्तर—"क्रोध का गर्जन"—तर्जन क्रोधपात्र के लिए भावी दुष्परिणाम की सूचना है। जिससे कभी-कभी उद्देश्य की पूर्ति हो जाती है। और दुष्परिणाम की नौबत नहीं आती , एक की उग्र आकृति देख दूसरा किसी अनिष्ठ व्यापार से विरत हो जाता है या नम्र होकर पूर्व कृत दुर्व्यवहार के लिए क्षमा चाहता है।"

सन्दर्भ—प्रस्तुत गधांश के लेखक रामचन्द्र शुक्ल है यह अनेक 'क्रोध' नामक निबन्ध से लिया गया है।

प्रसंग—क्रोध के समय की गई उग्र चेष्टाओं का कारण एवं लाभ।

व्याख्या—व्यक्ति क्रोध दो कारणों से करता है। पहला वह विपक्षी को डरा सके, दूसरा उससे क्षमता याचना या पश्चाताप करवा सके। क्रोध के समय की उग्र चेष्टाएँ कभी-कभी इस उद्देश्य पूर्ति में सहायक होती देखी गई हैं। अपने शत्रु की क्रोध पूर्ण चेष्टाओं को देखकर कई बार विपक्षी भयभीत होते हुए दिखाई दिए हैं। कई बार क्रोधी के सम्मुख उन्हें पश्चाताप करते हुए भी देखा गया है। अपनी भूल के लिये वे अपने शत्रु से माफी तक माँग लेते हैं। इससे क्रोध करने का उद्देश्य पूरा हो जाता है और क्रोध करने वाला स्वत: उन्हें क्षमा प्रदान कर देता है।

(ब) यहाँ अधिकार सिर्फ सबल के हिस्से में आता है, निर्बल के लिए तो कर्तव्य और सिर्फ दायित्व ही आते हैं।, इसलिए मैंने आज अपना साला बल समेट लिया है, शेष्ज्ञ जो बच गया है उसे

ही बटोर लेना चाहिती हूँ मैं जीना चाहती हूँ।

सन्दर्भ—प्रस्तुत गध पंक्तियाँश्री पंकज कुमार द्वारा लिखित ''अनुराधा'' नामक कहानी से ली गई हैं।

प्रसंग—कहानी प्रारम्भ इसी वाक्य से होता है।

व्याख्या—अनुराधा मन में चिन्तन करते हुए कहती है। कि लोगों के द्वारा नियम तो सबसे लिए बनाये जाते हैं। जिसे सभी को अपनाना पड़ता है। किन्तु कुछ सबल लोगों को ही उस नियम का अधिकितम लाभ होता है और निर्बल चूक जाता है। अर्थात् सबल को जीवन जीने का अधि ाकार प्राप्त है। निर्बल को नहीं। इसलिए मैंने अपनी सारी शक्तियों को समेटर जीना चाहती हूँ अपना अस्तित्व बनाएँ रखना चाहती हूँ।

प्रश्न 14. अपने मित्र को नौकरी लगने पर बधाई पत्र लिखिए।

उत्तर—

''य मित्र अंकित

नमस्कार !

आशा है स्वस्थ एवं सानंद से होंगे। आज दैनिक समाचार में रेलवे भर्ती का परीक्षाफल पढ़ा, जिसमें आपका चयन रेलवे विभाग में हो गया है, इस सफल्ता पर मेरी ओर से हार्दिक बधाई स्वीकार करें। आपकी यह सफल राह आपके अथक परिश्रम एवं लगन से प्रशस्त की है, हमारी सभी साथी भी आपसे प्रेरण लेंगे। हम सबो अथाह गर्व है। यहाँ सभी ठीक है। पुनः आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं, विराम चाहता हूँ। घर में सभी बड़ों को प्रमाण कहें एवं भाई-बइन को स्नेह। पत्रोत्तर की प्रतीक्षा में।

आपका ''त्र गोविन्द अग्रवाल

अथवा

छत्तीसगढ़ राज्य ओपन स्कूल के सचिव की अपनी अंक सूची त्रुटि सुधार हेतु एक आवेदन पत्र लिखिए।

प्रति,

सचिव

राज्य ओपन स्कूल (छत्तसीगढ़)

रायपुर

विषय—अंकसूची में त्रुटि सुधार हेतु आवेदन-पत्र.

महोदय,

निदेवदन है मेरी हायर सेकण्डरी स्कूल प्रमाण-पत्र परीक्षा 2009 की अंक सूची प्राप्त हुआ। जिसमें विषय हिन्दी-12 में प्राप्तांक 06 लिखा है। जबकि कुल प्राप्तांक के अनुसार उक्त विषय में 45 अंक होना चाहिए। अतः मुझे द्वितीय प्रति सुधारकर भेजने का कष्ट करें। इसके लिए निर्धारित शुल्क 50 रु. का बैंक ड्राफ्ट नं. 375301 आपके नामे भेज रहा हूँ।

विनीत

लक्ष्य वर्मा

दिनांक : 06/03/2013

प्रश्न 15. निम्न अपठित अंश को पढ़कर गधांश का उचित शीर्षक एवं सारांश लिखिए—

''कहा जाता है कि समझ और तुफान किसी का इंतजार नहीं करते। अत: समय का सदुपयोग अनिवार्य है। समझ के सदुपेयाग का अर्थ है उचित अवसर पर उचित कार्य पूरा करना, जो व्यक्ति आज का काम कल पर कल का परसों पर औरपरसों का बरसों पर टालता जाता है। वह समय के महत्व को नहीं जानता, इसलिए तो कहा गया है। समय बलवान तो गधा पहलवान। जो व्यक्ति समय के महत्व को जान जाता है वह अपनी शक्ति को कई गुना बढ़ा लेता है। यदि देश की सभी गाढ़ियाँ निश्चित समय पर चलने लगें तो देश में कितनी कार्य कुशलता बढ़ जाएगी, यदि कार्यालय के सभी अधिकारी व कर्मचारी समय के पाबंद हो जाये तो कितनी सभी को लाभहोगा, यदि किसी को समय पर दवा मिल जाए, यदि सभी समय पर काम करें तो देश व्यक्ति का कितना कल्याण होगा। विद्यार्थीयों को भी समय का सदुपेयाग करना चाहिए।''

प्रश्न 1. गंधाश का उचित शीर्षक।

उत्तर—समूह का महत्व।

प्रश्न 2. गधांश का सारांश।

उत्तर—प्रस्तुत गधांश के माध्यिम से समय के महत्व को समझना चाहिए, क्योंकि समय निकल जाने पर वापस वह समय नहीं आता जिस प्रकार समय के रहते कर्म कर लेने से गधा भी पहलवान हो जाता है। विद्यार्थी भी समय चुक जाने से पछतावा होता है। इसलिए समय रहते ही अपने कार्य कर लेना चाहिए।

प्रश्न 16. किसी एक विषय पर 250 शब्दों में एक सारगर्भित निबन्ध लिखिए—

2. दहेज प्रथा-एक अभिशाप

रूपरेखा—(1) प्रस्तावना, (2) दहेज का अर्थ व स्वरूप, (3) दहेज प्रथा की बुराईयाँ, (4) दहेज प्रथा को रोकने के प्रयत्न, (5) उपसंहार।

(1) प्रस्तावना—समाज समस्या का पालना है जिस प्रकार शिशु पालने में बड़ा होकर कभी-कभी परिवार के लिये एक समस्या बन जाता है, उसी प्रकार समाज रूपी पालने में पालित-पोषित छोटी-छोटी बातें कभी-कभी विकराल रूप धारण कर लेती हैं और समाज के लिये विकट समस्या बन जाती हैं। जो सामाजिक समस्याएँ पैदा करती है। इन समस्याओं में अन्ध-विश्वास, पर्दा-प्रथा, छुआछूत, बाल-विवाह, भिक्षावृत्ति, दहेज प्रथा आदि प्रमुख हैं। ये समाज की समस्याएँ ही नहीं अ''तु दूषित मनोवृत्ति या कुरीतियाँ बन गई है। इन कुरीतियों में दहेज प्रथा इतनी दूषित प्रवृत्ति है कि लोग इसे सामाजिक कोढ़ के नाम से पुकारते है। ये कुरीतियाँ हमारे व्यक्ति और सामाजिक विकास को अवरुद्ध ही नहीं करतीं, बल्कि उसका पतन भी करती हैं। अत: इन कुरीतियों का समाधान किये बिना हम सामाजिक प्रगति नहीं कर सकते हैं।

(2) दहेज का अर्थ व स्वरूप—सामान्य रूप से दहेज व सम्पत्ति है जो एक पुरुष विवाह के समय कन्या पक्ष की ओर से स्वेच्छता से प्राप्त करता है किन्तु अब यह प्रवृत्ति भारतीय समाज में विवशता के रूप में बदल गयी है। आज यह माँग वर-पक्ष की ओर से होने लगी है। वर-पक्ष दहेज के रूप में अत्यधिक धन कार, टी. वी. फ्रिज आदि की माँग करते हैं। यदि किसी कन्या का ''ता इन वस्तुओं को जुटाने में अमसमर्थ है जो कन्या को सुयोग्य वर नही मिल पाता या किसी अयोग्य वर के साथ विवाह कर दिया जाता है। अथवा आजीवन कुँवारी ही रहती हे। आज इस प्रथाने अपनी

अजगरी भुजाओं से सम्पूर्ण भारतीय समाज को जकड़ रखा है। आज दहेज का विकराल दानव कितनी ही कोमल तरुणियों के स्वप्नों को ध्वस्त करता हुआ तथा कितने माता-"ताओं को ऋण के बोझ के नीचे खिसकाता हुआ निर्मम रूप से हँसय रहा है। परिणामस्वरूप यह प्रथा भारतीय समाज के माथे पर कलंक बन गयी है।

(3) दहेज प्रथा की बुराईयाँ—हमारे समाज को दहेज प्रथा के कारण अनेक हानियाँ उठानी पड़ रही हैं। फलस्वरूप वह निरन्तर जर्जर होता जा रहा है। इस प्रथा का सबसे बड़ा दोष यह है कि इसने नारी के सम्मान को ठेस पहुँचायी है। इस कुप्रथा ने नारी के विकास को भी अवरुद्ध कर दिया है। दहेज प्रथा की एक प्रमुख बुराई यह है कि यह बेमेल विवाह को प्रोत्साहन दे रही है। जो अपने आप में भारतीय समाज के माथे पर दूसरा कलंक है। दहेज प्रथा के कारण धन लोलुपता बढ़ रही है। इस कारणप प्रेम आरे सद्भाव में बहुत से लोग ऋण के भार से दब जाते हैं। इस कारण आर्थिक भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिल रहा है। अत: दहेज प्रथा विविध रूपों में हमारे भारतीय सम्मान को आर्थिक भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिल रहा है। अत: दहेज प्रथा विविध रूपों में हमारे भारतीय सम्मान को आर्थिक, नैतिक, मानसिक और सामाजिक पतन की ओर ओर ले जा रही है।

(4) दहेज प्रथा को रोकने के प्रयत्न—दहेज प्रथा के उन्मूलन में समाज और शासन दोनों को ही मिलकर प्रयास करना चाहिए। शासन को चाहिए। कि कठोर कानून बनाकर इस कुप्रथा को अपनाने वालों के प्रति कठोर दण्ड की व्यवस्था करें। यद्य" शासन ने सन् 1961 में दहेज विरोधी कानून बनाया और 1976 में उसमें संशोधन भी किये, किन्तु फिर भी वह इस पर अंकुश लगाने में असफल रहा हे। यदि शासन इस ओर सतर्कता और कठोरता बरते तो बहुत सीमा तक सफलता लि सकती हे।

सामाजिक संस्थाएँ तथा समाज सुधारक इस प्रथा को समाप्त करने में सर्वाधिक सहायक सिद्ध हो सकते हैं। जो लोक दहेज के विरुट दुराग्रह करें उनका सामाजिक बहिष्कार किया जाये। सामातजक चेतना से सम्पन्न जागरूक नागरिकों को दहेज के विरुद्ध सुनियोजित ढंग से प्रचार भी करनाचाहिए। इस कुप्रथा को समाप्त करने में देश के नवयुवक और नवयुवतियाँ अधिक सहायक सिद्ध हो सकते हैं। दोनों ही स्वेच्छा से दहेज न लेने ओर न देने की शपथ ग्रहण करके आदर्श प्रस्तुत कर सकते हं। इसके अतिरिक्त सह-शिक्षा भी इस कुप्रथा को समाप्त करने के में उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

(5) उपसंहार—दहेज के दुष्परिणामों को ध्यान में रखते हुए समाज के प्रत्येक व्यक्ति को चाहे वह वर पक्ष-का हो, चाहे कन्या पक्ष का हो, इस कुप्रथा के उन्मूलन के लिये सच्ची लगन और जी-जान से प्रयत्न करना चाहिए। यदि इसमें थोड़ी-सी भी लापरवाही बरती गई, तो यह एक ऐसा घुन ह जो भीतर ही भीतर समाज को खोखला कर दगा। अत: इस कुरीति के उन्मूलन क लिये शासन और समाज दोनों को युद्ध स्तर पर दहेज विरोधी अभियान चलाना होगा। अन्यथा दहेज का यह अजगर हमारे समूचे समाज की पूरी तरह निगल जायेगा। ''आज दुल्हन ही दहेज है'' यह हम सबका नारा होना चाहिए।

3. राष्ट्रीय एकता व अखण्डता

प्रस्तावना—महान् विचारक अरस्तू के मतानुसार, किसी राष्ट्र की स्वतंत्रता और अखण्डता के लिए परमावश्यक तत्व उसकी एकता है। एकता ही वह शक्ति और सूत्र है जिसके कारण कोई राष्ट्र अपनी स्वतंत्रता और अखण्डता की रक्षा कर पाता है। भारत बहुभाषा बहुधर्मी तथा विभिन्न संस्कृतियों वाला विशाल देश है, अत: इसके लिए राष्ट्रीय एकता का महत्व और भी बढ़ जाता है।

एकता की समस्या—इस विशाल देश में नाना जाति और धर्म के लोग सदियों से एक साथ रहते चले आ रहे हैं, किन्तु अंग्रेजों की दुर्नीति के कारण भारत का सम्प्रदाय के आधार पर विभाजन हो गया। साम्प्रदायिकता दंगे हुए, किन्तु साम्प्रदायिकता रूपी साँ"न का विषदन्द टूटा नहीं। इसी तरह जातिवाद काविषय कम होने के बजाय बढ़ रहा है। असम की समस्या हमारी राष्ट्रीय एकता की गहरी चुनौती बनी हुई है। इधर पंजाब में खालिस्तान की माँग तथा अन्य क्षेत्रीय अलगाव की समस्याएँ उठ खड़ी हुई थीं। इनसे आये दिन हिंसक घटनाएँ हो रही थीं।

राष्ट्रीय एकता के बाधक तत्व—सम्प्रदाय ही मुरादाबार, इलाहाबाद, अलीगढ़ और जमशेदपुर में दंगों का मूल रहा है। जातिवाद आज की स्थिति में हमारी एकता के लिए घातक सिद्ध हो रहा है। भाषावाद, क्षेत्रवाद और संकुचित प्रान्तीयता हमारी एकता के लिए आधुनिक खतरे हैं। इधर विदेशी षड़यंत्र देश में अराजकता फैलाने, दंगे कराने में संलग्न है। साम्प्रदायिकता संगठन और अवसरवादी संगठन भी हमारी एकता के बाधक तत्व हैं।

समस्या का समाधान—एकतार और अखण्डता को बनाये रखने के लिए सर्वप्रथम राष्ट्र-प्रेम की भावना होनी चाहिए। जातिवाद एवं छुआदूत की भावना को दूर कर, हम सभी भारतीय हैं—भावना का विकास करना चाहिए। सम्प्रदायवाद का अन्त किया जाना बहुत जरूरी है। साम्प्रदायकिता दंगों को इस प्रकार कुचल देना चाहिए, जिससे उनकी पुनरावृत्ति न हो। सरकार को सभी देशी और विदेशी विध्वंसक तत्वों पर कपड़ी नजर रखनी चाहिए तथा धार्मिक संस्थाओं ओ शस्त्रास्त्रों एवं राजनीतिक गुण्डों का अड्डा नहीं बनने देना चाहिए। तभी हम एक रह पायेंगे।

परिश्रम

तुलसी ने बड़े ही सरल और स्पष्ट रूप से कहा है कि—

सकल-पदारथ यही जग माहजी।

कर्महीन नर णवत नाहीं।।

अर्थात् इस संसार में तो सभी प्रकार की वस्तुएँ प्राप्त है, लेकिन कर्महीन अर्थात् उद्योग कार्य, धन्धा न करने वाला व्यक्ति इन सभी प्रकार के पदार्थों को प्राप्त नहीं कर पाता। आलसी और कर्महीन व्यक्ति बार-बार दु:ख झेलता हुआ संसार की उलझनों में पड़ा रहा है। कर्म के महत्व को प्रकाशित करते हुए भगवान श्रीकृष्ण ने गीता का उपदेश देते हुए अर्जुन को भी कर्म करने की ओर प्रेरित किया है और कहा है कि तुम्हें केवल कर्म करने में ही अधिकार होना चाहिए, फल प्राप्ति में नहीं होना चाहिए—

'कर्मण्येवाधिकारस्ते, मा फलेषु कदाचन्।'

इसी तरह से प्रसिद्ध अंग्रेजी विद्वान, कार्लियल ने कहा है कि—'कर्म ही पूजा है'

"Work is worship"

हम देखते हैं कि संसार में कुछ लोग बहुत सम्पन्न और सुखी हैं, तो कुछ लोग बहुत ही दु:खी दिखई देते हैं। पहली श्रेणी का व्यक्ति उद्योगी अर्थात् परिश्रमी है और दूसरे प्रकार का व्यक्ति आलसी अर्थात् कर्महीन है। इस आधार पर हम कहेंगे। कि परिश्रमी अवश्य सफल होता है।

जीवन के महत्व की दृष्टि से भी परिश्रम करना अत्यन्त आवश्यक है। परिश्रम से हमारे जीवन की वह इच्छा पूर्ण होती है, जिसे हम चुपचाप बैठकर नहीं प्राप्त कर सकते, अ"तु परिश्रम के द्वारा ही प्राप्त कर सकते हैं। आलसी व्यक्ति तो केवल भाग्य की ही माला जमा करता है और अपने

कष्टों और अभावों के ही प्रसाद या प्रभाव को ही मानता है। दुर्भाग्यशाली व्यक्ति तो सदैव कर्मक्षेत्र से भागता फिरता है और सुख की प्राप्ति की मन ही मन कल्पनाएँ किया करता है। उसे जहाँ सुख दिखाई पड़ता है। वहाँ ही दौड़ता है, लेकिन सुख तो मृगतृष्णा के समान उसकी पकड़ से बाहर हो जाता है।

परिश्रम का महत्व निश्चय ही जीवन विकास के अर्थ सत्य और यथार्थ है। आज परिश्रम के द्वारा ही मनुष्य ने विज्ञान की खोज प्राप्त करके विभिन्न प्रकार की सुविधाएँ, अपने अपने अधिकार में कर ली हैं, विज्ञान की विभिन्न सुविधाओं के द्वारा मनुष्य आज चाँद पर पहुँचने का उद्योग (प्रयास) कर रहा है और आशा की जा रही है। कि वह दिन दूर नहीं होगा, जब मनुष्य की यह इच्छा अवश्य पूरी होकर रहेगी।

परिश्रमी व्यक्ति अपने सहित अपने समाज और राष्ट्र को उन्नतिशील और विकसित बनाते हुए अपनी यश, कीर्ति की पतकाका को ऊँचा उठाते हुए प्रंशसनीय होता है। इस प्रकार से जो व्यक्ति परिश्रमी और कर्म में लगे होते हैं, वे अवश्यमेव महान और उच्चकोटि के व्यक्ति के होते हैं। हम यह देखते हैं कि आज विश्व के जो भी राष्ट्र विकासशील या विकसित हैं, उनके नागरिक परिश्रमी और कर्मठ हैं उनकी अपार कर्म साधना और अधिक परिश्रम का ही यह फल है कि वे राष्ट्र विश्व के महान राष्ट्र के रूप में प्रतिष्ठा के पात्र बने हुए हैं। इन सभी महान राष्ट्रों के नागरिकों को में कोई कलाकहार हैं तो कोई महान वैज्ञज्ञनिक है। इसी तरह से कोई दार्शनिक है तो कोई बहुत बड़ा नेता है। इस प्रकार की विभिन्न प्रतिभाओं ओर योग्ताओं के फलस्वरूप यह राष्ट्र अपनी-अपनी महानताओं और श्रेष्ठताओं को बनाए रखने में आगे बढ़े हुए हैं अतएव हम कह सकते हैं। परिश्रम का महत्व नि:सन्देह रूप से स्वीकार करने योग्य है। रूपस, अमेरिका, जीचन जापान फ्रांस जर्मन आदि राष्ट्रों की महानता अपने-अपने नागरिकों के घोर"रश्रम के कारण ही बनी हुई है। उदाहरणार्थ हम कह सकते हैं। कि द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान एटम बम के विस्फोट के कारण जापान बिल्कुल ही ध्वस्त होकर नेस्तनाबूछ हो गया था, लेकिन उसने अपनी अपार परिश्रम शक्ति के द्वारा ही विश्व में आज अपना अत्यधिक विशिष्ट स्थान बना लिया है। इस तरह ग्रेट ब्रिटेन, इजराइल आदि देशों के उदाहरण भी दिए जा सकते हैं।

परिश्रमी साधारण और असाधारण दोनों ही प्रकार के व्यक्ति होते हैं। साधारण व्यक्ति परिश्रमी होकर उन्नति और विकास के पथ की ओर बढ़ते हैं। जबकि असाधारण और विशिष्ट श्रेणीके व्यक्ति ओर परिश्रम के द्वारा न केवल अपना अ"तु पूरे लोक-समाज का हित-चिन्तन करते हुए कर्मशील बने रहते हैं। राम, श्रीकृष्ण, गौतम बुद्ध, परशुपराम, महावीर, महात्माँ गाँधी, ईसा मसीह, गुरु नानक आदि महान, व्यक्तियों के नाम इसी सन्दर्भ में रखे जा सकते हैं। आज के युग में भी ऐसे महान व्यक्ति परिश्रम करते हुए देश, समाज और स्वयं के जीवन को कृतार्थ और महान बनाने में प्रयत्नशील हैं।

परिश्रमी मनुष्य की प्रशंसा और सम्मान सभी और से किया जाता है। सभी बुद्धिजीवितयों और विचारकों ने परिश्रमी व्यक्ति की प्रशंसा करते हुए आलसी और कर्महीन व्यक्तियों की सदैव ही बहुत निन्दा की है—

कादर मन कह कर अधारा।

दैव-दैवप आलसी पुकारा।

संक्षेप में कह सकते हैं। कि परिश्रम का महत्व नि:सन्देह है, परिश्रमी की किसी दशा में विजय होती है। परिश्रमी ही भाग्य विधाता है और दुर्भाग्य का परम विरोधी। दूसरी ओर आलसी

और कर्महीन व्रूक्ति का जीवन आलस्य से भरा हुआ होता है। जो उसे जीवित होते हुए भी मृत्यु के समान सदैव कष्ट दायक होता है।

●●